आचार्य श्री प्रवचन

(15.02.2017 से 22.04.2017 तक)

भाग-5

गुरुवर की वाणी,
बने सबकी कल्याणी

संकलन
मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

गोपालगंज से भाग्योदय प्रवेश - 14-2-17 सागर

15-2-17 "सार्थक नाम है भाग्योदय तीर्थ" प्रात: 9:20

आप लोगों को यह स्मरण में होना चाहिये कि यहाँ पर कुछ भी नहीं था। केवल धरती थी, काली मिट्टी थी, उपजाऊ जमीन थी, बीज बोये जाते थे। उस उपजाऊ जमीन पर सागर वालों ने ऐसा बीज बोया जो वर्तमान में तो फल ही रहा है, आगे भी फल देता रहेगा। यह एक ऐसा बीज इस धरती में डाला है जिससे हजारों गुना फल मिलेगा। हमारे सामने शिलान्यास चाहते थे।

हमने कहा हमें बाद में बुलाओ। अन्यथा बुलवा - चलुवा नहीं होगा क्योंकि मेरे आने से आपकी व्यवस्था कौन करेगा आप जनता की व्यवस्था में लग जायेंगे। मंगलाचरण शुरू हुआ। एक समय था 500 रु. का सदस्य मिल जाता तो तीन बार जयकार लगाते थे, 1000 दे दे तो कहना ही क्या? जब हम उस समय रामटेक में थे तो ये लोग आकर कहते थे सबसे ज्यादा सदस्य लेकर आये हैं। सिलवानी, बेगमगंज, गैरतगंज आदि - आदि स्थानों से भी सदस्य बनाये।

इसके पश्चात् तीन भवन (आवास) बनाये ऊपर तीन शिखर बने तो सब लोगों ने कहा - यहाँ तो चिकित्सालय हो रहा है, मन्दिर के लिये कुछ नहीं हो रहा। हाँ - हाँ अभी मंगलाचरण हो रहा है। अभी लोगों को पंगत में बैठा रहे हैं, फिर आराम के साथ भोजन भी करो और पूजन भी करो। अभी जिस आंगन में आप बैठे हैं उसमें अतिथियों के लिये एवं चिकित्सकों के लिये आवास बन गये हैं। अमरनाथ बार-बार भवन बनाने की बात

करते थे। हमने कहा किनारे-किनारे बना लो। बीच में क्या होगा? हम बाद में बतायेंगे।

इस धरती पर पांच-पांच बार पंचकल्याणक (गजरथ) हुये हैं। प्रतिदिन शांतिविधान तो यहाँ चल ही रहा है, दाऊ तो इसी में लगे रहते हैं। आप कहेंगे थे, सागर का नाम रहेगा, भगवान का नहीं। भगवान का नाम रहेगा तो सागर तो अपने आप जुड़ ही जायेगा। इस तरह आप लोगों ने अपने कन्धों को मजबूत बनाकर यह कार्य उठाया है।

इतिहास अवश्य ही इसे याद करेगा। ये ध्यान रखो अतीत का जो सागर रहा है, अभी वह उस सागर के अनुरूप नहीं है। ध्यान रखो, हमारा भाव सदैव बढ़त क्रम में रहे। इसके लिये पूर्वजों के इतिहास को भुलाना नहीं है। जहाँ भी-जिस दिशा में आप काम कर रहे हैं चाहे बुद्धि की दृष्टि से हो, समाज की दृष्टि से, आर्थिक दृष्टि से वह आगे ही बढ़ रहा है, ऐसा ही काम करना है।

वास्तु की दृष्टि से कोई कमी न रह जाए, इसलिए इस मन्दिर को चतुर्मुखी रखा। किसी भी द्वार से आप प्रवेश करें चाहें पूर्व से या पश्चिम-उत्तर-दक्षिण से एक सा ही लगेगा। प्रथम खण्ड में हो या द्वितीय-तृतीय खण्ड में हो आपको पता ही नहीं लगेगा कि हम किस खण्ड में हैं, क्यों कि सब समान ही रहेंगे। इस कार्य को यदि जल्दी-जल्दी करना चाहते हो तो जो कुछ भी करना है, जो भी जोड़ा है वह जल्दी-जल्दी यहाँ समर्पण कर दिजियेताकि इसका श्रेय आपको मिल सके।

सभी कार्यों में इसे आदर्शरूप

Date

में रखा ताकि आप इस महान कार्य को बड़े रूप में पूर्ण कर सकें। इसका नाम भाग्योदय तीर्थ रखा था। पहले भाग्य का उदय, आज तीर्थ का उदय हो रहा है। ये सारा का सारा काम गुरुवर ज्ञानसागर जी महाराज के आशिर्वाद से हो रहा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

16-2-17 "विचारों का खेल" प्रातः 9.20

अपनी-अपनी दृष्टि होती है। सबके पास अपनी दृष्टि होती है। कोई अभाव की ओर देखता है तो कोई सद्भाव करता है। दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण होता है। इसलिए दृष्टि सुधारने का प्रयास करें, दृष्टिकोण तो सुधर ही जायेगा। मोक्षमार्ग मिल जायेगा। जो पकड़ना चाहता है उसके लिये रास्ता स्वयं ही प्रशस्त हो जायेगा।

एक व्यक्ति के पास थैले में क्या है? कुछ है। उसके सामने रख दिया। दूसरे व्यक्ति ने भी एक थैला उसके सामने रख दिया और कहा आप इसकी व्याख्या कीजिये, अपनी दृष्टि दीजिये। आपकी आन्तरिक दृष्टि क्या है, हमें ज्ञात हो जायेगा। क्या हो जायेगा? हम अपनी दृष्टि से भीतर की सृष्टि की कैसे पकड़ करें? हाँ अवश्य करेंगे। उसने देखा। क्या देखा? अरे, ये तो आधा रवाली है। अब दूसरे को बताओ। अरे! ये तो आधा भरा है। नहीं समझे। आप भरने की बात करना चाहते थे। यहाँ आपको भरना ही तो है। उसको देखोगे तो सागर का क्या नाप-तौल है, अपने आप ही शील हो जायेगा। इसको गड्ढा क्यों कहते हैं। ये खनन किया हुआ है।

इसमें अभाव नहीं भाव भरे जायेंगे। अब की बात मत करो, हमें तो भाव भरने की आवश्यकता है। हमारी भाईजी आज खराब हैं, लेकिन बीच के प्रतिनिधी के माध्यम से भाव तो पहुँचा ही दिया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

17-2-17 "विशालता आती चोट से" — — प्रातः 9:20

सुनो! संक्षेप से किन्तु आप लोगों को बहुत देर के बाद भी उसका स्वाद आता रहेगा। जल में प्रायकरके अन्य कोई जड़ वस्तु डालो तो वह डूब जाती है। डूबने की क्षमता उस वस्तु में तथा डुबोने में कारण जल में विद्यमान है। दोनों बातें हैं। जल ने डुबो दिया अथवा वस्तु डूब गयी ये कहना गलत है। बिना जल के भी डूब जाते हैं।

एक कंकड़ जल में फेंका, वह डूब गया। अब एक थाली लेते हैं। वह जल में डूबेगी नहीं। क्यों? किसी भी धातु की वस्तु पर चोट देने से वह फैल जाती है और इसमें ऐसी खूबी आ गयी। जो व्यक्ति चोट खाकर विशालता को प्राप्त कर लेता है वह कभी डूबता नहीं। सुन रहे हो। हव। यह हमारी सबसे मिठी वस्तु है। लड्डू की तरह मिठी। हव।

चोट खाने से विशालता प्राप्त होती है, तो जो चोट मारता है वह आपका परम हितैषी - परम मित्र होता है। डूबते हम हैं - दूसरे को निमित्त मानो। तैरने में दूसरे को निमित्त मानो। विशालता की आवश्यकता है। तैरते चले जाओ - तैरते चले जाओ। सागर बनो! संसार के समुद्र में डूब रहे हो। अपनी आत्मा में डूब जाओ तो, तैरते चले जाओगे। ज्यादा समय तो मैं आपका लेना नहीं चाहता क्योंकि दूसरों का समय लूटने को मैं अच्छा नहीं समझता। हमने तो अपनी जिंदगी के जितने समय हैं, उनको लूटने में ही आनन्द लिया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जै

Date

18-2-17 "आओ देखें भीतरी दर्पण" प्रात: 9-20

प्रतिदिन आप लोग दर्पण देखते होंगे और अन्तर्दृष्टि रखने वाले भी दर्पण देखते हैं। दोनों के लिए दर्पण अनिवार्य है। "सामने जाके, दर्पण में देखा तो, नहीं दिखा मैं" फिर से कहता हूँ - "सामने जाके, दर्पण मैं देखा, मैं नहीं दिखा" सुन रहे हो - हव।

तो, अन्तर्दृष्टि - बहिर्दृष्टि, अन्तरात्मा - बहिरात्मा में क्या अन्तर है? इस उदाहरण से आपको स्पष्ट हो जायेगा। आप लोग भी प्रतिदिन दर्पण देखते हैं, और संभालते हैं तथा एक वह व्यक्ति भी दर्पण में देखकर अपने को संभालता है। कितने अच्छे हैं न दोनों। पहला व्यक्ति दर्पण में अपने को देखकर कुछ प्रमाण पत्र की अभिलाषा रखता है। वह उसमें सुन्दर दिखना चाहता है मतलब हमारी सुन्दरता दूसरे पर आधारित है। सामने वाले के अनुसार आप अपने आपको संभालते हो।

संसार के सारे के सारे व्यक्ति दर्पण देखने में लगे हुए हैं, किन्तु तिर्यञ्चों को दर्पण उपलब्ध ही नहीं, नारकी में भी दर्पण नहीं, देवों में जैसे कक्ष बने हैं, वे वहाँ चले जाते हैं जहाँ दर्पण ही लगे हैं। मनुष्य ही ऐसा प्राणी जो दर्पण को सदैव साथ रखता है। एक अन्तर्दृष्टि वाला कहता है हम तो देव-शास्त्र-गुरु को देखकर ही अपने को संभाल लेते हैं। आज का प्राणी मण्डन में ही लगा रहता है। उस मण्डन का खण्डन नहीं करता इस कारण परास्त है।

दर्पण न दिखे - दर्पण में स्वयं को देखने का सौभाग्य प्राप्त हो। इसलिए वह कहता है - सामने जाकर दर्पण देखा, उसमें मैं नहीं दिखा। वह दर्पण ही कैसा जो केवल मूर्त को दिखाये और आत्म तत्व को न दिखाये।

तिर्यञ्च कभी दर्पण को देखता है क्या? नहीं।

प्रशम - संवेग - अनुकम्पा और आस्तिक्य ये चारों दर्शन के लिये अनिवार्य हैं। प्रतिमा विज्ञान कब से ही चालु किया, सबके लिए नहीं। उसमें सर्वप्रथम दर्शन प्रतिमा रखी है। संसार - शरीर - भोग से निर्विण्णो कहा मतलब संसार के प्रति, शरीर के प्रति एवं पंचेन्द्रिय के विषयों के प्रति। भोगों के प्रति अब वह उदासीन हो गया है। पंचगुरु, चरण शरणों, आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने कहा है। मोक्षमार्ग में अवश्य जहां कहीं भी जायेगें ये पंचायत साथ चलती रहती है।

आप लोग मिलिन्ग करके पंचायत को बुलाते हैं, उसके साथ तो ये पांचो रहते है। वह तत्व का दर्शक है। वही दर्शन प्रतिमा का धारी है। इसे ही तत्व माना है, अलग से सात तत्व का नहीं कहा। उस ओर दृष्टि रखता है। आप सभी बाहर की ओर नहीं भीतर की ओर देखने का प्रयास करेंगे। समय आपका हो गया है। (अभी पांच मिनिट है - आज पूजा भी शोर्ट में की) बचा लिया तो मिल गया अन्यथा वो भी नहीं मिल पाती।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

19-2-17 "भाग्योदय मन्दिर शिलान्यास" प्रातः 10.00

"सागर को कैसे बांधे"

नदी - नालो को तो बांधा जा सकता है, सागर को कैसे बांधा जा सकता है, फिर भी सागर को व्यवस्थित करने का प्रबन्ध कमेटी ने जो एक प्रकार से पुरा तो नहीं है फिर भी काम चलाऊ अवश्य है। समय पर यह मांगलिक कार्य पुरा हो गया है। कुछ लोग आये थे तिथी को आगे खिसका दिजिये। आप तिथी को आगे खिसका सकते हो अतिथी को नहीं खिसका

Date

सकते हो। हमने ऐसा सोचा तब जाके समय पर यह मांगलिक कार्य पुरा हो गया। भाग्योदय तीर्थ के ~~समय~~ नाम पर लोग पुछते भाग्योदय तो है तीर्थ क्या है?

आज भाग्योदय के साथ यह सार्थक हो गया। कई भव्यों ने इसमें अर्घ्य चढ़ाया है। यह चढ़ाने का कार्य अविरल बना ही रहेगा। सेवा के क्षेत्र में भाग्योदय योगदान दे रहा है। सेवा को गौण नहीं करते हुये यह कार्य समय पर सम्पन्न करना है। यह स्थान इसी तीर्थ के लिये सुरक्षित रखा था। कई लोगो ने कहा - हम आवासीय व्यवस्था करना चाहते हैं, यह इतनी मुल्यवान जमीन यों ही पडी रहेगी। हमने कहा - नहीं यह बहुत मूल्यवान है आप बीच का स्थान छोड़कर किनारे - किनारे बना लो।

आज वह शुभ दिन आ गया। यहाँ बीचो बीच यह चतुर्मुखी जिसका नाम सर्वतोभद्र क्षेत्र के रुप में यह तीर्थ विकसित होगा। आप सभी के मजबूत कन्धों ने यह भार ले लिया है, भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आप सभी के कन्धो को मजबूती प्रदान करें ताकि यह काम 19 नहीं 21 ही हो।

युग के आदि में भरत चक्रवर्ती ने स्वर्ण जिनालयों की स्थापना की थी। पंचम काल में उस सोने को लूट न ले ऐसी व्यवस्था उन्होंने बना दी। हकीकत है या नहीं? आज भाग्योदय के बीचोंबीच सवा दो सौ X 225 के क्षेत्र में यह स्थापना होने जा रही है। यह उस युग को पुनः स्मरण में लाकर रख देता है। इसे देखकर सबके मन में स्वतः ही लहरें उठ रही हैं। अभी यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ है, इसमें तन-मन-धन जो भी

Date

देकर इन क्षणों को सुरक्षित कर लो, बाद में याद आता रहेगा। भावना से ही सद्भावना जुड़ी रहती है। भावना पाषाण को भगवान बना देती है।

आप इन कार्यों के माध्यम से अपने कर्मों के मल को धोते जाइये। भरत चक्रवर्ती ने युग के आदि में त्रिकाल चौबीसी बनायी थी किन्तु यहाँ केवल नीचे-नीचे ही नहीं तीन मंजिला यह जिनालय जिसमें तीन त्रिकाल चौबीसी विराजमान होगी जिसके शिखर की ऊँचाई २८ फिट होगी।

सभी लोग चाह रहे हैं, हमारा भी योगदान हो क्यों नहीं आप सभी स्वतंत्र हैं। जैन धर्म में भावों के बिना कुछ भी नहीं। भावों के द्वारा ही कर्मों की निर्जरा होती है। आप सभी कर्मभूमी में जन्मे हैं - इसलिए ऐसा कर्म करें की उन कर्मों को काट सकें। योग से हमारा आना हुआ। आना क्या हुआ, आ चलाकर आये हैं। भाग्योदय के साथ तीर्थ का निर्माण करना है। कुछ लोग कह रहे थे हमें जल्दी-जल्दी इस कार्य को पुरा करना है। अब करें।

हमें चातुर्मास चाहिये - ऐसा कहा। हमने कहा छोटी-छोटी मांग क्यों करते हो। भगवान के दरबार में बड़ी मांग कर लो। हम देने के लिए तैयार हैं। सागर में बंधन को छोड़कर दूसरी मांग करियो। सागर को मोह का विषय नहीं बनाना, यह सागर भवसागर से तरने का कारण बन जाए। समय हो गया है। सभी लोगों ने मिलकर बड़े ही उत्साह के साथ यह कार्य सम्पन्न किया। दृश्य ऐसा लग रहा है मानो किसी गजरथ से कम नहीं है। स्वप्न करने वालों ने भी इसे पुरा बोला। तीन-तीन कटनी में

जनता बैठी है। पूरा का पूरा परिसर पैक है। जनता भी खड़े होकर आनन्द ले रही है। सभी लोग जहाँ से भी देख रहे हैं, दृश्य थोड़ा धुंधला दिख रहा होगा किन्तु हमारी ध्वनी तो आपके कानों तक स्पष्ट आ रही है।

पीछे वालों के लिए हमारा आशीर्वाद सबसे पहले पहुँचे। चिर-परिचित सी यह जनता दिख रही है। हमें तो ऐसा लग रहा है कि सागर चारों ओर से घिर गया है। इसीलिये इसका नाम चतुर्मुखी रखा है। स्वर्ग के देव लोग भी तरस रहे हैं, उनसे तो यही कहना है कि वे सदैव इस भू पर प्रकृति का लाभ देते रहें। सभी ओर सुभिक्ष रहे। आनन्द का वातावरण बनाये रखें ताकि अपने सम्यग्दर्शन को पुष्ट बना सकें।

ऐसे महान कार्य में आचार्य गुरुवर महाराज ने उपदेश-निर्देश-आदेश-सान्निध्य जो भी मुझे दिया उनके उन्हीं उपकारों पर चल रहे हैं। हम उनके द्वारा किये उपकार को तो चुका नहीं सकते उन्होंने जो हमें उपदेश आदि दिया उन पर चलकर उस उपकार को चुकाने का कुछ प्रयत्न कर रहा हूँ।

तारणि ज्ञान सागर गुरु-तारो मुझे ऋषीष,
करुणा कर करुणा करो-कर से दो आशीष
अहिंसा परमो धर्म की जय !!

विशेष →

० जो बात मेरे लिए इष्ट नहीं यदि भगवान भी आ जाये तो मैं नहीं मानूंगा। (सिवनी में)

० वैयावृत्ति भी औषधी है उसका उतना ही ध्यान रखें तेल आदि भी उतना ही लें। (टड़ा में)

20-2-1 "समझदार को इशारा" प्रातः 9:25

सुनो! आप सुन रहे थे? बहुत एकाग्रता के साथ सुन रहे थे। क्या सुन रहे थे? जो सुनाया जा रहा था वह सुन रहे थे हम तो एकाग्रता के साथ सुन रहे थे। ये पक्का है। कौन सुन रहा था? हमारे कान। कान तो हमेशा-हमेशा खुले ही रहते हैं फिर सुनते जाओ और आपसे ले रहो। ऐसा नहीं-सुनने की क्रिया तो हम कानों से करते हैं पर कानों में हम उपस्थित नहीं रहेंगे तो काम भी किसी काम के.... बोलो।

ऐसा करें कान को किराये पर दे दो, जैसे दुकान किराये पर देते हो। नहीं। हम सुनते तो कान से हैं, किन्तु जब हम उपस्थित रहते हैं। ये किसकी ध्वनि है? किसके लिए संकेत है? ये संकेत मेरे लिए दिया जा रहा रहा है। सुनाने वाला वहाँ पर है, सुनने वाला यहाँ पर है। शब्द यात्रा करके वहाँ से यहाँ तक आ रहा है। बीच में कोई बैठा है तो वह भी सुन रहा है पर क्या है उसे कोई मतलब नहीं।

तो सुनने वाला, सुनाने वाला तथा सुनने में जो आता है (शब्द) तीनों ही महत्त्वपूर्ण है। दिमाग में ये तीनों रहते हैं तभी सही-सही विभाजन होता है, अन्यथा। यह रास्ता है जो सीधा पहुँचाता है। रास्ता कभी नहीं पहुँचाता नहीं तो चलने का क्या मतलब होता। कहाँ पहुँचाना है - बीना पहुँच जाता है। सुनने में आता है रास्ता पहुँचा देता है पर रास्ता नहीं पाँव पहुँचाते हैं।

यदि रास्ता पहुँचा दे तो इससे अच्छा और क्या? हम तो फोकट का काम चाहते हैं। अब देखो! आप कान से सुन रहे हैं। सुनाने वाला भी है। क्या सुन रहे हैं? शब्द सुन रहे हैं। पर सुनने वाला कौन है? वह एकाग्रता के साथ सुना, हम भी एकाग्रता के साथ ही सुनें। एकाग्रता इसलिए कहा क्योंकि तभी शब्द आपको आत्मसात् हो

Date

सकते है। शब्द को कोई पकड़ नही सकता। न ही सुनने वाला, न ही सुनाने वाला। शब्द सुनने वाले के अधीन भी नही है। इसलिए इन तीनो चीजो में सुनने वाला एवं सुनाने वाला भी है।

यदि सुनाने वाला है और सुनने वाला नही है, जैसे आप लोग दुकान - घर आदि छोड़ छाड़ कर आते है। कही महाराज जल्दी रवतम न कर दे नही तो कुछ भी नही मिलेगा। इसलिये मैं इन कार्यकर्ताओं से कहना चाहता हूँ कि वे यहाँ पर ये सब क्यों सुनाते है? दान-दाताओं के घर जाकर क्यों नही सुनाते। (वहाँ कोई सुनता ही नही है महाराज)

ये सब क्या संदेश दे रहा है? हम शब्द सुनाना चाहते है, सुनना चाहते है सामने वाले किन्तु योग्य शब्द वाहक नही मिलता तो कोई भी सुन सकते न ही आप सुना सकते। यदि सुनने वाला कानों में उपस्थित नही तो भी नही सुना सकते। न ही संकेत दे सकते है। दुकान खोल दई और आप खुर्राटे लेओगे तो क्या होगा। अतः सुनने वाले का जागृत रहना भी मुख्य है।

जागृत है तो शब्द नही इशारा ही काफी है। समझदार के लिए इशारा ही काफी है। वह समझ जाता है। हमारी ओर देखो। आपकी ओर देखने से तो गुढ से गुढ अर्थ भी खुल जाता है फिर हमसे क्यों बुलवाते हो। मैं सबसे पुछना चाहता हूँ कि आप भगवान से क्यों नही बोलते है? भगवान से बात क्यों नही करते है। भगवान ने हमें सुनाया था उसी में से हम आपको सुना रहे है। मैं तो माइक का काम कर रहा हूँ। ये आपकी आस्था का विषय है। इसलिए कहना चाहता हूँ जो सम्यग्दर्शन प्राप्त करना चाहता

Date

द्रव्य श्रुत के साथ उसकी कोई व्याप्ति नहीं है। शब्द के साथ अर्थ की व्याप्ति है ही नहीं। जो सुनता है और अर्थ को समझ जाता है, वही उसके साथ संबंध रखता है।

चुटकी बजाते - बजाते भी अर्थ समझ सकता है। क्या हुआ (हाथ से इशारा) कोई रवाना हो गया अथवा ये तो मेरा बांये हाथ का काम है - दांये हाथ का नहीं। ये तो संकेत मात्र है। इससे भी ऊपर कई बार हमारे पास चर्चित होता है। लोग सब कुछ सुना देते हैं, हम बिल्कुल मौन रहते हैं। सामने वाला उसी को ~~मौनं सम्मति लक्षणं~~ " मान ले तो मैं क्या करूं। या और आगे मौनं स्वीकृति लक्षणं मान लेता है। आचरण पात्रिका हमारी है, उसमें निकाल देते हैं।

अखबार हमारा है। महाराज मौन रह जाते हैं। सुनो! इसका अर्थ - मौनं अस्वीकृति लक्षणं होता है। इसलिये जब कोई बात समझ में भी नहीं आती तो आप समझने का प्रयास करते हैं, यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। आगम में यह कहीं भी नहीं आया, वहीं भी नहीं लिखा कि द्रव्य श्रुत के साथ सम्यग्दर्शन की व्याप्ति होना अनिवार्य है।

इस प्रकार समझदार के लिये इशारा ही काफी है। देव-शास्त्र - गुरु के द्वारा हम अपने सम्यग्दर्शन को और मजबूत बनाते जायें। शब्द / संकेत के माध्यम से हम सही अर्थ तक पहुंचे। तीनों बातों को ध्यान रखें। सुनने वाला - सुनाने वाला एवं शब्द आप सिरदर्द अपने आप ठीक हो जायेगा।

कम समय में बहुत ही सारगर्भित यह विषय आप सभी को सुरक्षित रखना है एवं सभी तक पहुंचाना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

Date

21-2-17 "त्याग की महिमा" प्रातः 9.20

एक व्यक्ति को नींबू की व्याख्या करते - करते लगभग एक घण्टा हो गया किन्तु उससे उसको कोई फर्क नहीं पड़ा। अब इससे जिसने स्वाद लेकर परिचय प्राप्त किया था, उसका त्याग तो था ही नहीं, वह सुनकर मुख में पानी - पानी हो गया। जिसने मात्र परिचय लिया था उसके मुख का पानी और सूख गया। क्या हुआ बताओ?

एक घण्टे व्याख्या से कुछ नहीं हुआ, जिसने चखा था मात्र याद भी आ जाये तो मुख में पानी आ जाता है। अब इससे और आगे बढ़ते हैं। जिसने नींबू को चखा है, चखाया है, जो परोसने में लगा हुआ है फिर भी पानी नहीं आया है। किसका चमत्कार है ये? मुझे तो आज कुछ खाना ही नहीं है, सब चीज का त्याग कर दिया है। हाँ दूसरों को तो परोसूंगा अन्यथा उसका उपवास हो जायेगा तो और गड़बड़ हो जायेगा।

वह बनाने में, परोसने में घण्टों लगा दिया पर नींबू का त्याग होने से ऐसा हुआ। यह त्याग की महिमा है। अरे त्यागी नहीं तो वह सब कुछ त्याग कर सकता है, किन्तु नींबू का त्याग नहीं कर सकता। अपने भीतर में ऐसी आस्था जगाइये। इन पंचेन्द्रियों के विषयों के बीच में रहना है। पक्का है, ये छूट नहीं सकते। ग्रहण करना और त्याग करना ये हमारे हाथ की बात है। कुछ लोग प्रतिज्ञा कर रहे हैं। त्याग होना तब होगा यदि भावों में है तो मुख में आयेगा, बोलने में होगा या नहीं होगा।

इसलिये अपनी आस्था को बढ़ाइये और कदम उठाइये। आपको कोई रोकने वाला नहीं है। तो एक महाराज आहार पर नहीं उठते तथा एक उठते हैं। दोनों में से कर्म

Date

की निर्जरा किसकी अधिक होगी। जो उपवास किये हैं, उनकी कर्म निर्जरा ज्यादा हो ऐसा कोई नियम नहीं है।

दूसरे महाराज गये, श्रावकों ने पड़गाहन किया ये आहार लेकर आ गये। तप नहीं हुआ क्या? हो सकता है इससे भी अधिक तप हुआ हो। वे आहार पर उठे ये सोचकर की उनके लिए भी तप करना है, अभी कर रहे हैं उनकी सेवा-वैय्यावृत्ति करना है। इस प्रकार की आस्था के आधार पर आप असंख्यात गुणी निर्जरा कर सकते हैं।

एक ही तप पर आश्रित हो ऐसा भी नहीं होना चाहिए। आप लोग प्रायः कर रहे हैं। दुकानदार वही समझदार माना जाता है जो हमेशा भावों पर नजर रखता है। सुबह के भाव अलग, शाम के भाव अलग, आज के भाव अलग, कल के भाव अलग सभी पर नजर बनाये रखता है इसमें आलस्य नहीं करता है। कुछ लोग- महाराज! छोटा सा जीवन मिला है, दुःखी क्यों होते हो। अपने भावों को बड़ा बनाये रखो।

इसलिये भावों की मुख्यता होती है। द्रव्य के त्याग को भी इसीलिए मुख्यता देते हैं। द्रव्य के त्याग से भावों में भी निर्मलता आती है। जो राग के रूप में लगा रहता है उसे दूर करने की जरूरत है। यह सब एकाग्रता की बात है, एकाग्रता होगी तभी तो आस्था होती है। कम समय में भी हम उस आस्था के माध्यम से अधिक कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं।

निर्जरा तत्व को बढ़ाने का प्रयास हमेशा होना चाहिए। मनुष्य गति ही एक ऐसी गति है जिसमें कर्मों की निर्जरा अधिक होती है। स्वर्गों में देव हैं, द्वादशांग के पाठी हैं, वे भी हाथ-जोड़कर खड़े रहते हैं।

होनहार उम्मीदवार के सामने नतमस्तक हो जाते हैं। इन्द्र की सभा लगती है उसमें तीन-तीन बार तत्त्व-चर्चा (स्वाध्याय) होती है, सुबह की शाम में नहीं शाम की सुबह में नहीं। जीवन पर्यन्त तक प्रतिदिन नया-नया विषय आता है। — सुन रहे हो न। हव। तो भी इन देवों की उतनी निर्जरा नहीं होती जितनी यहाँ णमोकार मंत्र जपते-जपते हो जाती है। निर्जरा का महत्त्व है। इतना अवश्य है कि इनका अतीत कुछ और था तथा वर्तमान कुछ और है। इतना अवश्य समझ लो। कल नहीं परसों जो कार्यक्रम होना था वह तो हो गया। अब। हाँ महावीर जयन्ती तो कहीं न कहीं की होगी ही। जहाँ भी हो वहाँ आकर सान्निध्य प्राप्त कर सकते हैं। — अहिंसा परमो धर्म की जय। नु

दोपहर 1.30 पर भाग्योदय से विहार — — — — यतिविहार-बम्होरी

22-2-17 दाना, "समझदार बनो- पढ़े-लिखे नहीं" प्रातः 9.40

— — — ये बुंदेलखण्ड की प्रजा है। न पढ़ी है, न सुनी है किन्तु जब आप लोग बोल लेते हैं तो आप से भी ज्यादा समझ में आ जाता है। यह सुनने का लाभ है। बिल्कुल ठेठ बुंदेलखण्डी के पास भी हम गये हैं इनकी भाषा सुनी है। — अभी दाना के बारे में एक बात सुनी - यहाँ सेना के लिए क्षेत्र है, वहीं हवाई पट्टी आदि है, इसके साथ यहाँ से कई उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति हैं। 300 शिक्षक इस गांव के हैं। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। किसी भी गांव-समाज-प्रदेश या देश की उन्नति में शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान है। एक आदर्श शिक्षक ही बड़े-बड़े कलेक्टर, अधिकारी-उद्योगपति, न्यायाधीश आदि कोई भी हो तैयार करता है। सभी

चाहते हैं हमारी प्यारी संतान को शिक्षण कौन देगा। उपयुक्त शिक्षक के अभाव में भविष्य अंधकारमय है। आज आप देख रहे हैं, विद्यालय - विश्वविद्यालय की भरमार है। यह एक व्यवसाय का रूप ले लिया है पर परिणाम देखते हैं तो कुछ और ही है।

यह अन्तर शिक्षक के कारण ही आ रहा है। पत्र-पत्रिकाओं आये दिन प्रकाशित होता रहता है जिसका परिणाम गंभीर है। हमारे सामने आते हैं, जिन्होंने अध्ययन किया, बड़ी-बड़ी कम्पनीयों में नौकरी भी की पर वे संतुष्ट नहीं हैं। ऐसे प्रतिभा सम्पन्न बच्चे 50 से भी अधिक मेरे पास आये हैं। अब उनको ज्ञात हो रहा है, क्या हो रहा है।

इसमें माता-पिता की भी गलती है। वे चाहते हैं मेरा बच्चा अच्छा पढ़ा-लिखा हो, केवल नौकरी के लिए हो तो यह गलत बात है। जैसे आप पूजन इत्यादि करते समय अथवा अन्यत्र भी कहते हैं कि आज व्यक्ति श्रम से डर रहे हैं। भूख तो लगी है, उसकी ध्वनि से ऐसा अहसास हो रहा है। आपने अच्छा भोजन करा दिया। आपने कहा - हो गया, अब काम कर लो। वह कहता है - भरे पेट कैसे काम किया जाता है। आराम करने लगता है - खुर्राटे होने लगा। उठा तो फिर कहा काम कर लो। सोने के उपरान्त पुनः भूख लग आयी। ये सभी के जीवन का हाल है।

इससे स्पष्ट है खाली पेट हो तो रोना, भरे पेट हो तो और रोना। आप चाहते क्या है? श्रम से बच्चों को विमुख करेंगे तो ये ही होगा। शिक्षा और चिकित्सा का आज व्यवसायिकरण हो गया है। यह ठिक नहीं है। इस कारण वे बच्चे किसी काम के नहीं हैं। शिक्षा जगत से जुड़े एक उच्च अधिकारी

ने यह समीक्षा की। 90% - 10% इंजिनियर कोई काम के नहीं हैं। वह काम का क्यों नहीं हैं? तो कम्पनी वाला कहता है, हम उन्हें काम नहीं दे सकते। हम जो काम कराना चाहते हैं, उसे करने को वह योग्य नहीं हैं। हम तो डबल वेतन भी देने को तैयार हैं।

ऐसे में जब नौकरी तो मिलेगी नहीं और लोन लेकर शिक्षा प्राप्त की है तब क्या करेंगे। यह दशा हो गयी है। बनिया की दुकान पर बैठेगा तो कम से कम अच्छे ढंग से तराजु तो पकड़ना सीख जायेगा। दद्दा से कहेगा अब आपका काम हो गया, अब मुझे करने दो। यदि किसान का बेटा है तो अच्छे ढंग से खेती करना सीख जायेगा। इस प्रकार बिना पढ़ाये - लिखाये भी तैयार हो जायेगा।

दाना वालो! अब अपने गाँव की क्या समीक्षा होगी। अभी हमने पुछा तो बताया यहाँ से तहसीलदार, विधायक, कलेक्टर आदि बनें। शिक्षक बनें। हमने पुछा पत्रकार कितने हैं? (हंसी)। अपने पूर्व के भारत को वापस लौटाना चाहते हो तो इतिहास को अच्छे से पढ़ो। आज उस इतिहास का एक अंश भी शेष नहीं है फिर भी - - उस इतिहास का कितना विस्तृत स्वरुप रहा होगा।

इसलिये भारतीय इतिहास जानो। ज्यादा खाना तो ठिक नहीं - ज्यादा सोना भी ठिक नहीं है। भगवान के सामने जाकर यह प्रार्थना करो -

"हम अधिक, पढ़े-लिखें हैं कम, समझदार"

पढ़े-लिखे तो बहुत हो गये पर समझदार कोऊ नइयाँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रात्रि विश्राम - करताल

Date

रहली- पटना बुजुर्ग

२३-२-१७ "मूंछ का कमाल" प्रातः १०.१५

यहाँ से हम एक-दो बार निकले भी हैं और आये भी हैं। किन्तु ये प्रथम बार है जो १० बजे को यहाँ से निकले हैं। इसके पास रहली में काफी प्रवास रहा है- पटना रहली में, उसका नाम रहली रखा है। इसका नाम अलग है- पटना बुजुर्ग। ये बुजुर्ग लोग होते हैं, वे नये-नये लोग हैं। बुजुर्ग लोग बहुत चौलु होते हैं, चाबी नहीं देते हैं। बच्चे लोग शहर में बस गये, बुजुर्ग लोग तो इते ही हैं।

देखो! अभी यहाँ के एक दावा कर रहे थे। भारतवर्ष में खेती के लिए जैसे पंजाब समृद्ध है, इसी प्रकार यह पटना बुजुर्ग है, जो "हिन्द केसरी" जैसे ही है। केसरी का अर्थ सिंह होता है। वह मृगराज माना जाता है। राजाओं के कारण देश/राष्ट्र समृद्ध नहीं किन्तु किसानों के कारण होते हैं। वे कह रहे थे किसान खेती ही नहीं पशुओं का भी पालन करते हैं। यहाँ की यही हालत थी कि यहाँ मनुष्यों से भी ज्यादा पशु थे।

आज जब प्रातःकाल इधर आ रहे थे तो सड़क देखी किन्तु थिगड़ा लगायी हुयी नहीं थी। थिगड़ा का मतलब समझते हो? वह रोड़ सीमेन्ट से भी अधिक चिकनी लगी। इसलिये लगी की जो पशु हैं उनके नाखुनों से वह खुरदरी तो हो गयी किन्तु उनके गोबर से वह थिगड़ा के बिना भी चिकनी लगी। मेरे पांव में बिल्कुल नहीं चुब रही थी। आप लोग गाड़ी से चलते हैं, अतः पशुओं के इस रहस्य को भी अनुभव नहीं कर पायेंगे। आज भारत में उल्टा ही हो रहा है।

इस उल्टे के कारण भारत की शिक्षा- प्रणाली आज बदल गयी है। ऐसी दशा में वह समृद्ध

Date

होने पर भी कंगाल होता चला जायेगा। जो इतिहास को जानता है, वह परम्परा को भूलता नहीं है। जो इसे नहीं पढ़ता वह अपने गौरव से निर्देशित रूप से, स्वाभिमान से वंचित रह जाता है।

इसी कारण आजादी के ७० वर्ष हो गये किन्तु हालत यही हो गयी। यह सब विदेशी संस्कृति अपनाने के कारण हो रही है। आज शहरों की ओर जा रहे हैं वहाँ परतंत्रता ही परतंत्रता है। गाँवों में किसान स्वतंत्र है। परतंत्रता की बात ही नहीं। नगरों में वह भीख कर खा रहा है।

आज नगरों को गांवों से जोड़ा जा रहा है, यह गलत बात है। यहाँ का उत्पादन ले जा रहा है, इससे किसान को जो मिलना चाहिये वह नहीं मिल रहा है, इसी कारण लूट-खसोट हो रही है। आज शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में व्यवसायिकरण हो रहा है। हर कार्य में लोन लिया जा रहा है। यह भारत की परम्परा नहीं है, विदेश की परम्परा है। देशवासियों को मेरा यही कहना है कि नेताओं के सामने इसे रखें कि इस कर्ज की परम्परा को बंद करें।

यह किसी भी प्रकार से उपयुक्त नहीं है। ज्यादा तो मैं नहीं कह सकता। आलोचना मैं किसी की नहीं कर रहा हूँ पर जो सही है उसे बताने में किसी प्रकार की कोई हिचकिचाहट भी नहीं है। डॉक्टर अथवा वैद्य का उद्देश्य तो रोग को ठीक करना है। आज आप लोग सोच रहे होंगे की हम तो महाराज के मुख से प्रशंसा सुनना चाहते थे पर ये क्या हुआ। इसी प्रकार बच्चों को इतिहास से परिचय कराना जरूरी। नाती का दादा जी को परिचय कराना जरूरी है। दादाजी

भी बेटे से परिचय नहीं जाति से ही रखते हैं। यही है ना। इसलिए वे दादा जी हर्दव तैयार रहते हैं।

यहाँ एक-आध दादा जी है, जो मूंछ रखते हैं। बाकि नहीं रखते हैं। इनको भी सुनकर अच्छा लगता होगा। ये मूंछ इसलिए रखते हैं क्योंकि यह विश्वास की प्रतीक है। कोई उधार लेता था तो वह कहता कि ले तो जा रहे हो - कैसे विश्वास करेंगे। ये लो मूंछ का एक बाल तिजोरी में रख लो। हम वापस तुम्हारा कर्ज देकर यह बाल ले जायेंगे।

आपके पास तो मूंछ है ही नहीं। भारत को जो भी स्वतंत्रता मिली है वह मूंछ के स्वाभिमान से ही मिली है। आपने कोठों में देखा होगा दो लोग अपनी मूंछ पर ताव दे रहे हैं। आप लोग लोन लेकर मूंछ पर ताव दे रहे हैं।

इतना पर्याप्त समझता हूँ। धर्म, संस्कृति, राष्ट्र, देश पर आपकी यह कृपा अवश्य बरसनी चाहिए। भारत में किसी भी बात की न कमी है न कभी कमी रहेगी। अपने इस स्वाभिमान को जानें।

अहिंसा परमो धर्म की जय में

सांय ५.४५ रहली में प्रवेश

२५-२-१७ "सागर रुकता - नदी चलती" प्रात:९.३०

लगभग एक वर्ष हो गया। कभी-कभी अधिमास भी आ जाता है। तो पुनः क्षेत्र का दर्शन करने का अवसर प्राप्त हो गया। सागर वालों का काम था। सागर वाले तो धीरे-धीरे चलते हैं। सागर कभी चलता नहीं, न ही भागता है। हाँ, उछल कूद

Date

ज्यादा करता है। यहाँ पर सागर तो है नहीं सुनार सरिता है। जो अपने लक्ष्य की ओर ही हमेशा - हमेशा बढ़ती रहती है।

उस सुनार नदी के तट पर यह क्षेत्र जो पहले पूर्वाभिमुखी था। यहाँ के लोगों ने उत्तराभिमुखी करने का निश्चय कर लिया है। सुनार भी उत्तर की ओर बह कर जा रही है। यहाँ सामने आप चिन्ह देख रहे हैं। ऊपर आने में थोड़ा समय लगता है। सूर्य ऊगता है तब लालीमा लिये हुये होता है फिर प्रकाश होता है। लोग यह भी कह सकते हैं क्या-क्या डाला जा रहा है, कितना डाला जा रहा है? दिखता तो है ही नहीं।

बाद में सब स्वतः हो जाता है। कार्यकर्ता उत्साही हो, लगनशील हो, समर्पित हो तो काम होता है। जब तक जोश नहीं तो काम होता नहीं लेकिन जोश के साथ होश की भी आवश्यकता होती है। अब तो क्या है? इसे देखकर समाज के लोग भी उत्साह के साथ तैयार होंगे। कि हमारा भी ले लो, हमारा भी ले लो। इसमें कुछ लग जाय, ये हमारा सौभाग्य होगा।

ये ध्यान रखना! ऐसे कार्यों में हरेक का द्रव्य नहीं लग सकता। माला फेरनी होगी। विषयों और भोगों में तो लग जाता है, पर पुण्य में धन को लगाने के लिए भी पुण्य चाहिए। पूर्वज उसी त्याग के बल पर इस संस्कृति को लाये हैं आप भी उसे आगे बढ़ाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। इन वचनों को सुनकर गति में कमी नहीं लाना। न ही मन में अभिमान पुष्ट करना। सामने तो प्रशंसा तो देंगे ही पर उस ओर ध्यान नहीं देना है। पुण्य चलकर ही

विश्राम करना है। बहुत सारी परीक्षायें होती हैं, उनको पार करते हुये तथा धन का सदुपयोग करते हुए चलते जाना है। प्रत्येक व्यक्ति पुण्य चाहता है, पुण्य भी गाढ़ा वाला चाहता है। पुराना पुण्य चाहता है तो पुराने पुण्य को बाहर निकालें। ऐसे में वह आगे चलकर दृढ़ता के साथ आगे बढ़ जायेगा। इन्हीं शब्दों के साथ विराम लेता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

रात्रि विश्राम - चाँदपुर
25-4-17,

"उदारता दिखाती है कोपरीया"

आहार - जैतपुर (कोपरा)
प्रातः 9.40

इधर के गाँवों के नाम अलग - अलग हैं। चाँदपुर कोपरा और जैतपुर कोपरा। कोई भी व्यक्ति भोजन करने बैठ जाते थे तो पहले पत्तल रखते थे और फिर दोना रखते थे। नहीं है तो खाली रख देते थे। (लाइट जाने पर बिना माइक के प्रवचन) अपने पास तो कान है न, बस उन्हीं से सुनना पड़ता है।

तो मैं यह कह रहा था कि पहले पत्तल-दोने के माध्यम से ही पंगत उठती थी किन्तु जो परोसने वाले होते थे उनके हाथ में मजबूती के साथ परात पकड़े होते थे। समझ रहे हो न। कोपरा लेकर लड्डू-पेड़ा जो भी होता था, उसे परोसते चले जाते थे। यह दृश्य देखा था उसी को आपके सामने रख रहा हूँ। जब स्वयं भोजन करते हैं तो कोरी थाली अथवा पत्तल लेकर करते हैं पर दूसरों को परोसने के लिए तो बड़ी परात (कोपरा) लेकर ही परोसते थे।

भारत की यह उदार प्रवृत्ति रही है, यही ग्रामीण पद्धति है। ग्रामीण लोग ऐसे ही करते हैं। वे जो भी उत्पादन करते हैं, उस उत्पादन को परात (कोपरीया) से सबको परोस देते हैं। अपने

Date

लिए जितना आवश्यक है, उतना रख लेता है।

इस मार्ग से कई बार आना-जाना हुआ। रात्रि में मुकाम तो कई बार हुआ पर दिन में कभी नहीं आये। पिछली बार अनन्तपुरा को कट करके चांदपुर वालों को लाभ मिला था इस बार चांदपुर से इधर आ गये। हमने पहले सुना था, वही बात सच रहा है। बीना बारहा में शांतिधारा योजना का उद्घाटन होना था। गर्मी तेज थी; लू चल रही थी। इधर चौपहला से हजारों की संख्या में जैन-जैनेतर लोग आये थे। सभी लोग बैठे थे।

हमने सबके सामने यह योजना रखी। ऐसी योजना जिससे परोपकार हो सके। दयामय धर्म के द्वारा पशुओं का संरक्षण हो सके। योग से बीना-बारहा क्षेत्र के पास 100-125 एकड़ जमीन भी थी। जो भी इस क्षेत्र में पशु है, बूढ़े-बाढ़े भी क्यों न हो उन सभी का संरक्षण इस शांतिधारा योजना में होगा। सब लोग तैयार हो तो ताली बजायें (ताली) उस समय कहा था।

यहां के गाँव का नाम मुझे अभी भी याद है। उस जमीन में यहाँ के श्रेष्ठी ने योगदान दिया था। पहले उदारता एवं दयाभय धर्म के लिए इस प्रकार का काम करते थे। जमीन कोई भी ले जा नहीं सकता पर आज यह दयनीय दशा हो रही है फिर भी हमारा कहना है जो कुछ भी बचा है। दयामय धर्म की ओर आना चाहिए। नौकरी-चाकरी की बजाय इसे बढ़ाना चाहिए।

जो होना चाहिए वह नहीं हो रहा है। शहर में इस तरह की सुविधा नहीं है, गाँव वाले चाहें तो कर सकते हैं। अभी एक सज्जन ने कहा हम शहर जा रहे हैं। हमारा जो कुछ भी

Date

है वह काम आ जाए। फिर भी हमारा कहना है जो भी गाँव छोड़ शहर की ओर जा रहे हैं, उन्हें अपनी जमीन का सदउपयोग इस प्रकार से करना चाहिए।

जमीन को कभी भी बेचना नहीं चाहिए। इससे जमीन का दुरुपयोग होगा। यह कार्य किसी योग्य व्यक्ति से करवाना चाहिए। एक-एक पाई का उस दयामय धर्म एवं परोपकार के लिए उपयोग हो। इस प्रकार आपके सामने कोपरा (जैतपुरा) की बात रखी। बड़े-बड़े राजा-महाराजा की आरती भी छोटी सी थाली से नहीं कोपरा से ही उतारी जाती है।

हमने सुना था कुछ पंक्तियाँ हैं- परमा पधारे कोपरिया में, चौका लगा है अटरीया में। श्रीफल रखा है कलशियों में। पाँव पखारे कोपरीया में। इस प्रकार संस्कार के साथ मिलकर आप सभी को दयामय धर्म एवं परोपकार के काम सतत करते रहना चाहिए। जल प्रबन्धन का भी काम कर और आगे बढ़ा जा सकता है। बस इतना ही कहना पर्याप्त समझता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

ईर्यापथ में -

पहले के लोग संघ की वैयावृत्ति के लिए बड़ी-बड़ी जमीन दान कर देते थे। इस जमीन द्वारा जो भी आय होगी उसके द्वारा संघ की सेवा की जायेगी। पहले यह उदारता होती थी। इसमें किसी भी प्रकार से मुनि-महाराज का कृत-कारित-अनुमोदना नहीं होती है। यहाँ के लोगों ने भी 54 एकड़ जमीन दान में दी थी। पूर्वजों की सोच बहुत बड़ी होती थी।

रात्रि विश्राम - देवरी तिगड्डा

"शिक्षास्थली पर प्रथम बार प्रवेश" प्रातः 8.30 बिना बारह प्रवेश

26-2-17 "हम प्रवासरत हैं" प्रातः 9.30

आज यह मंगल अवसर पर बिना बारहा क्षेत्र पर आप सब लोग आये हैं। आज रविवार के निमित्त से आप सब उपस्थित हैं। हमारा कोई रविवार का निमित्त नहीं था। द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव ये चारों प्रत्येक कार्य के होने में अनिवार्य बिन्दु हैं। इनमें से एक भी कम हो तो कार्य नहीं होगा। अथवा एक-आध बढ़ जाये तो भी कार्य नहीं होता। समय-स्थान-भाव के साथ ही द्रव्य रहता है। आप लोगों ने पूरी लगन से इस क्षेत्र का कार्य किया है पर घर की अपेक्षा बहुत थोड़ा काम किया है।

आप लोग कहते हैं, हम सुनते रहते हैं, महाराज अभी तो दुकान चालू नहीं है, फिर भी दुकान चलाते रहते हो। काफी मंदी का समय हो तो भी कमर तोड़ मेहनत करते रहते हो। आज मध्याह्न में चतुर्दशी भी है। कल हम प्रवास में थे, अभी भी प्रवास में हैं किन्तु विहार होने से कल प्रतिक्रमण नहीं कर पाये थे।

आज मध्याह्न में प्रतिक्रमण तो है ही, बन जाये तो हम समय अवश्य निकालेंगे। तब तक आप लोग माला फेर लो अथवा अपने जो योग्य कार्य हों उन्हें कर लो। यहाँ से जो हैतकरघा की शुरुआत हुयी वह चारों ओर तेजी से फैल गयी।

अभी तो इतना ही कहना है, लगन होना धार्मिक क्षेत्र में जरूरी है। समय अवधि में काम करने से काम ज्यादा होता है। समय ज्यादा हो जाये तो काम कम तथा कार्य कर्ताओं का उत्साह बैठ जाता है। आगे क्या होता है देख लेते हैं। वैसे तो हम प्रवास पर हैं। सागर-रहली वालों से भी यही कहा था। बीना-बारहा वालों से भी यही कहना है कि हम प्रवासरत हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

Date

27-2-17 "गुरु-दक्षिणा" प्रातः 9·20

एक प्रसंग सारे के सारे छात्र आश्रम से निर्वृत होकर जा रहे हैं और गुरुजी के सामने खड़े हैं तो गुरुजी ने कहा- आप लोगों का अध्ययन पूर्ण हो गया है। अब आप क्या चाहते हैं? क्या कर सकते हैं? हाँ आपने जैसा सिखाया उसी का उपयोग जीवन में करना चाहते हैं। बहुत अच्छी बात है। दक्षिणा देकर जाओ- ऐसा गुरुजी ने कहा।

छात्र कहते हैं गुरुजी आप के लिए क्या दक्षिणा दें, हमें समझ में नहीं आता। तो उन्होंने कहा आप लोगों ने जो बातें सुनी हैं इसे जीवन में उतारें बिना जीवन बन नहीं सकता। यही दक्षिणा लेना है और यही दक्षिणा देना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

1-3-17 "काम तो लो नौकर से" प्रातः 9·20

अभी सुबह का समय है मध्याह्न का नहीं और फिर बार-बार क्यों माँगते हो। भोजन किया जाता है तो पेटभर भोजन किया जाता है। सब कुछ दिया जाता है किन्तु कोई स्वादिष्ट चीज रहती है, उसे भोजन के रूप में नहीं दिया जाता है न? उसी प्रकार हम आपको भोजन नहीं अमृत चखाना चाहते हैं। उन्होंने कहा ये तो और अच्छा है।

उसी प्रकार धर्म की बात एक बार सुनने की नहीं होती। सुनते-सुनते आप बूढ़े हो गए। एक भव में ही नहीं कई भव लग गए। सोचो तो कहाँ से आये हम। कम से कम अब तो निर्णय लेना चाहिए। देव लोग भोजन नहीं करते, ग्रास रूप में नहीं लेते। उनके कण्ठ में ही वह वस्तु रहता है, बस थोड़ा सा दब गया तो महीनों फुर्सत हो जाती है। ऐसे ही आप लोगों को सोचना चाहिए। अब बचे समय का

Date

आत्मा पर उपकार हो शरीर पर उपकार न हो। इदोपदेश में भी आता है - जो शरीर पर उपकार करता है वह आत्मा का अपकार और जो आत्मा पर उपकार करता है वह शरीर पर अपकार करता है। हमें अपकार किसी का नहीं करना है। इसे वेतन देना है तो काम में भी लेना है।

इतना ही ठिक है, भरपेट नहीं मिलेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

2-3-17 "आओ देखें - समता रूपी चांदनी" प्रात: 9.20

अभी भजन का समय है ये। देखो अभी भजन में शरद पूर्णिमा के चंद्र की बात कही। शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा को देखते हैं तो उसमें कई प्रकार के काले-काले धब्बे देखने को मिल जाते हैं। कितना भी करो वे काले-काले धब्बे उसमें चिपके ही रहते हैं किन्तु नीचे चाँदनी को देखो तो न दाग है, न धब्बे हैं और कुछ है।

इसी प्रकार जब हम बाहर देखते हैं तो चारों ओर दाग - धब्बे ही मिलेंगे तथा जब भीतर समता को देखते हैं तो कुछ भी देखने को नहीं मिलता। हम तो स्वार्थी हैं हमेशा समता को ही रखना चाहते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

"36 घण्टे ध्यान का अभ्यास"

Date

3-3-17 "उपयोग करो- उपभोग नहीं" प्रातः 9.20

आज प्राप्त करने योग्य जो कुछ भी है, वह प्राप्त करके रहता है, उसके गुण - अवगुण पर ध्यान ही नहीं देता। गुणों को प्राप्त नहीं कर अवगुण प्राप्ति होना अधिक सम्भव रहता है। एक तुम्बी का उदाहरण लें।

वह तुम्बी विषाक्त है, विषाक्त का अर्थ है उसमें एक प्रकार का गीलापन है। जब तक वह सूखती नहीं है तब तक उसका वह विषाक्त पना बना ही रहता है। उसमें यदि मीठा अमृत समान दूध भी डालोगे तो वह तुरन्त फट जायेगा। क्यों की वह रजस्क है। अब आप चाहते है कि वह अरजस्क बन जाये। सूख जाये तो लोग उसी तुम्बी में कुछ भी रख सकते हैं।

हम लोगो का हाल भी ऐसा ही है। तुम्बी खाओ तो उसका स्वाद कुछ और ही होता है। Food Poision हो जायेगा। हमारा काम तो हो गया। हम तो प्रत्येक व्यक्ति को अरजस्क बनाना चाहते है। किन्तु ऐसे प्रत्येक व्यक्ति के चक्कर में नहीं आना चाहिए न ही इन की बातों में खोना चाहिए।

आप खोना चाहते है तो हमारा उदाहरण ध्यान में रखीये। (अभी अभी समय नहीं हुआ सुनो) बहुत कम में भी बहुत ज्यादा काम हो सकता है। बस थोड़ी सावधानी रखीयेगा तो दे दिया।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

4-3-17 "पूजा किसकी" प्रात: 9.20

द्रव्य-पूजन के साथ भाव भी होते हैं, लेकिन दोनों में एकत्व होना चाहिए। बहुत कठीन होता है। इसीलिए तो परीक्षा कहा गया है। सुनो एक श्रावक है, उसके पास पांचो इन्द्रियाँ हैं, वह अपने छह आवश्यकों का पालन करता है। उसके लिए 10 बज गया है। वह अतिथीयों का स्वागत करता है।

भले ही आयें या न आये। ग्राहक तो ग्राहक है पर दुकानदार तो ग्राहक पर आश्रित है। हमारे सामने ऐसा ही होता है। 10 बजे के समय सब लोग दूसरों की दुकान के सामने आ जाते हैं। हम देखते हैं, ये नया दुकानदार कहाँ से आ गया। वह श्रावक बहुत समझदार है, अपने आँगन में खड़ा हो गया। प्रतिक्षा कर रहा है। कोई नहीं मिला फिर एक क्षुल्लक जी आ गये। अभी मुनि महाराज की बात नहीं करेंगे।

पंचमगुणस्थानवर्ती क्षुल्लक जी का पड़गाहन कर लिया। वह श्रावक क्षायिक सम्यग्दृष्टि है। इतना ही नहीं दर्शन विशुद्धि भावना के साथ सोलहकारण भावना भायी सो तीर्थंकर प्रकृति का बंध भी कर रहा है। पंचमगुणस्थानवर्ती वह श्रावक है पक्का है आगे देवगति का ही बंध करेगा। फिर नियम से तीर्थंकर होना है।

वह श्रावक अतिथी संविभाग कर रहा है। ऊसही-ऊसही नहीं कर रहा। कर्त्तव्य के साथ, अहोभाव के साथ, मेरा महाभाग्य है ऐसा मानकर उल्लासपूर्वक कर रहा है। क्षुल्लक जी के पास क्षयोपशमिक सम्यग्दर्शन है, वे उसके यहाँ आये हैं। वह श्रावक सोचता है, नहीं ये जिन लिंग है, मेरा घर छोड़ना नहीं हुआ। इन्होंने त्याग कर

दिया। अब ये जैसा चाहे, जितना चाहे, जब चाहे नहीं कर सकते। अपने घर में नहीं रह सकते। रस और रस्सी दोनों को समाप्त कर आये हैं। अब इन्हें पानी खेंचने की रस्सी की कोई आवश्यकता नहीं। कमण्डलु के पानी लेंगे। उदिष्ट का त्याग कर दिया है।

श्रावक भी कहता है, मुझे आज कोई पात्र तो मिला। अब आहार करा रहा हूँ। ये भी हो सकता है वह राजा हो। फिर भी निरालम्बी होकर, निस्पृही होकर, निरीहिता के साथ दे रहा है। क्यों राजा होना सम्भव नहीं है क्या? ये मार्गणा भी तो हो सकती है। आप लोग मार्गणा का खाता खोला करो।

क्षुल्लक जी भी सोचते हैं ये श्रावक कितना विनित है, कितनी भक्ति कर रहा है। मैं अपने जीवन में कभी ऐसे अतिथी संविभाग नहीं कर पाया। थोड़ा सोचा तो करो। मेरे पास इतना ज्ञान भी नहीं है, मैं क्या दे सकता हूँ? श्रावक अपना कर्तव्य, क्षुल्लक जी अपना कर्त्तव्य, अरिहन्त परमेष्ठी अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं। वह यह नहीं सोचेगा की मैं तीर्थंकर बनने वाला हूँ। ऐसे में तो उठो ही बैठो।

ऐसा हो सकता है या नहीं? क्यों नहीं हो सकता। यह कल्पना नहीं आगम के अनुसार है। अपने ध्यान पर कितना नियन्त्रण रख सकते हो। एक चांटा मार देगी अथवा कान मरोड़ देगी तो फिर देखो कैसे नहीं होगा। आप चिंतन नहीं कर सकते हो क्या? आज के लोगों को तो चिंता है। बस महाराज का तो फरसा के साथ एक घंटा चलना चाहिए।

क्षमता तो है पर समता नहीं है। चिंतन तो किया करो। आपने हमारे सामने माइक रख दिया, हमने ज्यों का त्यों उठाकर आपके सामने रख दिया।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

7-3-17 को प्रात: 7.00 बजे बीना बारहा से विहार

महाराजपुर, 7-3-17 "धर्म का मर्म" प्रात: 9.45

बीना बारहा क्षेत्र के चारों तरफ से कहीं से भी आते हैं और चले जाते हैं। इधर कोई गाँव पड़ेगा या नहीं पूछने की आवश्यकता नहीं। जिधर भी चलो रास्ता मिल ही जाता है। धर्मात्मा प्रतिदिन धर्म का आचरण केवल बातों से नहीं भीतर से करते हैं। धर्म का परिचय कभी भी शब्दो से नहीं दिया जा सकता, न ही दिखाया जा सकता है, अनुभव किया जाता है।

कुछ लोग सोचते हैं पूछने में क्या बाधा है। इधर-उधर की बात नहीं। धर्म का रास्ता तो सीधा ही रास्ता है। सामने वाले को आपका क्या कष्ट है, पूछते ही उसका मन प्रसन्न हो जाता है। इसी को अतिथी सत्कार बोलते हैं। आप भी जी रहे हैं, सामने वाला भी जी रहा है, पर पूछताछ करते ही आपके हाथ उसके लिए आगे बढ़ जाते हैं। इसी का नाम वात्सल्य है, इसी को साक्रिय सम्यग्दर्शन का नाम से बोलते हैं।

आज इसी की सबसे अधिक जरूरत है। लोग कर भी रहे हैं। स्वास्थ्य लाभ के बाद दवाई नहीं शक्ति बढ़ायी जाती है। अब हम शक्ति ही बढ़ा रहे हैं। बस सभी स्वाधीन हो जायें, सभी को धर्म का मर्म समझ में आ जाये। इतना ही पर्याप्त है। धर्म की व्याख्या लम्बी-चौड़ी ठिक नहीं

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

Date

रात्रि विश्राम -गुंदरई

राजमार्ग, 8-3-17 "भक्ति के साथ विवेक जरूरी" प्रातः9.40

एक ने बड़े ही मूल्य वस्तु को खरीदा। वह इतना मूल्यवान था कि मूल्य के साथ-साथ अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं होता था। उसका भी यही भाव था उसको कोई दूसरा न पहने और वही केवल पहने।

योग की बात है, उसने दर्जी को दे दिया और कहा इसकी बढ़िया से बढ़िया ड्रेस बनाकर देना है। योग्य श्रम दिया जायेगा। उसने बनाकर दे दिया। अब आप जानते हैं, वह वस्त्र था सो कुछ ही दिन में मैला हो गया। उसने उसे धो दिया। अब उसमें झुर्रियां आ गयी। जितना बना वह सिकुड़ गया। ऊपर-नीचे सब तरफ से छोटा हो गया। अब या तो वही पहनकर जाओ अथवा दूसरा बनवाओ।

अब क्या करें। वह बहुमूल्य था। उसने उसके ऊपर जाकिट पहन लिया। ऐसा ही प्रायःकरके उत्साह के साथ धन एवं समय निकालते हैं। कोई योजना बद्ध कार्यक्रम नहीं होता, फिर बाद में खाना-शर्ति होती है, चंदा-चिट्ठा होता है। लाखों की बोली भी हजारों में लेने वाला नहीं होता। अब हमें लाकर बैठा दिया चौपाल पर। यहाँ का कार्य भी सिकुड़ सा गया। दर्जी भी क्या करें।

अब किमत में मिल नहीं रहा और लगा भी नहीं पा रहे हैं। कई मन्दिरों में भी इस बारे में गड़बड़ी हो रही है। उसमें बहुत से दाग-धब्बे आदि आ जाते हैं। इससे प्रतिमा निर्विकार नहीं रह पाती। इस विषय में आप लोगों को सोचना चाहिए। योग्य पाषाण होना चाहिए। आपके मुख पर आप धब्बा

पसन्द नहीं करते तो श्री जी के आजु-बाजु भी नहीं होना चाहिए। दूसरा ये है कि कोई भी चमकने वाला पत्थर आप लगाते है तो उसका श्री जी पर प्रतिबिम्ब पड़ता है, फिर प्रतिबिम्ब का ही दर्शन करके आना पड़ता है।

दर्जी का उदाहरण हमारा याद रखीयो। सोच-विचारकर काम करना चाहिए। ऐसे दाता श्रावक और दान दोनों ही दुर्लभता से प्राप्त होते है। विवेक गुण भी होना चाहिए। भक्ति के साथ विवेक भी होना जरूरी है। श्रावक के सात गुणों में पांचवों गुण होते है। विवेक के साथ-साथ अनन्य भक्ति भी हो। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

9-3-17
रात्रिविश्राम - कुमरोडा, आहार - सरसला रात्रि विश्राम - डोंगगाँव

मेरे गांव, 10-3-17 "भटकन रोकेगा - मेरे गाँव" प्रातः 9.20

जब सागर वालों ने पुछा - अब तो आपको यहाँ मुकाम करलेना चाहिए? उससे पहले ही मैंने कहा था - "मैं प्रवासरत हूँ"। उसके बाद मैं पांव-पांव और गांव-गांव चलता हुआ आज "मेरे गांव" आ गया हूँ। आज मेरे गांव में आहार लूंगा। आप अपने-अपने गांव से आये है। आहार आप लोग देंगे लेकिन मैं अपने हाथ में (करपात्र) आहार लूंगा।

सच में जिस दिन मुझे शाश्वत "मेरे गांव" की प्राप्ति हो जायेगी फिर मेरी यात्रा बंद हो जायेगी एवं आहार की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। आप लोगों को वह मेरे गाँव मिलने वाला नहीं, क्योंकी आप पांव-पांव नहीं चलते है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

रात्रि विश्राम - बोरखेड़ा

Date

लम्हेटा 11-3-17 "जीवन का लक्ष्य - अहिंसा धर्म की उपासना" प्रातः 9.20

आज जबलपुर वाले कम दिखते हैं, शाहपुरा वाले भी कम दिखते हैं, इन दोनों नगरों में जाकर बसने वाले लम्हेटा वाले दिख रहे हैं। वहाँ जाकर अपना सब बेचा लिये हैं। यहाँ पर श्री जी रह गये हैं। पहली बार जब जबलपुर से इधर आया तो जिनालय के दर्शन हुये।

बहुत ही मनोहारी दर्शन प्रत्येक प्रतिमा को देखते रह गया। बिल्कुल नवनीत की भांति बेदाग प्रतिमाओं को पूर्वजों ने विराजमान कराया। योग की बात है, संयोग होता है फिर स्थान से स्थानान्तर जाना होता है। जब कभी भी स्थापना होती है तो अपना कार्यक्रम उसी के अनुरूप होता है किन्तु फिर आर्थिक प्राप्ति हेतु बाहर चले गये। यहाँ बुढ़े-बाढ़े भी नौकर-चाकर के भरोसे छोड़ गये।

इसी प्रकार आसाम-कलकत्ता की ओर भी बहुत से लोग गांवों से गये। वहाँ जाकर काफी तरक्की-उन्नति की, एक आध साल पर अपनी धरती पर लौटकर आते एवं फिर चले जाते हैं। पहले भी अर्थोपार्जन के लिए जाते थे पर वे लौटकर आ जाते थे। अब महाराज को निवेदन कर रहे हैं- महाराज लम्हेटा चलो ना! हमने कहा - कहाँ चलें, कोई जबलपुर की कॉलोनी है क्या? लोग आते हैं, अपनी मांग रखते हैं। सुनाते हैं तो हमें सुनना तो पड़ता है।

महाराज जमीन है। 57 एकड़ एक चक लगी है। आप लोग पहले एकता बना लो। जो भी योग्य हो उसका निर्वाह कर सको। यहाँ रहना

Date

तो है नहीं। फिर भविष्य भी होता है। जो कुछ भी करे उसमें स्थायीपन बना रहें। आना - जाना बना रहें और स्थानान्तरण करना ठिक पर जिनालय देखते हैं तो लगता है पूर्वजों ने बड़ी मेहनत करके इसे बसाया होगा।

समैया वाले भी, करैया वाले भी जबलपुर जाकर बस गये। अब दाल वाले, चावल वाले होगये। अहिंसा धर्म के पालन के लिए सब योग्य होता है। एकता के साथ इस इतने बड़े स्थान का लाभ ले सकते हैं। आपलोग सोच-समझकर बता देना, हमें भी समझ में आ जायेगा तो देख लेंगे।

अहिंसा धर्म की उपासना ही जीवन का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। इसी के माध्यम से बच्चों में संस्कार डालते हुये अंतिम श्वांस तक उनका जीवन भी इसी ओर झुका रहें, आप सभी मिलकर कुछ ऐसा ही करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

रात्रि विश्राम - शाहपुरा

शाहपुरा १२-३-१७ "मत भूलो इतिहास को" प्रातः ९:२०

हथकरघा केन्द्र का उद्घाटन

आज आप लोग रविवार के दिन आये हो। हमारा प्रवास चल रहा है। आप एक स्थान पर रहते हो। कभी - कभी आप घुमने के लिए भी निकलते हो। एक विशेष निमित्त को लेकर के आपके सामने यह कार्यक्रम आ रहा है।

युग के आदि में जब भोग भूमी का अवसान हो रहा था। भोग भूमि उसी कहते हैं, जिसमें कर्म नहीं किया जाता है। पूर्वकर्म के आधार पर साधन - सामग्री मिलती है

Date

जैसे आम चाहिए तो किसान पकाकर वहाँ भेज जाते हों। बड़े आराम से वे लोग कल्पवृक्षों के माध्यम से खाते रहते हैं एवं पहनते रहते हैं।

धीरे-धीरे उन भोगों में कमी आनेलगी। जब भोजन मिलना बंद हो गया, (ऐ बच्चों ये लास्ट बेंच करो प्रवचन सुन रहे हो या क्या कर रहे हो) तो मैं कह रहा था भूख लग रही है, प्यास भी सता रही है उस समय क्या करें? जो उस समय महापुरुष थे उनसे ज्ञात हुआ तुम्हे अब कर्म करना होगा। खेती (कृषि) करना होगा उसके अलावा भूख के निवारण का अन्य कोई उपाय नहीं है।

प्यास मिटाना है तो पानी की तलाश करना होगा। उस कृषि से कई काम हो जायेंगे ऐसा उन्होंने कहा जिसके द्वारा वस्त्र-आभूषण मिलते थे। महाराज अब कैसे होगा? देखो किसान द्वारा जो खेती होती है उसी से कपास भी पैदा होता है, उसी से वस्त्र बनाते हैं। आप सुन रहे हैं? हव। सवस्त्र धारी हो आप लोग। वह मर्यादा कहाँ से आयी सुनो!

चार गति में दो गति ऐसी जहाँ वस्त्र आवश्यक ही नहीं है। देवगति में वस्त्र अपने अनुरूप होते हैं। यहाँ मनुष्य गति में वस्त्र जरूरी है। आज भी आदि-वासी इलाकों में वस्त्र आवश्यक नहीं किन्तु वे लोग भी बल्कल, छाल अथवा पत्तों का वस्त्र के रूप में उपयोग करते हैं। तिर्यन्चों में वस्त्र का उपयोग नहीं/मर्यादा नहीं इसलिए सबसे नीचे की गति मानी जाती है। नरक में तो सब कुछ इसी में होता है, वस्त्र आदि कुछ नहीं वहाँ पर। मनुष्यों में इसकी अनिवार्यता है, जो आर्य या मनु माने जाते हैं। कपास के उत्पादन से वस्त्रों का उत्पादन किया

जाता था। आज इतिहास छुपाया जा रहा है। सुनते हैं पहले यंत्रो से वस्त्रों का उत्पादन नहीं हथकरघा से ही उत्पादन होता था। आठ वर्ष (साल) तक वस्त्र नहीं तो भी चल जायेगा उससे आगे शील की रक्षा के लिए वस्त्र अनिवार्य है।

विवाह हो गया तो भी वस्त्र अनिवार्य है केवल लज्जा ढकने के लिए नहीं शील की भी रक्षा इसी से होती है। नंग तांडव नृत्य हो रहा है, नंगा नाच बोलते हैं इसे। शील की रक्षा के लिए विदेश से जो भी पहनावा आता है वह सब आप लोग देख ही रहे हो। वह सारा नृत्य अब आपके घर में ही हो रहा है। भारतवासीयों! आँख खोलने की जरूरत है। विदेश में तो चल जायेगा आदिवासीयों जैसी संस्कृति बोलते हैं, किन्तु यहाँ नहीं चलेगा।

जब मैं छोटा था स्कूल जाता था उस समय के और आज के पहनावे में तो जमीन-आसमान का अन्तर आता जा रहा है। पहनावे के बिना शील का पालन नहीं होगा। सारा का सारा जीवन लुप्त हो रहा है। आज हर चीज के लिये विदेश पर निर्भर होना पड़ रहा है। दुर्भाग्य है भारत का। आँख खुली है तो बताना भी अनिवार्य होता है।

इतिहास पढ़िये अन्यथा सब भूल जाओगे। णमोकार मंत्र भी याद नहीं रख पा रहे हैं। ग्यारह किसको बोलते हैं? उन्नीस किसको? कुछ नहीं बता पायेंगे। फिर ऐसा बच्चा माँ से बोलेगा-कपड़े? प्रतिभास्थली वालों ने एक घटना (फिल्म) बनायी है। आज कम्प्युटर के युग में एक बच्चे के सामने अंधकार में लपटा थान रखा और पूछा ये क्या है। वह कैसे बता पायेगा क्यों की अब तो

Date

जिनवाणी भी कम्प्युटर में आ गयी है। दिमाग गया। दिमाग कहाँ गया ? इसको विकास मान रहे हो अथवा यह विनाश की ओर जा रहे हो।

अभी आप लोगों को गाय के वेस्ट मेटेरियल (खाद आदि) से बने उत्पाद अगबत्ती, धाम, फिनाइल आदि बताये गये। ये सारे के सारे खत्म कर दिये गये है। वे लोग मेरे से नाम पूछने लगे, मैं क्या नाम रखूं बता दिया - "गौ रव गाथा" गौ यानि गाय, रव अर्थात रंभाना। सुना था यही है "गौ-रव गाथा"।

ददा घर में है पर उनको पहचान नहीं पा रहे हैं। सभी प्रकार से खान-पान, आचार-विचार, शील-लज्जा सभी समाप्त हो जायेगा। आपकी दया होगी हमारे ऊपर नहीं, अपने ऊपर। आगे कौनसा जमाना होगा मैं नहीं कह सकता हूँ। उस समय गाय पालन होता था इसी के माध्यम से अन्नआदि का उत्पादन तथा वस्त्र आदि का निर्माण सभी यहीं पर होता था। आज प्रत्येक वस्तु के लिए विदेश पर निर्भर हो गये है।

सभी नौकरी की तरफ भाग रहे हैं। हमसे आकर कहते हैं. महाराज आशिर्वाद दे दो किसी बड़ी कम्पनी में काम मिल जाये। अब इन लोगों को समझ में आने लगा बड़ी-बड़ी सीढियों से वापस आ रहे है और कहते हैं महाराज उस कष्ट को भूल जाये ऐसा आशिर्वाद दे दो। लाखों रुपयें के पैकेज वालों के भी आँखो में पानी है, क्यों की यह जीवनोपयोगी नहीं है।

आपके यहीं शत्रुघ्न का एक

Date

लड़का जो C.A. करने जा रहा था। C.A. का मतलब जानते हो? मैं तो C.A. का मतलब See A-1 मानता हूँ। पढ़कर नहीं सुनकर अर्थ निकालो।

इसे A-1 कहते हैं। तीन तरह की तुलना होती है Good, better, best। Good से ऊपर better एवं better से ऊपर Best होता है किन्तु A-1 तो Best से भी ऊपर होता है। भारत A-1 था। See - अब इसको देखो। इतिहास की आँखों से देखो और दादी की कहानी से सुनो। बेटा! ये अपना इतिहास था। कहानी-किस्सों के माध्यम से ही अब वापस लौट सकते हो और अपने आप को संभाल सकते हो।

मान लो आप बाजार में जा रहे हो और सब हंस रहे हो तो आप अपने को देखते हैं। अरे! दो बटन ऊपर लगा दिये हैं। आज आप लोग इसी तरह हँसी के पात्र बन रहें हैं। इसे गलत नहीं फैशन मान रहे हो। यह अनुकरण ठीक नहीं है। भारत में ऐसे-ऐसे पहनावे थे जो आज भी प्राचीन दिवारों की चित्रकारी में देखने को मिलता है। उसको देखने से लगता है उसमें क्या हाव-भाव रहता है।

वो सब अब देखने को नहीं मिल रहा, अब तो अशान्ति का ताण्डव नृत्य देख रहे हो। यहाँ का जो लड़का है उसका नाम जानते हो? रौनक नाम है। रोको नहीं' क यानि करो। पिताजी की अनुमति के बिना कुछ नहीं' कर सकता था, पिताजी C.A. ही बनाना चाहते थे। मन में सब कुछ छोड़-छाड़ने की भावना है। फिर पिताजी ने अनुमती दे दी जो करना है कर लो। बस हमारे पास छह महिने का पाठ्यक्रम है, इसमें शामिल हो जाओ। चाहे कुण्डलपुर अथवा बीना बारहा। हाँ, पुरा

Date

करने में ही आनंद आयेगा, बीच में छोड़ना नहीं। आज वह स्वयं हथकरघा यहाँ शुरू कर रहा है। जबलपुर में भी चल रहा है। वह स्वयं - रौनक थोड़ी रौनक तो दिखादो लक्ष्मी अपनी।

उसने संकल्प कर रखा है महाराज मैं स्वयं हजारों को लगाऊँगा। माता - पिता भी हम 108 हथकरघा चलायेंगे। बच्चों को अब समझ में आ रहा है। हमारे निमित्त से भी यदि समझ में आता है तो अच्छा है। दूसरों के दिखाने से दिशा नहीं दिखती। ऊपर आसमान भी है नीचे दिशा नहीं। आज दिन के 12 बजे भी तारे दिख रहे हैं।

अच्छे अच्छे पढ़े-लिखे बच्चे भी डिप्रेशर हो रहे हैं। उच्च पदाधिकारी को भी यह कहना पड़ रहा है आज 80% से भी अधिक इन्जिनियर किसी के काम के नहीं। लोन लेकर पढ़ाया जा रहा। माता - पिता में लोन चुकाने की क्षमता नहीं और बच्चों में तो है ही नहीं। "अनुभव के अभाव में शिक्षा का कोई महत्त्व नहीं है।" ऐसे भोले-भाले बच्चे अकेले मध्यप्रदेश में ही लाखों हैं वे मात्र चार-छह हजार की नौकरी के लिए आवेदन कर रहे हैं।

इनमें स्नातक ही नहीं स्नातकोत्तर भी हैं, PHd वाले भी हैं और इंजीनियर तो भरमार हैं। महाराज आप आशीर्वाद दे दें। मैं ऐसे आवेदन के लिए आशीर्वाद नहीं, संवेदन के लिए आशीर्वाद दे सकता हूँ। ध्यान रखो संवेदन के बिना सुख-शान्ति नहीं। आज ऐसा ही कार्य करने जा रहे हो। माता - पिता भी बच्चों को उधर ही भेजना चाहते हैं। मेरा बेटा अच्छी नौकरी करे। अब क्या कहूँ - आज डॉक्टर बन जाते हैं - कैसा

प्रमाण पत्र मिल जाता है। चिकित्सा-आप जानते ही हो, क्या हो रहा है!

बच्चों को तैयार करो। उन्हें ऐसा विश्वास दिलाओ कि एक किसान स्वदेश ही क्या विदेश भी तृप्त हो जाता है। विदेशी बीज हाइब्रीड के नाम से आप खा रहे हो - जी रहे हो। मण्डी में मुझे बुला लाए, अब मैं क्या बोलूं। वह सब्जी मंडी में लगा किसान अच्छा है। बनिया वैसा नहीं कर सकता है। यहाँ का उत्पादन इतिहास में अलग ही था। एक नमूना मात्र बता रहा हूं।

भारत में आजादी के समय एक एकड़ में 56 क्विंटल उत्पादन होता था जो वर्तमान में 36 रह गया। विदेश कहता है भारत में कृषि थी ही कहाँ? यह बिल्कुल गलत बात है। आज युरिया डालकर राख बनाया जा रहा है। पहले गोबर डालकर उपजाऊ बनाते थे। युरिया ने पुरी मिट्टी की उर्वरा शक्ति को खत्म कर दिया है अब एक साल भी नहीं डालो तो कुछ भी नहीं पा सकते हैं।

"गोबर डालो, मिट्टी से सोना पा लो, युरिया राख"

आप लोग मण्डी में बैठे हो, गौ-शाला वाले भी आये हैं। महासंघ (मुनि महाराज) भी बैठे हैं। महाराज थोड़ा सा आशीर्वाद दे दो। अरे! थोड़ा क्यों मांगते हो? हमारा तो पुरा आशीर्वाद है। जिसके द्वारा पशुओं का संरक्षण होता हो। आज गौवंश कटता जा रहा है। तेल के लिए अविवेकपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं।

हमारी मर्यादा है अतः उस मर्यादा में ही कहना पड़ता है। मर्यादा भंग हो तो मर्यादा तोड़कर भी बोलना पड़ता है। क्योंकि यह कार्य नहीं करना चाहिये माता-पिता कहते हैं। अब

Date

डंडे से मार तो नहीं रहे हैं पर वह वही कार्य कर रहा है तो फिर डंडे पड़ेंगे ही। उसे ध्यान में आ जाये की हमारी गलती हो रही है।

हर क्षेत्र में भारत की उन सभी गलतीयों को दूर करने के लिए कमरकस कर खड़े हो जायें। योग से आज नेता लोग भी ऐसा कर रहे हैं, करना चाहिए। (तालियाँ) अभी वाक्य पूर्ण ही नहीं हुआ। अब भ्रष्टाचार को मैं दो ग्यारह करना है। 5-2-11 का अर्थ है समाप्त करना है। हर प्रकार से सभी बुराइयों को दूर करना है। कल शनिवार चतुर्दशी थी अमृतसिद्धि योग था। आज मण्डी में यह कार्यक्रम हुआ, उस लड़के ने खड़े होकर संकल्प कर लिया। कल लम्हेटा में भी बात रखी एवं काम भी हुआ।

हमने कहा भगवान का मन्दिर है। पहले भी दो-तीन बार दर्शन किये थे। पूर्वजो ने क्या-क्या सोचा होगा। वहाँ के लोगो ने कहा- ये 20 एकड़ जमीन आप ही लो। और किसान बन जाओ। रखवाली बन जाओ। जो आप कहो वैसे ही करने को तैयार है। जहाँ लगाना चाहते हो वहाँ तैयार है। हमने सोचा यहाँ गाँव है, जो युवा लड़के है उन्हें हथकरघा के माध्यम से प्रशिक्षण दिलवाओ। प्रतिदिन 500-600 रु. एक महिने में 30,000 रु. तक भी कमा सकते है। इस ओर आप देखें यह अहिंसक है एवं स्वास्थ्य है। साथ ही इतिहास का साक्षी है।

कोर्ट आदि में साक्ष्य देना होता है किन्तु यहाँ तो इतिहास का यही साक्षी है। कभी भी वह भूखा नहीं रह सकता है। एक-एक गाँव में केन्द्र स्थापित होते जायेंगे। ये सात्विक-स्वास्थ्य एवं

स्वालम्बन कार्य है। अपनी मर्यादा को सुरक्षित रखने वाला है।

मैं आप सभी से पूछना चाहता हूँ आप विदेशी कपड़ा पहने हो। चल रहे हो और ठोकर खाकर गिर गये। लहू-लुहान हो गये। अब उस पर पट्टी कौनसे कपड़े की बांधोगे? विदेशी कपड़े से तो घाव और बढ़ जायेगा, हथकरघा के कपड़े से ही उस पर पट्टी बांधेंगे।

"मरहम पट्टी बांधकर, व्रण का कर उपचार,
इतना यदि ना कर सके, डंडा तो मत मार।"

ऐसा आपको सोचना है। आज सुबह-सुबह त्रिकाल चौबीसी की बात कर रहे थे, ये बताओ भगवान का प्रक्षाल किससे करोगे? पहनावे में भी दोष। खाने-पीने में भी दोष। पूजा-अभिषेक में भी दोष। जिनवाणी के लिए भी हथकरघा का ही आधार (कपड़ा) हो, उसी में लपेटकर कर ही जिनवाणी रखेंगे।

लम्हेटा वालो! छान कर ही पानी काम में लेते हैं पर छन्ना किस कपड़े का होगा? बुंदेलखण्ड की पहचान है डोर-लोटा और कंधे पर गमछा। आज ये सब नहीं हाथ में घड़ी बांध रखी है। छानना ही नहीं अब तो दुनिया की राख छान रहे हैं। ये सब बातें ध्यान में रखनी होगी अन्यथा निर्दोष नहीं रह सकेंगे। इस प्रकार जिनवाणी का आधार, अभिषेक का छन्ना, चिकित्सा आदि में भी वही पट्टी काम में आयेगी। ये सब अब बच्चों की समझ में आ गया है। अब तो अभियान सा चालू हो गया है।

हमारे पास ५० से भी अधिक बच्चे जिनमें एम.बी.ए. भी हैं, प्रबंधन वाले भी हैं। मात्र छह महीने के अन्दर ही १५ हजार कमाने के योग्य हो गये तथा अन्य को भी खड़ा कर रहे हैं।

आत्म-विश्वास के साथ कह रहे हैं। मात्र १५-१६ साल की उम्र के बच्चे भी अच्छे ढंग से कर रहे हैं। यहाँ (शाहपुरा) के ३-४ बच्चे हैं। सभी इस कार्य को सीख चुके हैं। अपने ही हाथ से बने वस्त्र पहने हैं। इसी प्रकार बालिकाओं में भी यह कार्यक्रम चालू हो गया है।

यहाँ अभी आपके सामने जो रौनक ने हथकरघा के कपड़े के माध्यम से बनी पेन्ट दिखायी। "जिन्स" बोलते हैं। बच्चों को बहुत प्यारी लगती है यह जिन्स किन्तु इसमें शुद्धता/अहिंसा का भी ध्यान रखें। अहिंसा की उपासना में जो कारण हो ऐसा वस्त्र पहने। जो कमजोर को बलजोर बनाने में सहायक हो, अहिंसा की पुष्टि होती हो उसके उपदेश देने में बाधा नहीं है।

इसी में वात्सल्य-स्थितिकरण-प्रभावना अंग भी है। यही सक्रिय सम्यग्दर्शन कहलाती है। हमारा पूरा आशीर्वाद है। इसी प्रकार से दयोदय महासंघ के लिए भी आशीर्वाद है। सार्थक हो गया मण्डी का यह कार्यक्रम। स्वास्थ्य भर गया है। लम्हेरा के लिए भी ७० एकड़ जमीन इसके अतिरिक्त भवन, १०-१५ लाख भी वहीं खर्च करेंगे। वह राशि लड़कों के प्रशिक्षण, एवं अहिंसक सात्त्विक बनायेंगे। शुद्ध अहिंसा को कहाँ तक लम्हेरा वाले काम करते हैं। देखो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Date

रात्रि विश्राम - रावतपुरा सरकार कॉलेज

दयोदय - तिलवारा घाट - प्रतिभा स्थली

13-3-17 "खुशी के पल लगते छोटे" प्रात: 9.45

आज चैत्र बदी एकम् होली का दूसरा दिन है। अभी न आईयो महाराज, वहाँ के लोग कह रहे थे। आज देखा दहन होली नहीं रंगपंचमी गुलाल उड़ रही है। आप लोगो ने सोचा होगा। अभी आ रहा हूँ, वहाँ सब जगह एक ही बात कहता आ रहा हूँ कि "हमारा प्रवास चल रहा है"। क्या पता रंग पंचमी तक रुकेंगे कि नहीं अतः आज ही रंगपंचमी मना ली। एक ही दिन में सब मना लिया।

आनंद एवं खुशी के दिनों में युग भी सिकुड़ जाता है। इसमें कोई सवाल नहीं उठता। आज विहार करते हुये प्रतिभा स्थली आना हुआ। कल नहीं परसों चतुर्दशी मना ली थी और शेष प्रवास को पूरा करते हुये यहाँ तक आये हैं।

विज्ञान का युग है। काल एवं क्षेत्र दोनों कुछ भी शेष नहीं रहे। क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है और काल की आवश्यकता ही नहीं। आइन्सटीन के अनुसार वह काल शून्य तक सिकुड़ जाता है। जैन सिद्धान्त इसे नहीं मानता है। हमारा क्षेत्र इतना कि काल भी सिकुड़ जाता है। आज विज्ञान के युग में सब भूल गये हैं। काल का प्रभाव पड़ रहा है। सब हल्दी की भाँति थोड़ी सी धूप में वह काल निकल जाये, इन्हीं भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। मैं

Date

"मत भूलो अनिवार्य प्रश्न"

13-3-17 मध्याह्न 3.30

यह कहा जाता है इतने पास आ गये कम से कम दर्शन तो दे दो। तो सामायिक के उपरान्त दे दिया। आप लोग कितनी देर दर्शन करना चाहते हो? कुछ उसकी सीमा तो बना दो। अच्छा अब ये बता दो भगवान के पास एक घण्टा बैठते हो कभी? दर्शन करना चाहते हो तो दर्शन कर लो।

जिस प्रकार आप दर्शन करना चाहते हो उसी प्रकार जो दूर से आये हैं, वे भी दर्शन करना चाहते हैं। इस बात को आप भूल जाते हो। छोटे-छोटे बच्चे अथवा महिलायें हैं, वे दर्शन कर ही नहीं पाती। कुछ ही लोग दर्शन करते हैं और खड़े हो जाते हैं। आप लोग हमारे पुराने ग्राहक होने के कारण कहता हूँ कि हमारे नये ग्राहकों को भी बांधा करो। इसलिये आप लोगों को जैसे रसोई तैयार होती है तो छोटे-बच्चों को सर्वप्रथम भोजन-पान आदि करा देते हैं, इसी प्रकार जो नये मेहमान आये हैं, उन्हें पहले दर्शन कराना चाहिए।

इसी प्रकार चौके का हाल होता है। चौके में यदि कोई महाराज भी खड़े हैं-सब भूल जाते हो। बस-एक ग्रास देना है सभी बोलते हैं किन्तु व्यवस्था में तो गड़बड़ी होती है। विवेक से ही प्रत्येक तैयारी की जाती है। विवेक नहीं तो कुछ नहीं मिलेगा। परीक्षा देने बैठ जाते हैं। बहुत अच्छा उत्तर लिखा किन्तु जिसे अनिवार्य लिखना था, उसे भूल गये। इसलिए नीचे लिखा होता है, सावधान! कौनसा प्रश्न अनिवार्य रूप से हल करना है। विवेक के अभाव में अनिवार्य को ही छोड़कर आ रहे हैं।

ऐसे में अब क्या शुभमार्क करें। दक्षिण में जाँचने को मार्क कहते हैं। शुभ तो है ही नहीं। मार्क क्या दें। सब लोग अपना

Date

अपना नम्बर लगाये हुये हैं किन्तु ये देख लें कि कितने गुणों का विकास किया गया है। उसी के ऊपर हम आपको अगली कक्षा में आगे बढ़ा सकते हैं।

शिक्षा-पद्धति में भी ऐसा ही होता है। आज भी कक्षा को पास नहीं कर पाये तो माता-पिता डाँटेंगे नहीं किन्तु यदि आपके नम्बर कम होंगे तो कम क्यों आये और ज्यादा होंगे तो ज्यादा कहेंगे। अभी सुबह एक छात्रा ने बहुत ही अच्छा गीत गाया था। उसी के बारे में कहना चाहता हूँ। उसमें पंक्ति थी...आप कभी रुलाना नहीं। ये तो कोई बात नहीं हुयी। हँसने की मात्रा एवं रोने की मात्रा दोनों निश्चित हैं। आगम में हमारे यहाँ साता और असाता दोनों की मात्रा निर्धारित है।

उसी प्रकार रोना ज्यादा होता है, हँसना कम होता है। अतः हम मात्रा के बाहर हँसते नहीं। पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। साता का महत्व भी उसी को समझ में आता है, जिसे असाता का ज्ञान होता है। महिने भी साता रह जाये किन्तु एक सेकेण्ड भी असाता का उदय आ जाये तो सुख कहाँ चला गया पता तक नहीं लगता। उसी प्रकार विकास की दर भी तभी मालुम पड़ती है, जब पेपर हो जाते हैं। दुनिया भी तभी, माता-पिता भी तभी खुश होते हैं। केवल लाड़-प्यार की ही बात नहीं करते।

इतना अवश्य है कि वह अखरता नहीं, झेलते चले जाते हैं। आप लोग झेल रहे हैं न। बच्चे-नहीं, शिक्षिका और छात्रा कोई भी घर नहीं जाना चाहता। छात्राओं के कारण शिक्षिका है और शिक्षिकाओं के कारण छात्रा हैं, फिर भी आप लोगों को घर भेजना पड़ता है। वह जाने

के लिए तैयार नहीं हैं। खाने-पीने, उठने-बैठने, मनोरंजन आदि सब बड़े शिक्षिकाओं की निगरानी में रहना पड़ता है। समझ में आ गया। इतना तो माता-पिता भी नहीं कर सकते हैं।

इससे स्पष्ट हो गया। एक-दो वर्ष पूर्व कहा था। देखो- भाषा के विषय में सोचना है। पहले से ही हमारे दिमाग में शिक्षा अलग वस्तु है और भाषा अलग वस्तु है। भाषा केवल माध्यम हुआ करता है। भाव मुख्य है, विषय मुख्य है। किस भाषा में सिखाया जाय यह महत्वपूर्ण नहीं कौनसे विषय को सीखाना/पढ़ाना है यह महत्वपूर्ण है।

बच्चे बहुत जल्दी ग्रहण कर लेते हैं, यदि विदेशी भाषा में सीखा दिया जाये मान लो 6-7 वर्ष की वह बालिका है तो अर्थ गाम्भीर्य उसके दिमाग में नहीं आता। यदि बता भी दिया तो वह रह भी नहीं सकता है। आप भी नहीं कर सकते। आप लोग अपने भावों के माध्यम से उसे विषय-वस्तु का परिचय कराओ और उसी की भाषा में कराओ। उसका लाभ क्या है ये मैं बता रहा हूँ। इससे अपनी भाषा में प्रौढ़ता आयेगी।

English पढ़ाओ, लेकिन उसको माध्यम बनाना ठिक नहीं होगा। जिस माँ के पास रहकर उसने सीखा है, इस ओर भी दृष्टि रखो। कोई भी शब्द सीखते हैं, उससे पूर्व उच्चारण की ओर दृष्टि जाती है। उच्चारण कर नहीं पाता वह नीचे चला जाता है, उसके परिणाम ठिक नहीं। इसलिए भाषा के माध्यम के इस मर्म को समझना अनिवार्य है। जिस प्रान्त में रह रहे हो, उसी भाषा को माध्यम बनाओ। कर्नाटक में कन्नड़, महाराष्ट्र में मराठी लगभग 10 प्रान्त ऐसे हैं जो हिन्दी भाषित हैं। उसी के माध्यम

से वह जो भी करना चाहते हैं वह करें। इन 10 प्रान्तों में जो काम हिन्दी से कर सकते हैं वह English से नहीं कर सकते।

12वीं कक्षा तक तो आप अपने बच्चों को इसी माध्यम से शिक्षा दे सकते हैं। 4 से 12 कक्षा लगभग 9 वर्ष का अध्ययन। फिर आगे का भी? हाँ! 9 वर्ष को तीन से गुणा करो अर्थात 27 वर्ष का अध्ययन आपकी बच्ची कर चुकी है। वह कैसे? तो चौबीसों घण्टे उन्हें सीखाया जाता है। अन्य - अन्य शिक्षा भी उन्हें दी जाती है।

"जिन्दगी बनाने के लिए अपने बच्चों पर जिन्दगी लगाना पड़ता है।" पहले पुरुष दुकान या नौकरी करता था तो महिला बच्चों को देखती थी किन्तु आज दोनों नौकरी करने वाले होते हैं। थके-हारे आकर सो जाते हैं। इसलिये ये स्थिति बन गयी है। इसीलिए हमने भाषा के इस माध्यम को चुना। भीतर से कई लोगों के उस समय क्या-क्या भाव रहे हो पता नहीं। उन्हें चिंता थी भरती कैसे होगी? भरने योग्य हो तो जरूर भर्ती होगी। एक भरता होता है। सागसब्जी, ककड़ी-टमाटर-मिर्च आदि का भरता, उसका पेट फाड़कर उसमें ऐसा स्थान रखते हैं।

सुना था बारवीं तक वह छात्रा भरती होती है, बाद में कुछ भी डालने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। जो कुछ भी तैयार होना है, तैयार हो जाते हैं। हमने पूछा-भरती हो रही है या नहीं। हमारे विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम नहीं है। माता-पिता कहते हैं हमें भाषा से मतलब नहीं, हमें तो बच्चों को संस्कारित करना है - ये उत्तर हैं उन अभिभावकों का

इसलिए मैं कह रहा था हम लाड़-प्यार करेंगे तो नहीं, कान पकड़ने से ज्यादा ठिक रहेगे।

कान पकड़ने से मतलब है कान में पॉइन्ट रहते हैं। ज्ञान सम्पन्न बनाना चाहते है तो बोलो क्या करना चाहते हैं। छात्राओं के सामने नहीं तुम लोगों के सामने बोल सकते हैं। केवल लाड़-प्यार से ही नहीं, कान पकड़ना जरूरी है। उनके भीतर छीपी प्रतिभा को उभारने के लिए यह आवश्यक है। बच्चों को अपने कान जो अच्छी प्रतिभा वाले है, उनके हाथ में दे देना चाहिए। जिससे उनको जहाँ दबाना है, वहाँ दबा सके। ये हमने गुरुजी के मुख से सुना था।

कान के यहाँ जो पॉइन्ट है उसे दबा सके। अभी जब माइक शुरु हुआ तब आवाज नहीं फिर पॉइन्ट सही दबाया तो आवाज ठिक हो गयी, नहीं तो सुनाई ही नहीं दे रहा था। लेकिन ज्यादा पॉइन्ट दबाने की प्रक्रिया ठिक नहीं। अभिभावकों को समझना चाहिए। इसी तरह बच्चों को भी बुरा नहीं मानना चाहिए। इसलिए हम रुलाना नहीं चाहते। रोना पड़ता है - ये बात अलग हैं। इससे पूर्व भी हमने लम्बा समय दिया था।

प्रतिभा सम्पन्न वालों से सब ठिक करा लेना चाहिए। जब कान में कुण्डल पहन लेते हैं तो कान के पल्लव को वह हिलाता रहता है। पुरे मस्तिष्क से संबंध रहता है, बुद्धि बढ़ती है। आपलोगों को बुद्धि चाहिए न? हाँ। केवल नारीयल चढ़ाने से नहीं अपितु अपना नारियल शिक्षिकाओं के हाथ में दे दो। वे बता देंगी कि कितना

पानी है। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। आपकी कॉपी प्रतिक्षा को कम कर दिया है हमने। अब नहीं कहना - ज्यादा नहीं रुलाना। ज्यादा हँसते रहना भी ठिक नहीं। चिंतन प्रौढ़ नहीं बन सकता अतः गम्भीर बनना जरुरी है। आप सभी भी (अभिभावक) यही कहें कि इन्हें जो भी हौवा - हाकी करना चाहो कर लो, बस आप उन्हें अच्छे से संस्कारित करें।

उत्तर नहीं चाहिए कार्य करके दिखाओ तो जानेंगे। गर्मीयों के दिनों में जाते है घर पर उसमें भी अपने अनुसार पुरुषार्थ करते है। छात्राओं को ही नहीं कह रहे। वह आज की छात्रा आगे की शिक्षिका है। वह मोहल्ले भर में भी अपनी शिक्षा देती रहेगी। सभी स्व एवं पर का कल्याण करती रहेगी, इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

14-3-17 "उलझनों को सुलझाता है सूत्र" प्रातः 9-20

"द्रव्याधिकादि गुणानां तु" एक सूत्र आता है। जैन साहित्य का एक सूत्र माना जाता है। आज विज्ञान का बोलबाला मानते है आप लोग। उलझनो को सुलझाने वाला बहुत बड़ा सूत्र है, जिसके माध्यम से आप अपनी उलझनों को सुलझाते हुये चले जायें। सदैव इस बात का ध्यान रखना - सूत्र भर आपके हाथ में रहे फिर पतंग आसमान में हवा के माध्यम से कितनी भी दूर क्यों न चली जाये। वह बालक उसी में मग्न रहता है, भोजन भी नहीं करता और यदि सूत्र से सम्पर्क टूट जाता है तो वह बालक हैरान हो जाता है। अब तो गयी -2। न जाने कहाँ गिरेगी।

इस प्रकार सूत्र एक क्रान्ति लाने वाला

Date

होता है। जघन्य गुणों के निषेध को कथन करने वाला भी एक सूत्र आता है - "न जघन्य गुणानां"।

तत्त्वार्थ सूत्र का यह पंचम अध्याय विज्ञान को खोलने वाला है। इस अध्याय में जैनत्व नहीं पर विज्ञान के समाधान भरपुर हैं। दुध दो प्रकार का होता है। एक गाय का दुध - हजम नहीं हो तो थोड़ा सा पानी मिला दो। यदि लीवर कमजोर हो तो पानी मिलाते हैं तथा जठराग्नि तेज हो तो पानी सुखाकर खोवा बना देते हैं। हम सीधे - सीधे समझा रहे हैं। ज्यादा समय नहीं। हमारे पास तो है ही नहीं, आपके पास भी समय नहीं।

परसों एवं कल से आज भीड़ ज्यादा है। यह चमत्कार मंगलवार का है। अब इस दुध में पानी क्यों मिलायें। ये भी दुध - ये भी दुध है। अकौवा का दुध मिला दिया, जिससे दुध फट गया। अतः जिसके माध्यम से गुणों का विकास नहीं होता है। खास होता है उस विज्ञान को हम दूर से ही किनारे कर देते हैं। वर्तमान में ऐसे ही विज्ञान का विकास हो रहा है। गुण सदृश भी नहीं, जघन्य भी नहीं तभी वरदान सिद्ध होता है।

युवा लोग विज्ञान की उपासना कोपी कर रहे हैं, अब ज्ञात हो रहा है कि हम गलत कर गये। एक साधक कारण होता है जो साध्य को प्राप्त कराता है, एक बाधक कारण होता है, वह विपरित दिशा में ले जाता है। हर बात में हम मात्र साधक की ही ओर दृष्टि रखते हैं। पर बाधक को न देखने से वह हितकारी नहीं अहितकारी ही होता है। यदि सूत्र हाथ लगता है तो उस ओर काम बढ़ा सकते

Date

है।

आज कुछ युवा आये आपके सामने (गौरव गाथा वाले) कहने से कुछ नहीं, कुछ ही दिनों में उन्होंने करके दिखा दिया। अभी उनके उत्पादनों को देखकर एवं सुनकर आप भी जरूर प्रभावित हुये होंगे। पहले निर्यात करते थे उसे ही अब हमारे देश में बहुत प्रकार के ईंधन भी इसी से तथा अनेक प्रकार के उत्पादनों का निर्माण करने लगे हैं। अतः

"संधान साधो - अतिसंधान - अनुसंधान नहीं"

संधान और अनुसंधान महत्त्वपूर्ण है। ये तीन पंक्ति है। मात्र 16-17 अक्षर है ज्यादा नहीं। संधान - संधान - संधान तीन बार दिया है। तीनों में भिन्न - भिन्न अर्थ निकलते हैं। ये ही सूत्र कहलाता है। आज आप सूत्र छोड़कर व्याख्या की ओर जा रहे हो। मेरा आप सभी से यही कहना है कि कम समय में भी बहुत कुछ परिवर्तन ला सकते हो।

विदेश में बटर बनता है, हमारे यहाँ घी बनता है। बटर मादक तत्त्व माना जाता है, अशुद्ध है एवं सेवन योग्य नहीं। अनेक प्रकार के जीवों की उत्पत्ति हो जाती है, किन्तु उसी बटर को नवनीत की अवस्था में ही तपा लेते हैं तो शुद्ध होता है, मादकता नहीं अपितु औषधी तत्त्व आ जाते हैं। इन सब बातों का आपके पास समय नहीं। न विज्ञान का ज्ञान है न ही इतिहास का।

हमने पूछा बटर किसे कहते हैं। इधर घी को घी नहीं घृत बोलते हैं। घृत से ही घी बनता है। ऋ का दीर्घ ई बनकर घी हो गया। वहाँ विदेश

मे उसको ऑयल घोषित कर दिया। हमारे यहाँ ऑयल नहीं घी स्वीकारा है। ऑयल तो अनेक फल-फूलों भी निकाल सकते हैं पर घी में ऐसा नहीं। वह घी सात परतों को भी पारकरने की क्षमता रखता है। यह क्षमता तेल में नहीं सिर्फ घी में है।

वह कोई सा भी रोग हो उसको कान पकड़कर बाहर निकाल देता है। यह काम घी ही कर सकता है। इसमें स्निग्धता होती है। आप लोग देशी घी नहीं विदेशी घी खाते हैं। आपकी रसोयी में ये बात समझ में नहीं आती। मात्र बासही नहीं आ रही है, ये देख लो इसमें सुगन्धी फूट रही है। एक में खुशबु, एक में बदबु आ रही है। आप लोग क्या पसन्द करेंगे खुशबु या बदबु। (सभी बच्चे - खुशबु)

खुशबु बाद में पहले खुश हो जाओ। खुश हो जाओगे तो खुशबु तो अपने आप ही आ जायेगी। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। मंगल की खुराक मिल गयी आपको, क्योंकी मैं बहुत कम में आप लोगो को खुश करना चाहता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नें

गाथा- ग्यारीधार — शास्त्र विश्राम- तिहरी

Note-

" मडया में ईर्यापथ में आ० श्री ने कहा कुछ लोग ऐसे जिन्हें केशलोंच के लिए सोचना नहीं पड़ता। (हमारी ओर इशारा करते हुये) जैसा-तैसा हो या विहार हो वे तो कभी भी तैयार रहते हैं। urgent में भी कर लेते हैं। "

Date

बरेला, 15-3-17 "मानव धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं" प्रातः 9.40

सुनो! क्या करें प्रायः करके जनता की ये धारणा है कि जैन लोग प्रायः करके अपने तक ही सीमित रहते हैं, यद्यपि समाज का यह दृष्टिकोण नहीं है। यह अवधारणा है। उस अवधारणा को निर्मूल करने एवं सक्रिय सम्यग्दर्शन का यह एक प्रयोग है।

"जैन धर्म अलग से नहीं, मानव धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं।" उसी का नाम दया धर्म है, उसी का नाम वात्सल्य धर्म है। एक-दुसरे के पूरक बनकर यह काम किया जाता है। आज लोकतंत्र का जमाना है। प्रजा द्वारा योग्य राजा का चयन करके वहाँ तक पहुँचाया जाता है। दो-तीन दिन पूर्व ऐसा ही आपने भी सुना होगा। (उ.प्र. आदि चार राज्यों के चुनाव)

आप सभी ने देखा होगा अभी तक जो भी राजनैतिक दल हो उनकी सभी धारणा को निर्मूल कर दिया। और जनता के सामने अहिंसा का श्रीगणेश हो गया। मांस निर्यात किसी भी देश की संस्कृति में नहीं है। मांस खाना या मांसाहार का त्याग अलग बात है किन्तु मांस का निर्यात करना यह संस्कृति नहीं अपितु उस देश की दुर्बलता है।

उत्तरांचल के पद पर आसीन होते ही मांस निर्यात बंद किया जायेगा साथ ही अवैध कत्लखाने जो चल रहे है उनको भी बंद किया जायेगा। जिनके पास लाइसेन्स नहीं वे सभी हटा दिये जायेंगे, ऐसी घोषणा की है सरकार ने। मांस का उपयोग नहीं किया जाता है, पशुओं का उपयोग किया जाता है। सरकार भी इसी दिशा में कामकरने

Date

जा रही है। इसी प्रकार दोनों हाथों से रोजी-रोटी के लिए हथकरघा की शुरुआत हो रही है।

कृषि के उपरान्त दूसरा रोजगार का साधन है यह हथकरघा। एक हाथ कृषि करने हेतु तो एक हाथ हथकरघा हेतु मिला है। जब से यह हथकरघा समाप्त हुआ है तभी से भारत अवनति की ओर जा रहा है। अब दूसरों के आगे नौकरी की माग मत करीये। इसी प्रकार शिक्षा-पद्धति में भी परिवर्तन किया जा रहा है। ऐसी शिक्षा प्रणाली जिसमें जीवन में प्रशिक्षण देकर उसे स्वावलंबित बनाया जाता है।

यहाँ पर संत निवास की बात आयी। हमने सोचा संत कितने आते हैं कोई एक-आध भटकते हुये आ गये जैसे हम द्वार द्वार से आ गये फिर चले जाते हैं। अतः एक माला में संत निवास तो एक माला में हथकरघा केन्द्र की स्थापना हो। इससे युवाओं में नशा आदि नहीं होगा, मांस का त्याग होगा। ऐसे युवाओं को संकलित करके उन्हें आश्रय दान एवं सहयोग इस हथकरघा के माध्यम से मिल जायेगा।

जिन भी लोगों ने दान-राशि की घोषणा की है, वे जल्दी-जल्दी देवें। यह भाव मैंने रखा - इसमें जैन दर्शन निहित है। व्यापक दृष्टिकोण रखना चाहिए संकीर्णता नहीं। प्राणीमात्र के प्रति सहयोग, दया-भाव रखना चाहिए। ऐसी ही सरकार बने। मत का प्रयोग करते हो। ऐसी ही सरकार उत्तराखण्ड में - अहिंसा के माध्यम से ही विजयी हुये हो। ध्वजारोहण हुआ। पर आपलोग हवा का काम करें तो वह ध्वजा-पताका सदैव-सदैव ऊपर की ओर ही फहराती रहेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

Date

रात्रि विश्राम- उदयपुर

16-3-17, आहार- बीजा डांडी — " - कालथी

बाबा देवरी, 17-3-17 "सूरज जैसे पुरुषार्थी बनो" प्रात:9.20

मैं आप लोगों से पूछना चाहता हूं कि कभी आपने दिन में देखा, जिस दिन सूर्य आकाश-आँगन में न आया हो। यदि ऐसा कोई व्यक्ति हो जिसने नहीं देखा वह हाथ उठा दे, ताकि उसके बारे में पूछताछ कर सकूं। आप लोगों के जीवन में इतने दिन हो गये लेकिन एक भी दिन ऐसा नहीं गया कि सूर्य नहीं दिखा हो।

हाँ इधर से आवाज आयी कि बादलों के कारण नहीं दिखता है। उस दिन सूर्य नहीं था ऐसा नहीं है। सूर्य अपनी कर्तव्य-निष्ठा का परिचय सदैव देता रहता है, वो भी न ही विलम्ब से तथा नहीं जल्दी भागता है। अपने स्थान पर एवं समय पर उपस्थित रहता है। हमेशा-हमेशा बादल नहीं रहते हैं, वह उपस्थित रहता है। प्रकाश उसी की देन है। दूसरी विशेषता यह कि वह दूर आकाश में रहता है, पर अपने प्रताप के माध्यम से सरोवर के कमलों को खिलाता रहता है। वह कहता है कि मैं उपस्थित हूं।

आप लोगों में भी उस सूर्य को देखकर उल्लास एवं ताजगी आती है। कुछ कर गुजरने की उमंग होती है, थकावट का भाव नहीं आता है। ये सब उसका ही परिणाम है। अब उसका उपयोग करो या न करो ये सब आप पर निर्भर है। जीवन पाया है तो एक दिन निश्चित छूटेगा, पर इस प्रकार के पुरुषार्थशील/कर्त्तव्यता को देखने से मन में भाव आये बिना नहीं रहता। इस प्रकार मेरा आप सभी लोगों से कहना है कि आप लोग भी उस सूर्य की ऊर्जा

Date

प्रकाश एवं प्रताप का उपयोग करें। ये सब आपके अपने पुरुषार्थ पर निर्भर है। इतना ही कहना चाहता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

9-3-17 "जादू वाणी के संयम का" मध्याह्न - 11.45

जब आप रात में कोई काम होता है तो कैसे कराते हैं? इशारे से या बिल्कुल कम धीरे आवाज में बोलकर अपना काम करा लेते हो। इस प्रयोग को दिन में भी करें तो क्या बाधा है। इससे आप बहुत सारी बातों से बच जायेंगे। वाणी का संयम पलेगा। अहिंसा महाव्रत की रक्षा होगी। त. सू. में सत्य व्रत की जो भावनायें बतायी हैं उनका भी पालन होगा।

जब मैं अमरकंटक में था तो मुझे एक कटु सत्य समझ में आया। वहाँ एक आश्रम के सन्यासीयों जो हमारे पास आते थे। वे कहते आपके यहाँ बाकी सब तो ठिक है किन्तु ध्वनि-प्रदूषण (शोरगुल) बहुत अधिक होता है। वे लोग बिल्कुल कम वो भी जरुरत पड़ने पर ही बोलते थे। उनके आश्रम में हमेशा शान्ति रहती है। वे नहीं बोलते तो भक्त लोग आते हैं वे भी बिल्कुल मौन होकर दर्शन करते।

आपके यहाँ आप लोग बातचीत करते हो तो श्रावक तो और ज्यादा शोर-शराबा करता है। यह बहुत कटु सत्य है। जब हम अपने ऊपर इस तरह का प्रयोग करेंगे तो एक नया ही प्रयोग होगा। और ध्वनि प्रदूषण से भी बच जायेंगे। आवश्यक कितना और अनावश्यक कितना बोलते हैं, यह भी समझ में आ जायेगा।

Date

गांधी जी को यह बात समझ में आ गयी तो वे मौन रहना ही पसन्द करने लगे। उन्हें लगने लगा की बोलने से कुछ भी होने वाला नहीं, बिना बोले भी काम चल सकता है। इसी के माध्यम से वचन-सिद्धि भी होती है। वह व्यक्ति कम शब्दों के माध्यम से सामने वाले को संतुष्ट कर देता है अर्थात सार की बात उसे दे देता है।

इसी के माध्यम से वचनों में गाम्भीर्यता आती है। आप जो भी बोलेंगे उसमें वजन होगा। इसका प्रयोग करके देखें बड़ा आनन्द आयेगा। भले ही कुछ ही लोग प्रयोग करें। कम बोलने की अपेक्षा एक पद्धति और बताता हूँ। आपने चुं (इशारा) कर दिया, सब लोग एक सेकण्ड में चुप हो जायेंगे। आपका काम संकेत से ही बन जायेगा।

बोलने का प्रभाव उतना नहीं, जितना संकेत अथवा इशारे का है। अतः इस बात का विशेष ध्यान रखेंगे। कल ही यह चिंतन में आया। मैं प्रसंग- वैय्यावृत्ति के समय निःसंगसागर जी दुर्लभसागर जी मुनिराज के कान में कुछ कह रहे थे बस आ० श्री० का ध्यान उस ओर गया और हम सभी मुनिराजों को बहुत ही आत्मीयता के साथ अपनी बात को समझाया।

रात्रि विश्राम - सहजनी

Note- ◻ हमें प्राकृतिक तरीके से ही स्वस्थ होना चाहिए दवाई/औषधी के प्रयोग से बचना चाहिए।

◻ अच्छी नींद एवं अच्छी भूख स्वस्थ होने का राज है।

फूलसागर

18-3-17 "गाथा सरीता की" प्रातः 9.50

देखो! प्राकृतिक यह नियम है, जब सूर्य के ताप से जल भाप (वाष्प) बनकर ऊपर चला जाता है और बादल हो जाता है, फिर ~~यथा~~ तापमान-हवा आदि मिलने से वह पिघल जाता है। जल बनकर पुनः नीचे गिरता है। पर्वतो पर वर्षा के रूप में आता है।

पर्वतो से नदी के रूप में बहना प्रारम्भ कर देता है। वह नदी कभी भी रुकती नहीं है। जहाँ से निकली है वहाँ से चलती जाती है - चलती जाती है। कई लोग रोकने का प्रयास करते है, पर उसकी दृढ़ प्रतिज्ञा है कि जब तक सागर का संयोग नहीं होगा तब तक रुकूंगी नहीं। यह नदी या सरीता की जीवन गाथा है।

आप लोग ऐसे नही है। आप लोग जब कभी भी यात्रा करते-रहते है तो एक बात देखी होगी। नदी जिधर से बहकर गयी उधर मुड़कर वापस गयी क्या? नही। अभी जबलपुर के पास एक नदी क्या नाम है उसका? नर्मदा। इधर मण्डला के पास भी है बरोंध में भी। जबतक सागर में नही मिलती वह कभी रुकती नहीं। आप लोग बांध वगैरह बनाकर उसे रोकना भी चाहें, किन्तु वह तो उस बांध के ऊपर से भी प्रपात करके चली गयी। आप भटक क्यों रहें हो यह सोच लो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

विशेष- आज मैंने परीक्षा दे दी। लगभग 3-4 बार कहा। रास्ता खराब था एवं पांव की ऐडी में भयंकर दर्द।

18-3-17 "आओ जानें भावलिंग क्या ?" मध्याह्न 11.45

चलना हमेशा रास्ते पर ही होता है। बिना मार्ग हम चल नहीं सकते। स्वयं के द्वारा मार्ग का निर्माण करना तो बहुत बड़े पुरुषार्थ की बात है। मोक्षमार्ग में भी ऐसे ही है। एक-एक कदम उस पर बढ़ते चले जाओ।

पूर्व में उत्तम संहनन होता था / रास्ते भी ऐसे होते होंगे। शीतलसागर जी - सुकुमाल मुनि को वज्रवृषभनाराच संहनन था फिर भी राई के दाने भी उन्हें चुभते थे। ये ही तो दृष्टि का खेल है। सत्त्व अलग वस्तु है और वीर्य अलग वस्तु है। सत्त्व का संबंध संहनन से है जो शरीराश्रित है वीर्य का संबंध भीतरी बल (आत्मा) से है। वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम होने पर ही अतुल वीर्य की प्राप्ति हो पाती है।

आगम में पुलाक आदि को भाव लिंगी मुनि की संज्ञा दी है। निश्चय वालों को यह बात जानना चाहिए। सदैव अपनी सोच को बड़ी रखना चाहिए। मैं शिथिलाचार का समर्थन नहीं कर रहा हूँ, किन्तु कदाचित् ऐसे मुनि हो तो उनके प्रति क्या दृष्टि रखना चाहिए। पंथ के व्यामोह में घोर अनर्थ हो रहा है।

मानता हूँ हुण्डावसर्पिणी काल है, पंचमकाल है फिर भी पुलाक आदि मुनिराजों को आगम में भी द्रव्यलिंगी नहीं भावलिंगी मुनि कहा है। शिवसागर जी के हाथ-पाँव कटने पर कहना कि संघात नाम कर्म का उदय चल रहा है। कर्मोदय मानो तो सहने की क्षमता आ जाती है। अब तो आप लोगों को देखना है, मैंने तो देख लिया। हूँ

×(अहिंसा ही परम धर्म है)

रात्रि विश्राम - गाजीपुर

मण्डला प्रवेश 19-3-17, [केशलोंच क्रिया]

20-3-17 "विशालता रखो नदी की तरह" प्रातः 9.30

नदी का प्रवाह कहाँ से प्रारम्भ होता है और कहाँ समाप्त होता है, आप जानते है। बीच के लोग लाभ ले लेते है। वे कहते है ये हमारे गाँव का प्रवाह है। यहाँ भी नर्मदानदी का प्रवाह है, मण्डला वाले यही कहते है कि हमारे गाँव का प्रवाह है। वह आया तो है पर रुका नहीं है फिर कैसे कह सकते हो कि हमारे यहाँ का है?

यह हम सब का सौभाग्य ही समझ लिजिए कि घर बैठे वह प्रवाह आया है। अब जो कुछ भी उपयोग करना चाहो करो। जैन धर्म किसी का नहीं और सबका है। जो उपयोग करना चाहे वह उसका है। इतना अवश्य है कि हमने उसे बाँधने का प्रयास किया, यह विशालता का अभाव है। विराटता नहीं होने से ऐसा होता है।

"पूत कपूत तो का धन संचय- पूत सपूत तो का धन संचय" आपके पास सपूतों की कमी नहीं है।

संस्कार डालकर ऐसे सपूत आप लोगों ने बनायें हैं। अभी उजाड़ होने वाला नहीं है। अभी तो यह झाड़ पानी की मांग कर रहा है। समय-समय पर उन झाड़ों को बचाते हुये, नर्मदा का शुद्ध पानी इसमें डालें। दुनिया पर उपकार नहीं, अपने आप का उद्धार कर रहें हैं। हाँ यदि दुनिया इससे लाभान्वित होवे तो यह परम्परा निरन्तर बनी रहेगी। अभी तो इतना ही पर्याप्त समझता हूँ फिर आप जैसी भावना रखोगे, हम कभी भी नहीं नहीं कहते और हमारे मुख से हाँ कहने का पाठ मिला नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Date

२।-३-१७ "चैन की नींद कैसे सोयें" प्रातः ९.३०

एक व्यक्ति जिसके घर में किसी बात की कमी नहीं थी। सब लोगों की अपेक्षा से उसके यहाँ सब अच्छी-अच्छी चीजों का उपयोग समय-समय पर किया जाता था। यह सर्व विदित था किन्तु एक कमी थी उसे नींद नहीं आती थी। आप सुन रहे हो। हव। नींद के साथ तो नहीं सुन रहे हो। अब आप ही बताओ सब कुछ होते हुये सुख की नींद भी नहीं आती है तो इन सबको लेकर भी क्या करना?

ऐसे ही वह स्थान से स्थानांतर जा रहा था, उसने देखा एक श्रमिक श्रम करके बैठ गया। बैठ क्या गया बैठते-बैठते उसे नींद आ गयी। हल चलाया था सो मिट्टी के ढेले पर ही लुढ़क गया। वे ढेले तकिया का भी काम कर रहे हैं, चुभन नहीं हो रही, चुभन हो भी जाय तो नींद गहरी है इतनी की उसे कुछ पता ही नहीं। अब वह व्यक्ति सोच रहा है कि हम मखमल की गादी के ऊपर भी नींद नहीं ले पा रहे। वह निद्रा देवी न जाने क्या चाह रही है?

एक पलक सुख की नींद आ तो जाये। आप लोग श्रम से दूर हो गये हैं। ऐशोआराम में रह रहे हैं। आप लोग मानते हैं - महाराज ये सब पुण्य से मिला है। मैं ये सब कुछ मानने को तैयार नहीं हूँ। पुण्य से सब मिला तो नींद पुण्य से क्यों नहीं मिली। कितना भी तर्क करो, श्रम करोगे तभी निश्चिंत हो पाओगे तभी सुख की नींद ले पाओगे। गोली लेकर निश्चिंत नहीं हो पाओगे। गोली से नींद नहीं मूर्छा आती है।

यह सब विदेशों में होता है। उसमें भी अमेरिका सबसे आगे है। एक ही व्यक्ति कई तरह की गोली लेता

Date

है, गोली क्या लेता है फाँकी लेता है जैसे आप लोग चना आदि की फाँकी लेते हो फिर भी वह नींद नहीं ले पाता है, क्यों की नींद के लिए निश्चिंत होना अनिवार्य है।

तनाव रहित होगा, चिंता मुक्त होगा तो निद्रा देवी हमेशा-हमेशा उसकी परिक्रमा लगाती रहेगी। मैं इसका वर्णन नहीं करना चाहता। सेठ-साहुकार के पास जाओ, अवश्य पूर्ति हो जायेगी। मुनि-महाराज के लिये भी यह रखा है। जिस प्रकार खड़े होकर दिन में एक बार भोजन लेना मूलगुण है, उसी प्रकार एक बार शयन करना बताया किन्तु गादी याद भी नहीं करना। फिर कैसे करना? जैसे शास्त्र में बताया वैसे ही करना।

उसके (निद्रा) लिए भी एक पेपर रखा है। इस पेपर का जैसा उत्तर हम लिखते हैं, वैसा ही परिणाम प्राप्त होता है। हर्ष-विषाद के बिना थकावट को दूर करने हेतु शयन करते हैं। खो जाने या बेहोशी में चले जाने का नाम निद्रा नहीं। तत्त्व-चिंतन, विहार आदि से शरीर में थकावट को अल्प निद्रा लेकर दूर करना है। इस प्रकार सीख लेना चाहिए। आज के बच्चे श्रम से दूर भाग जाते हैं। शारीरिक-मानसिक थकावट दूर कर लेना चाहिए।

कल ही हमारे लिए एक किताब मिली थी। कई व्यक्ति ऐसे भी आते हैं जो अधिक पढ़े-लिखे हैं वे कहते हैं कि महाराज इसका इतिहास भी है या नहीं अथवा मनगढ़त तो नहीं। कल ही वह किताब मिली। उसमें ऐसा वर्णन, वे उसे पढ़कर अवश्य प्रभावित होंगे। इससे सभी को दिशा-बोध प्राप्त होगा। भारत में श्रम करना अनिवार्य तत्त्व रहता है। उसमें लिखा है, अवस्था का

क्या इतिहास है। उसी में बताया कि कताई और बुनाई का वेद-वेदान्तरों तक में लिखा है।

मानव सभ्यता की शुरुआत ही इस कताई-बुनाई से हुयी है, नहीं तो वे आदिवासी में आ जाते हैं। मण्डला तो आदिवासी इलाका है। पहले मानव आदिवासीयों की तरह वल्कल, छाल आदि से अंगों को ढक लेता है, उसके स्थान पर यह प्रारम्भ हुआ। जिसे आप वस्त्र बोलते हैं। कताई-बुनाई के बिना वस्त्र नहीं बन सकता है। जैसे प्रतिदिन भोजन अनिवार्य है, वैसे ही कताई-बुनाई से तैयार वस्त्र भी अनिवार्य है।

वह पुस्तक बहुत ही पुरानी लगभग 1920 के आसपास की है। उसकी प्रस्तावना स्वयं गाँधी जी ने लिखी है। लगभग 50-60 निबन्ध में से दो को स्वीकार किया। इस समय उस किताब के लिये जो निबन्ध स्वीकार किये उन पर 1000 रु. का इनाम रखा आज वह राशि करोड़ों से भी ऊपर हो जायेगी। आपके यहाँ हर पाँच वर्ष में डबल हो जाता है। इतनी बड़ी राशि इनाम में रखी गयी हम भी उन लाखों बेरोजगारों के बारे में सोच लें।

लोकतंत्र में क्या सोच रहे हो। हम उससे अवगत नहीं हैं। इस किताब में ऐसी-ऐसी बातें लिखी है कि कन्या को कौनसे घर में देना है। अच्छा उस घर में मूल्यवान साड़ियाँ बनती हैं, बस भेज दो इस घर में, माँगने की कभी नौबत नहीं आयेगी। हस्तशिल्प के माध्यम से बच्चियों (कन्याओं) का आदान-प्रदान होता था आज दहेज के माध्यम से होता है। कोई गरीबी थी ही नहीं, आज बेरोजगार घूम रहे हैं। यदि कोई विदेशी वस्त्र उपयोग करता है तो वह लाखों रोजगारों को बेरोजगार करने में

Date

लगा है। ये लिखा है उस किताब में। अभी बता रहे थे ये देशी है या विदेशी। भूल गये है अपने-आपको। चिंता करने की जरूरत नहीं, अंगड़ाई लेने की जरूरत है।

यह शिल्प कला और कहीं नहीं मात्र भारत में है। इसी में अहिंसा देवता का वास है। इस किताब को अवश्य पढ़ेंगे। कताई-बुनाई (हथकरघा) का क्या इतिहास था? क्या कर्तव्य था? कैसे जनता का विकास होगा? इन सभी प्रश्नों का उत्तर उसमें है। चुनाव की जरूरत ही नहीं, सारे के सारे युवा जुट जायेंगे। बस फिर इण्डिया को भारत बनने में देर नहीं लगेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

रात्रि विश्राम - हिरदेनगर

आहार चर्या - बम्हनी बंजर

रात्रि विश्राम - इन्द्री

पौंडी (बगासपुर) 23-3-17 "भव भोगन भोगी वशाय" प्रातः 9.40

"बिना पुण्य के मिलत न, भली वस्तु का योग,
दाख पके तब होत है, काक कण्ठ में रोग।"

ये कहावत है। जब सभी पक्षी स्वतंत्रता के साथ उड़ते हुये वृक्षों के फल एवं फूल खाते हुये जीवन गुजारते हैं। दाख पकते है उस समय भी तोता आदि सभी पक्षी खा जाते हैं। कौवा सोचता है दाख पक गये हम भी खा ले किन्तु जिस समय वह ऐसा सोचता है तभी उसके कण्ठ में रोग हो जाता है।

इसी प्रकार सभी लोग सोचते हैं कि हम ये करे, हम वो करे किन्तु पल्ले में पुण्य योग नहीं तब तक उसका योग नहीं मिलता। सब लोग आ रहे हैं। आर्यिका संघ के बारे में - वहाँ से इतना चलकर आगये।

बीच में सिवनी आदि पर रुकना नहीं। (कम समय मिला-दीदियों) संतुष्टि तो करनी ही पड़ती है।

वस्तु नहीं मिलती मिलन के योग का प्रयास किया जाता है। चाहे तो नहीं मिलती और बिन चाहे भी मिल जाती है। बार-बार मिले यह सभी चाहते है। अबकी बार मण्डला में मिले। मण्डला से चले नया रास्ता था। इस अन्तराष्ट्रीय स्थान (कान्हा नेशनल अभयारण्य) को लोग पैसे खर्च करके आते है, आप सभी को बिना पैसे खर्च के लाभ मिला।

मुंगेरी तक तो पहले भी आया। इधर इस बार आये। आप सोचते है तब ही नहीं अन्य भी सोचते है। हमेशा-हमेशा सोचने का उपक्रम रखना। कई बार ऐसा होता है घर आते-आते भी अच्छी वस्तु का वियोग होता है। पुण्य का योग हो तो जहाँ कहीं भी योग मिल जाय। ऐसा योग जहाँ कभी भी मिले ऐसा प्रयास करना चाहिए।

कल शाम में बहुत से ग्रामीण लोग हाथ-जोड़कर खड़े थे, सभी ने मांस-मदिरा आदि का त्याग किया। उन लोगों का योग कैसा था। आप लोगों को नियम के बारे में सोचना पड़ता है। यदि लेना भी चाहें तो घर वाले हाँ कहेंगे या नहीं। इस बात का ध्यान रखे - त्याग का योग इन ग्रामीण जनों की तरह होता है। जो व्यक्ति त्याग करता है उनका भविष्य हमेशा उज्जवल होगा। उज्जवल हो इसी भावना से।

एक बार और, आप लोगों के कारण ही इन लोगों के पुण्य के कारण भी साधु का विहार होता है। अभी इधर आ रहे थे ग्रामीण लोग सड़क के किनारे खड़े

Date

होकर दर्शन करते। वे तुरंत चप्पल खोलकर उसी पर खड़े हो जाते कि कहीं महाराज की नजर न पड़ जाये। गाँव के लोगों को आप लोग गंवार मानते हैं, ऐसा नहीं है।

उनके मध्य आदर-विनय के भाव आते हैं। वाहन के ऊपर हो तो एकदम पलक कर आ जाते हैं। आप लोग हो तो- अभी तो नयी खरीदी है। वो लोग सोचते हैं इतनी देर में तो बाबा और आगे चले जायेंगे। इसे सीखने के लिए किसी पाठशाला में जाने की जरूरत नहीं होती। मुनिमहाराज का विहार इसी तरह होता है।

उन लोगों के हृदय मे आप लोग भी हाथ धो रहे हो। रास्ता बदलता है, क्यों ? इसे समझ लो। जबलपुर वाले कह रहे थे - महाराज महावीर जयन्ती आ रही है, हमने कहा हाँ महावीर जयन्ती मनायेंगे, जहाँ रहेंगे। ऐसे ही मण्डला वाले भी बोल रहे थे। आप लोग इसी तरह मनुष्य जीवन की सार्थकता करते रहे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

शान्ति विश्राम - खैर लाँजी

बोदा २५-३-17 "अनन्त संसार को परिमित करें" प्रातः ९.२०

(बालाघाट) यहाँ हर एक-दो किमी. पर गाँव है। ग्रामीण इलाके में जनता रह रही है। यहाँ सड़क भी है और उसका सम्पर्क सभी बड़े-बड़े नगरों से है, जो पथ बिछाया हुआ है, किन्तु एक नई चीज देखने में उपलब्ध हुयी। हम जा रहे हैं सुबह-सुबह, वे लोग लाइन से हाथ जोड़कर खड़े हैं। बाबा हमारे लिए आशीर्वाद दे दो ऐसा कहते हैं।

शास्त्रों में पढ़ते हैं कि संत समागम कितना दुर्लभ

है। जंगलों में रहने के उपरान्त भी दुर्लभ चीज उपलब्ध हो जाती है। आप सभी लोगों को वह दुर्लभ चीज सहज ही उपलब्ध है, अतः अभ्यस्त हो चुके हो। उसका महत्त्व समझ में नहीं आता। उन्हें एक-आध बार ऐसा अवसर इसे हम समझ नहीं पा रहे।

शास्त्रों उल्लेख मिलता है कि उन्हें इस एक-आध बार मिले समागम से भी सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति हो सकती है। साधुओं के दर्शन से बेड़ापार हो जाता है। जहाँ भी रहते हैं साधुओं के साथ कैं उन क्षणों का उपयोग में लाने का प्रयास करे। ऐसे व्यक्तियों को प्रेरित करने की आवश्यकता है। वे भी सात्विक एवं अहिंसक बनकर अपना मार्ग प्रशस्त करें। संसार अनन्त है। आगे भी अनन्त ही रहे ऐसा नहीं है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रात्रि विश्राम - बैहर के बाहर कॉलेज

बैहर, २५-३-१७ "स्थापना हो राम-राज्य की" प्रातः ९.२०

आप लोगों ने सुना होगा, पढ़ा होगा, उपस्थित होने की तो बात नहीं कह सकता फिर भी उस स्थान पर जो उपस्थित होगा उनसे आपकी बात हो गयी हो। वह सर्वोच्च पद राष्ट्र का जिसे राष्ट्रपति कहते हैं उस पद पर आसीन करने का अवसर होता है। सब लोग सुन-देख रहे होते हैं और राष्ट्रपति भी नम्र मुद्रा में खड़े रहते हैं।

वे उनसे (राष्ट्रपति से) कहते हैं मैं जो कहता हूँ उसे एक बार नहीं दो बार नहीं, तीन बार दोहराओ अर्थात मन से, वचन से, और काय से ऐसे तीन बार बोलना होता है। वह भी कहता है, जिस पद का भार मैं अपने कंधों पर ले रहा हूँ, जैसा मुख से उच्चरित

Date

हो रहा है वैसा ही करेंगा। कभी भी राष्ट्र के अहित में कोई काम नहीं करेंगा।

यह सब प्रक्रिया सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश महोदय द्वारा करायी जाती है। राष्ट्र के सर्वेसर्वा होने के बाद भी बार-बार सोचना पड़े उसे सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश याद दिलाता है। राष्ट्रपति को भी नियुक्त करने का अधिकार उन्हें प्राप्त है। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए की संसारी प्राणी बड़ा मोही होता है जिससे वह चिपक सकता है, वह बड़ा लोभी होता है जिससे कषाय के वशीभूत हो सकता है, न्याय मार्ग से स्खलित न हो इसलिए सादी करके शपथ ग्रहण करता है।

ये भारत वर्ष है, यहाँ लोकतंत्र है। सवा अरब की जनसंख्या है सबका एक ही लक्ष्य है- लोक कल्याण। लोक में एक-दो-तीन व्यक्ति नहीं। जब कभी भी अवसर आता है, कभी महाराष्ट्र तो कभी मध्य, बिहार-बंगाल अथवा छत्तीस गढ़। छत्तीस गढ़ में भी जगदलपुर या बस्तर। बस्तर जिला भारत का सबसे बड़ा जिला, उससे आगे भी हम गये। जहाँ आप लोग रहते हैं।

इतने बड़े अखण्ड भारत का संचालन एक व्यक्ति से नहीं आप सभी अपना कर्तव्य करें। राष्ट्र का संरक्षण धन-दौलत से नहीं आपके समर्पण से, आपके कर्तव्य से होगा। मेरा तो हो ही गया ऐसा न कहकर हमारा तो हो गया।

आज के इस प्रसंग पर

Date

कहना चाहूंगा देव है जो अहिंसा का मार्ग बताते हैं, उनके अनुसार बताये मार्ग को बताने वाले शास्त्र होते हैं तो गुरु उस अहिंसा के मार्ग पर चलते हैं। इस अहिंसा के माध्यम से ही हम आगे बढ़ें।

हिंसा से संकीर्णता आ जाती है। अहिंसा ही सच्चा धर्म है। कोई व्यक्ति अपराध करता है। सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश भी यही कहता है, बोलो सच्चा शास्त्र या अहिंसा है उस शास्त्र के ऊपर हाथ रखकर उसकी साक्षी में ~~कि~~ मैंने अपराध नहीं किया। सही-सही बोलने के लिए वहाँ भी शास्त्र रखा जाता है। समझ में आ रहा है ना। भारतीय संस्कृति में देव-शास्त्र इसी अहिंसा का उपदेश दे रहे हैं और गुरु भी उसी अहिंसा का समर्थक करते हैं।

अभी-अभी चुनाव हुये। आप लोगों ने हमें परिणाम बताया। हमने सोचा राम राज्य आने को है। चिर-परिचित पहले से ही घोषणा हो गयी उस पार्टी को आना है। उत्तर-प्रदेश / उत्तराखण्ड जो एक प्रकार से भारत की नाक मानी जाती है। सबसे ज्यादा जनसंख्या चाहे हिन्दू हो या मुसलमान हो सभी लोकतंत्र के उपासक माने जाते हैं। जो भी खड़े हुये उन्होंने पहले ही घोषणा कर दी की यदि हमारी सरकार बनती है तो उत्तर प्रदेश में जो भी अवैध रूप से बुचड़खाने (कत्लखाने) चल रहे हैं इन्हें पहले बंद कर दिया जायेगा।

वर्षों हो गये, सत्ता पर ऐसा कोई पूत नहीं आया। अबकी बार जो घोषणा की थी उसे कर के दिखाया। इलाहाबाद आदि 4-5 स्थानों पर इस प्रकार से अवैध रूप से चलने वाले बुचड़खाने

Date

बंद कर दिये अन्य को भी ताला लग जायेगा। उन बुचड़खानों के स्थान पर पशुओं का स्थान अर्थात् गौशाला खुल जाये, भगवान से यही प्रार्थना करेंगे। भारत वर्ष कृषि प्रधान देश माना जाता है। आज वह स्वप्न साकार होने को है।

लोकतंत्र में जनता आती है वह जनता सुदूर गाँवों में भी फैली है। उन्हें नेताओं से कोई मतलब नहीं है, वे तो आज भी वही काम कर रहे हैं यदि उस कृषि आदि का छुड़वा देंगे तो क्या करेंगे। इसी प्रकार अभी के प्रधानमन्त्री जी ने किया। आप खड़े हो जाते हैं - बैठ जाते हैं। बैठाने वाली यहाँ की जनता ही है। जनता जाग जाती है तो गर्मी कम हो जायेगी सबको ठण्डाई मिल जायेगी।

एक दिन तो राम को सबरी की प्रतिक्षा खत्म करनी ही होगी। सर्वत्र राम-राज्य हो जाये। दया का सभी दिलों में वास हो। यहाँ भी न्यायालय की तरह श्री जी की स्थापना हो रही है। जिन्होंने उस अहिंसा का उद्घोष किया है देव उन्हीं के अनुसार शास्त्र तथा उस पर चलने वाले गुरुओं के माध्यम से अहिंसा की ओर ही सभी बढ़ते चलें। इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमोधर्म की जय। ॐ

रात्रि विश्वा - आमगाव

Note → उ० प्र० के मुख्यमंत्री योगी के लिए - एक हाथ में माला है और एक हाथ में भाला है।" ज्ञानशक्ति वैराग्यार्थ तभी कर्मों को काट पाओगे।

Date

मोहगाँव

26-3-17 "प्रयोग करो - गाय की तरह" प्रातः 9.20

एक किसान ने अपने यहाँ गाय पाल रखी थी, अब दूध देना बंद कर दिया। उसने सोचा जब तक दूध नहीं देगी दूसरी एक गाय और ले आऊं। वह ढूंढ-ढांढ कर के अच्छी गुणवत्ता वाली एक गाय को ले आया। समय पर उसने बच्चे दिए। एक नहीं दो बच्चे हुये।

दोनों को वह गाय दूध पिलाती। आप सुन रहे हैं। क्यों कि दोनों बच्चे उस गाय के हैं। अच्छे ढंग से वात्सल्य भाव से उन्हें दूध पिलाती। अड़ोस-पड़ोस में एक गाय जिसका बछड़े के जन्म के उपरान्त अवसान हो गया था। स्थिति ऐसी की अब उसका बछड़ा क्या करेगा। आप सोचिए तत्त्वज्ञान करते हैं, धर्मध्यान करते हैं, उपकार की बात करते हैं अब क्या करोगे।

वह जिस समय दूध पिलाती अड़ोस-पड़ोस वाला बछड़ा भी उसमें शामिल हो जाता। वे बछड़े भी सोचते ये तो हमारा भाई है। गाय तो समझती है। आप भी कहते हैं न ये तो पड़ौसी का लड़का है भले ही वह कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, कितना भी लाड़-प्यार क्यों न करते हो, फिर भी पराया मानते हो। इस प्रकार वह गाय उस बछड़े को भी प्रतिदिन अपना दूध पिलाती। इसे देखकर पड़ौसी का कठोर हृदय भी पिघल जाता है।

मनुष्य उच्च प्राणी होता है। यह उच्च-नीच का भेद पशुओं में नहीं, मनुष्य में ही होता है। यह एक उदाहरण के माध्यम से मैंने जाना। आप धर्म की बात करते हैं, समाज, देश, राज्य की बात करते हैं, विश्व की बात करते हो किन्तु पड़ौसी के बारे में कुछ नहीं। पड़ौसी ही सही नहीं है। मस्तिष्क में विचार करते हो उसका थोड़ा

Date

बहुत प्रयोग कर अड़ोस - पड़ोस को सुधारने का प्रयास करो। सही अड़ोस - पड़ोस तो शरीर ही है।

आज तक शरीर को पड़ौसी माना नहीं जिस कारण सही व्यवहार नहीं कर पा रहे। इसकी जाति मेरी जाति एक ही है। चेतन स्वरूप वाले हैं। शरीर धर्म एवं आत्म धर्म समझने पर ही वह व्यवहार हो सकता है। हर प्रतिकूलता में आँखों में पानी आना, पड़ौसी के बराबर विश्वास न होने पर इर्ष्या भाव धारण करना कल्याण के लिए बाधक तत्त्व है। मनुष्य के दिमाग में ये भाव बाधकता के रूप में नहीं आते हैं।

हमें आश्चर्य होता है, रजन होने के उपरान्त माइक हमारी तरफ सरका देते हैं। प्रतिदिन हम सुनते हैं। गाय ने प्रतिदिन अपने बछड़ों के साथ पड़ौसी को भी पिलाया। ऐसे भाव मनुष्य में कब आते हैं। बहुत कम ऐसे भाव होते हैं। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि ये माइक की आदत कब छूट जाय। जैसे परीक्षा के समय बच्चों के हाथ से किताब छुड़वा ली जाती है, उसी प्रकार आप लोगों को भी ऐसा प्रयोग करना चाहिए।

प्रयोग का भाव ऐसा आवश्यक है। देव गति में जाओगे तो भी नहीं कर पाओगे, सब जगह यही मिलेगा। मनुष्य जीवन में ही कुछ प्रयोग कर सकते हैं। जो करता है वही किताब के अभाव में भी 365 दिन के अध्ययन को एक दिन में स्थिर कर सकता है। उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि के बारे में है। पढ़ा - सुना तो खूब है किन्तु प्रयोग करते हैं तभी नम्बर मिलते हैं। बिना शिक्षा के भी प्रयोग मात्र करते चले जायेंगे, तब जाकर लोगों को धर्म मार्ग में लगा सकते हैं और स्वयं भी धर्मनिष्ठ व्यक्ति बन सकते हैं। प्रयोग के अभाव में

शिक्षा किसी काम की नहीं।" धीरे - धीरे लोग अनुभव कर रहे हैं।

आज इतनी मात्रा बढ़ गयी है पर फिर भी स्वीकारता नहीं देता। हानिकारक को छोड़ना नहीं चाहता। शिक्षा मात्रा के अनुसार लेना चाहिए। मैं भी मात्रा के अनुसार ही सुनाऊँगा। प्रयोग की गतिविधी समझ में नहीं आती तो मैं कहूंगा इससे तो दूसरों को ढूंढ लेंगे तभी कार्यकारी होगा।

आज शिक्षा और शिक्षा के फल की ओर भी दृष्टि रखीए। चूंकि विद्यालय में बैठे हैं, हमारे पास अभी विद्यालय वाले आये भी थे। इन दिनों रात्रि का मुकाम एवं सुबह की चर्या, हमारा प्रवास विद्यालयों में ही चल रहा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

चतुर्दशी, रात्रि विश्राम - मलॉ[illegible]

बिरसा, 27-3-17 "स्वयं को जागना होगा" प्रात: 9.50

ये विद्यालय है। सर्व विदित है लोक कल्याण हेतु महामना लोग अपने जीवन को समर्पित करते हैं। राम ने किया, ऋषभनाथ स्वामी ने किया, महावीर स्वामी ने किया, इसके बाद भी कई संत हुये जिन्होंने अपने जीवन को लोक कल्याण में लगाया। यह बात अलग है कल्याण हो या नहीं। दूसरा भी मार्ग बताया है। अहित को छोड़ने एवं हित को ग्रहण करने की प्रेरणा दी है। बाध्य नहीं कर सकते हैं।

हाँ, उसे प्रेरित कर सकते हैं। हमें चाहिए अपने उपादान को एवं अपनी योग्यता को पहचान कर जो शेष जीवन रहा है उसे कल्याण के मार्ग में लगा सकें तथा उससे दूसरे लोग भी प्रेरित हो सकें। आज

तक जितने भी लोग मुक्त हुये अहिंसा के द्वारा ही हुये तथा आगे भी इसी अहिंसा के द्वारा मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। आप सभी परोपकार एवं दया-प्रेम की भावना रखते हुये चलेंगे।

ऐसी घोषणा हम सब के लिए उन हितोपदेशी संतों के माध्यम से उपलब्ध हुयी है। बहुत समय नहीं है। आज चतुर्दशी है। आपके इस विद्यालय में अभी-अभी प्रतिक्रमण करके आपके सामने आये हैं। आप सभी ने पूजन की। महावीर भगवान के पाँच कल्याणक हुये। सब कल्याणक में इन्द्र रहा किन्तु एक में नहीं रहा। वे मुक्ति को प्राप्त हो गये सभी नींद से उठे ही नहीं थे।

वे भगवन भी किसको-किसको उठायेंगे, अपने आप को उठाना ही पर्याप्त है। उन्होंने अल्पकाल में ही अपना काम कर लिया। गौतम स्वामी ने भी ऐसा ही किया। आप लोग भी परीक्षा की घड़ी समझें और करें। विद्यालय के प्राचार्य महोदय इतने बच्चों पर उपकार कर रहे हैं। आप लोग इस सेवा का अभी मूल्य नहीं समझ पा रहे, बाद में जब बच्चे बड़े हो जायेंगे तब समझ में आयेगा कि बचपन में हम इस विद्यालय में पढ़े थे।

सांसारिक विषय-भोगों को गौण करते हुये बच्चों के लिए यह अच्छा काम है। बच्चों को व्यसनों से मुक्त रखें। सरकार भी इसी ओर ध्यान दे रही है। जो इनसे बचा है उन्हीं बच्चों की बुद्धि काम करेगी, काम करें इसी भावना के साथ आज का यह छोटा सा वक्तव्य है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रात्रि विश्राम - गरोपुर

दमोह (बालाबार) 24-3-17 "चिपकना संत का काम नहीं" प्रा: 9.20

सूर्य का उदय होना और 12 घण्टे का प्रवास होना। प्रवास करते हुये यह नही सोचता है कि यह नगर है या जंगल है। स्थान अच्छा है या बुरा है, यह महान व्यक्ति है या ये गरीब है, यह महल है या कुटिया है आदि-आदि के भेद किये बिना अपना प्रयास करता चला जाता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में अहिंसा का पालन करते चला जाता है, वह धर्म को ही मुख्य बाकी सबको गौण करके अपना जीवन यापन करता है।

नदी कहाँ से प्रारम्भ होती है एवं कहाँ तक आगे बहेगी पता नहीं, रुकती नहीं बहती जाती है। आप सब उससे लाभान्वित होती हैं। यह भी कह देते हैं ये मेरी नहीं है - ये मेरी नहीं है। मान लेते हैं वह तो आगे बढ़ती जाती है। वह किसी से परिचय प्राप्त नहीं करती बस समस्त व्यक्तियों का काम होना चाहिए। साधु भी अहिंसा धर्म के पालन, दया के पालन हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान तक चले जाते हैं। इतना ही परिचय आगे पहुंच गये कौनसा गाँव या मूल जोहते हैं। संतों का यही काम है।

किसी भी चीज से चीपके नहीं, संतों का ऐसा काम होना चाहिए, होता है। संसारी प्राणी चिपकने का प्रयास करता है किन्तु चिपक नहीं सकता। समय पर प्रकृति उसे वहाँ से हटा देती है। दिन ढलने पर सूर्य का प्रताप भी कम हो जाता है। इसे समझ नहीं पाने के कारण ही झूठ, चोरी आदि का सहारा लेता है और कर्म बंध होता है। बाद में पश्चाताप होता है। फिर भी यदि आप जाग्रत हो जाये तो अनर्थ से बच सकते हैं, कर्म बंध से बच सकते हैं। संसार में मिलना और बिछुड़ना यह तो एक स्वाभाविक रित है, यह समझ में आ जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

Date

[दर्शन अतिशयक्षेत्र राबोली]
(2K.m से(?))

शान्ति विश्राम - ढोंगरीया/अघनपुर

सालईकरी 29-3-17 "आदिवासी है - असभ्य नहीं" प्रातः 9.20

एक बार सम्मेद शिखर यात्रा पर हम थे और शहडोल, बुढार इत्यादि के बाद क्रमशः हम पार करते जा रहे थे और वहां पर कोयले की खदान होती है, उसमें लोग काम करते थे। वहीं पर हमारा मुकाम हो गया, चिरमिरी जिसको बोलते है। तो वहां की खदान में जो मैनेजर थे इन्होने कहा संत जी आये है आज सब लोगो की छुट्टी है, सब लोग इनका दर्शन करो।

दिन में आहार चर्या के बाद से लाइन लग गयी जो रात के 10 बजे तक चलती ही रही और हमारे सामने अपनी-अपनी आस्था के अनुसार मोह तथा पेड़ा आदि लाकर चढाये थे। वे सोचते बाबा लेते नहीं तो हमने जब दिन में बोलता था उस समय उन लोगो से कहा कि तुम इतना परिश्रम करते है, परिश्रम के उपरान्त भी बचता नहीं ऐसा क्यों होता है? तो कहा शराब पीना बंद कर दो।

शराब के कारण घर वालो के लिए, बच्चों के लिए कुछ भी नहीं बच पाता है। इसे सुनकर कई मजदूरों ने कहा - हम संकल्प लेते है कि आज से शराब नहीं पियेंगे। वे लोग जिनको आप आदिवासी कहते है। वे आदिवासी है असभ्य नहीं। उनकी सभ्यता अलग है ये बात समझे। आपने उस सभ्यता को छोड दिया इसलिए अलग दिखने लगे है।

उनके जीवनवृत के बारे में पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ इन लोगो का जीवन बहुत ही नियम

से चलता है। उन लोगो ने ऐसे - ऐसे नियम बना रखे हैं कि तलाक की मात्रा 1% भी नहीं है और आपके यहाँ मात्र 1% विवाह के बाद संबंध है जो टिक (रुक) जाते हैं बाकी 99% चला जाता है।

उन लोगो के यहाँ कन्या ऐसी होती है। आपके यहाँ भी यदि ये महिलाऐं एक हो जाए तो पुरुषों का क्या हाल होगा, समझ में आ जायेगा। कुटुम्ब का संचालन स्त्री - पुरुष दोनों को मिलकर ही करना चाहिए। ये लोग बिछुड़े हुए नहीं है। आप लोगों ने अपने जीवन की पद्धति ऐसी अपना ली, अलग कर दी इससे बिछुड़े हुये लगते हैं। आप लोग इन्हें ऐसा मानते हैं।

अभी आज यहाँ पास ही में एक स्थान राधोली, जहाँ बहुत से महाराज जी गये थे वहाँ शराब न पीने का संकल्प लिया। ये मध्यप्रदेश है छत्तीसगढ़ नहीं है। छत्तीसगढ़ वाले तो स्वागत के लिए आये हैं। आप सभी शराब का त्याग कर उनकी संख्या बढ़ायें। इससे आपकी बुद्धि काम करेगी। पारीवारिक कमीयाँ तथा गाँव में जो कमीयाँ हैं वे दूर होगी। यह प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। विचारों में परिवर्तन का भरसक प्रयास करो।

सरकार सहयोग देने को तैयार है किन्तु आप उसे खा - पीकर नष्ट नहीं करें। उनके सहयोग के अनुसार कृत संकल्प लें लो तो भारत की कमीयाँ दूर हो सकती हैं। मांस - मदीरा का अवश्य ही त्याग होना चाहिए। मांस के लिए पशु कटते जा रहे हैं,

Date

एक साल में पशु नहीं बनता, इसके लिए भरसक कोशिश करें पशु कटने से बचायें। सरकार कोशिश कर रही है। अभी उत्तर-प्रदेश में २०० से अधिक अवैध बूचड़खाने बंद कर दिये।

कुछ लोग केवल बोलते हैं किन्तु इन्होंने जिनके भी पास लाइसेंस नहीं, अवैध हैं उन्हें बंद कर दिया। आसपास के इलाकों में आपूर्ति की सोची होगी पर पांच साल बाद परमीशन (अनुमति) अभी नहीं सरकारी कानून है इसका मतलब ही है कि वह उसे नहीं चाहती है। जो लाइसेंस है उसका पुनः नवीनीकरण किया जाता है इसका अर्थ ही है कि इसका कानून नहीं है।

विदेशी लोग मांस चाहते हैं, ऐसे में क्या भारत ने ठेका ले रखा है क्या? वे पाले और खायें। किसी भी सरकार ने यदि ऐसा निर्णय लिया है तो वह गलत है, वह गलत है, इसमें कोई संदेह नहीं। किसी भी देश ने मांस के व्यापार के माध्यम से उन्नति नहीं की है। सरकार सोच रही है तो आपके माध्यम से सोच रही है।

आप लोग सरकार के इस काम की ओर अनुमोदना करें। ऐसे कार्यों में बिना मतलब धन लगाया जा रहा है, प्रकारान्तर से आपका ही धन शामिल हो रहा है। आप इससे बचने का प्रयास करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हुँ

श्याम द० ग० प्रवेश प्रथमगांव-स्वामी

रात्रि विश्राम - देवपुरा घाट

बेंजारी नदी का उद्गम स्थल - बेंजारी चौक (एक भी घर नहीं जंगल में थी)

30-3-17 "चलो पार हो जायें इस जंगल से" प्रातः 9:20

पौराणिक कथा है, पद्म पुराण की कथा है। जंगल में राम सीता और लक्ष्मण के साथ विचरण हो रहा है। यत्र-तत्र अनुभूति के साथ, आनंद की अनुभूति के साथ, मन में कोई विकल्प किए बिना एक-एक दिन गुजर रहा है। अतिथी संविभाग भी उन दिनों में प्रतिदिन होता है। पड़गाहन के लिए खड़े हैं। उस भयानक जंगल में कौन आयेगा? भयानक जंगल में विचरण करने वाले मुनि महाराज आयेंगे।

उसी समय गुप्ति-सुगुप्ति दो युगल मुनिराज उधर से गुजर (जा) रहे थे। पात्र भी ऐसा तो दाता भी ऐसा ही है। सीता कहती है कौन आयेगा स्वामी? हम जैसे आये हैं वैसे ही वे भी हमारे यहाँ आयेंगे। तभी जो आकाश मार्ग से जा रहे थे उन पर सीता की दृष्टि पड़ी ये तो महाराज जैसे लग रहे हैं। महाराज जैसे लग क्या रहे हैं महाराज ही हैं राम ने कहा। धीरे-धीरे उतरकर आ गये। वे दोनों अपने आंगन में खड़े थे, उन्हीं के सामने आकर खड़े हो गये।

ऐसे जिन्हें उसी भव में मुक्ति मिलना है। क्या ठिकाना है इस संसार के माया जाल का, हम इसे समझ नहीं पाते हैं। कर्म सिद्धान्त अटल सिद्धान्त है। हमने बांधा है हमें ही फल पाना है अर्थात ऐसा जाल है हम स्वयं ही फंस जाते हैं। जब उसका फल मिलता है, ऐसा फल जो उसको असहय हो जाता है। कर्मों के फल जिनमें कुछ कर्म प्रशस्त होते हैं जिनका फल मीठा होता है। उन कर्मों के उदय में वह अज्ञानी बन जाता है। कुछ अशुभ कर्म जिनके उदय में यह रोता-फिरता है किन्तु भगवान

भी उनसे नहीं छुड़वा सकते हैं। हाँ आपके रुदन को देखकर वे भी आपको करुणा का पात्र मानकर उस दुःख से छूटने की भावना करते है।

फिर दूर करने का मार्ग-उपाय बता सकता हूँ, चलना तो स्वयं को ही पड़ेगा। कर्म विपाक विचय के माध्यम से ऐसा कर्म करो जिससे अप्रशस्त कर्म प्रकृतियों का बंध न हो। प्रशस्त में भी जो मोक्षमार्ग में सहकारी कारण है उनका बंध हो। उनमें एक स्वस्थ शरीर होता है। अस्वस्थ शरीर भी चल सकता है किन्तु सहन करने वाला भी तो होना चाहिए।

राम-सीता का यह कथानक गुरुजी के मुख से हमने सुना। जंगल में मुनिराज को क्या दिया होगा? बहुत सारे फल प्रासुक करके दिखाये। ऐसा सुन्दर वातावरण वे देते जा रहे हैं और मुनिराज लेते जा रहे हैं। धन्य घड़ी - धन्य दिवस मानते हैं। भव्य जीवों के पुण्य योग से ही ऐसा योग मिल पाता है।

छत्तीसगढ़ में प्रवेश हो गया है। बूढ़ी पड़वा भी कल नहीं परसों ही थी (नववर्ष)। मध्यप्रदेश इतने दिन से था अब पूर्ण हो गया है और छ. ग. का प्रारम्भ हो गया है। आज का यह अवसर है। जैसा मन लगता है इस कथा को एक-दो बार और पढ़ लेना। संसार एक भयानक जंगल है। इस जंगल में हम भी पार लग जायें। जंगलों में भी ऐसे ऋद्धिधारी मुनि महाराज, केवली आदि की हमें उपलब्धि होगी, इसी विश्वास के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय है

30-3-17 "तर्क नहीं - प्रतिक्रमण कर लो" मध्याह्न 11:40

दो तरह की औषधी होती है - एक औषधी, अनेक औषधी। (सर्वौषधि) अनेक औषधी में कई प्रकार की औषधीयों मिलाकर तैयार की जाती है। इसका ज्ञान होना अति आवश्यक है कि कौनसे रोग में किस-किस औषधी का संयोजन किया जाता है। त्रिकुटी में सोंठ, कालीमिर्च एवं छोटी पीपल तीनों का योग होता है। अब उसमें खारक और मिला देंगे तो उसका रूप ही बदल जायेगा।

एक उदाहरण से समझो। शैलसागर जी भी सुने क्यों की व्यवस्था में वे रहते हैं। चाय कैसे बनती है। अंग्रेज लोग गरम-गरम पानी में चायपत्ती को उबालकर पीते हैं उसी को चाय बोलते हैं। किन्तु भारतीय लोगों ने उसमें दूध और सुगर मिलाकर पीना शुरु कर दिया। एक तो के अनुसार वह ठीक नहीं थी, दूसरा उसका रूप परिवर्तन कर दिया। फिर उसमें भी थोड़े से काम नहीं चलेगा, पुरा गिलास चाहिए वो भी बड़ा वाला।

अंग्रेज लोग जो काली चाय (Black tea) पीते हैं वह कफ निकालने में उपयोगी होती है। अतः औषधी चलाने का विशेषज्ञान होना चाहिए। गुरुजी को मैं अपने हाथ से औषधी बनाकर देता था। अपने पास में ही खरल-बट्टा रखता था। वैद्य जी जैसा बताते वैसा ही बनाकर देता, थोड़ी सी गलती हो जाती तो वैद्य जी डांट देते थे।

वैद्य जी भी पक्के निश्चय वाले थे फिर भी गुरुजी से बहुत प्रभावित थे। गुरुजी के सामने आते ही वे लोग (छगनलाल एवं

इधर-उधर हो जाते थे।

प्रश्न - पूज्य संभव सागर जी महराज ने प्रश्न किया आज आहार सभी ने टीन (नालीवाले) पर खड़े होकर लिया उनके नीचे जीव घात की संभावना हो सकती है ऐसे में हम लोगों के लिए। उत्तर- आहार में कई तरह के दोष लगते हैं श्रावक के आश्रित उद्गम दोष[16], मुनि महाराज के आश्रित उत्पादन दोष[16], भोजन संबंधी अशन दोष[10] ये 42 दोष फिर 32 अन्तराय साथ ही धूम, अंगारादि 5 महादोष में आते हैं। इसीलिए कहा है श्रमण! इन सबका विवेक रखते हुये इनको टालकर आहार लेना चाहिए किन्तु फिर भी क्या किया जाये अतः तुरन्त आकर प्रतिक्रमण करें।

वह कहता है दोष तो लगा ही नहीं; आचार्य कहते हैं यह मत सोच दोष लगा या नहीं; क्यों कि दोष लगना स्वभाविक है अतः प्रतिक्रमण करना जरूरी है। यह एक ऐसा पेपर है जिसमें 100 में से 100 नम्बर आना बहुत कठिन है। क्योंकि इन दोषों पर दृष्टि नहीं जा पाती अतः ये मत सोच की दोष लगा कि नहीं बस अपने को पापी मानकर प्रतिक्रमण करना जरूरी है।

शान्ति विश्राम (दो जगह) एवं छोटा मोहगांव बैलीमेहा 31-3-17 "कठीन पेपर है जीवन के ढलान में" प्रातः9.20

देखो गाड़ियाँ जब ऊपर की ओर चढ़ती है, उस समय उसको कितनी शक्ति लगानी पड़ती है। जब वह नीचे की ओर आती है, उस समय पेट्रोल की भी आवश्यकता लगभग नहीं पड़ती है और बहुत आसान होता है ऐसा लगता है किन्तु यह धारणा गलत है क्यों की ऊपर से नीचे उतरते समय प्राय यह अनुभव में

Date

आता है, ज्यादा शक्ति लगानी पड़ती है। नीचे आते समय गाड़ी मुड़कने, ब्रेक फेल होने की संभावना बनी ही रहती है। चलाने वाला कितना भी कुशल क्यों न हो।

वह व्यक्ति अपने आपको संभालता हुआ, गाड़ी नीचे गिर न जाये जोखिम के साथ सब कुछ बचाते हुये नीचे ले आता है। कल आपने देखा होगा - गाड़ी में बैठकर नहीं चलते हुये (पैदल) आते हैं तब। ढलान है महाराज! इस ढलान को देखकर कई लोगों के जीवन में चढ़ाव है तो कई लोगों के जीवन में ढलान है। ढलान को देखकर अन्यत्र कहीं ध्यान नहीं देता।

वह ड्राईविंग व्यक्ति जोखिम के साथ स्वयं उतर आता है और गाड़ी को भी सुरक्षित ले आता है। मनुष्य जीवन भी अब ढलान की ओर है। जीवन पर्यन्त जो अर्पित किया है, यथा अवसर काम में आये सावधान होकर श्रम करना पड़ता है। आप इस प्रकार सोचते हैं या नहीं। पिता भी, माँ भी, विद्यालय भी, विद्यालय के बच्चे भी उत्तरदायित्व को निभाते हुये इस प्रकार का चिंतन अवश्य करना चाहिए।

चढ़ाव कई प्रकार के होते हैं, बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था तक स्थायी चढ़ाव प्रौढ़ावस्था से वृद्धावस्था तक स्थायी गिरावट होती है। अब, तेल डालने की आवश्यकता नहीं। शरीर को सुरक्षित रखना है जीवन के बारे में नहीं सोचेंगे तो इसे सुरक्षित नहीं रख सकते हैं। जैसे 3। मार्च को अच्छा आज ही है। पूरे साल भर का लेखा-जोखा करते हो या नहीं - बोलो। उसी प्रकार इस जीवन का भी 3। मार्च आता है। एक मुनिमहाराज के लिए उसे भी पाठ्यक्रम में रखा है। संलेखना का समय

Date

जीवन का मार्च 31 है।

उस समय सावधानी से सोचना-देखना है। शेष कार्य कैसे करना है - जोखिम का काम है अन्यथा मुश्किल हो जायेगी। ये पेपर बहुत कठीन है। एक बच्चा आकर कहता है, महाराज आज मेरा पेपर है आप आशीर्वाद दे दिजिए। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवन् आप जानते ही हैं हमारा पेपर कितना कठिन है। आशीर्वाद के लिए तो हम कहेंगे नहीं, आप ही देखकर आशीर्वाद दे दो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

31-3-17 "एकाग्रता का सूत्र" मध्याह्न 11.50

पदस्थ ध्यान के बारे में पहले भी एक-आध बार चर्चा हुयी। इसे अपने जीवन में अपनायें। कोई भी पद का चिंतन करना। धर्म ध्यान के चार भेद बताये - पदस्थ, पींडस्थ, रूपस्थ एवं रूपातीत। ये बतादें श्रेणी में भी धर्मध्यान स्वीकार किया गया है।

द्रव्यसंग्रहकार ने भी पणतीससोलस...... कारिका में बताया की णमोकार मंत्र के कितने रूप बनाकर उसके पदो का ध्यान कर सकते हैं। णमो अरिहंताणं, अरहंत, अ सि आ उ सा अथवा ॐ। जैनेत्तरो में भी नाम साधना का बहुत प्रचलन है जैसे राम-राम-राम....। ज्ञानार्णवकार ने ध्यान के प्रत्यय में पदो को स्वीकार किया है। प्रत्यय का मतलब कारण। उपनिषदो में भी इसका उल्लेख लगभग 118 उपनिषद् इसी उद्देश्य को लेकर मैंने पढ़े थे।

इस पदस्थ ध्यान अथवा नाम साधना से मंत्र सिद्धि भी होती है। एकाग्रता की परीक्षा के लिए भी

Date

गुरु इस पदस्थ ध्यान का प्रयोग करते थे।

समयसार के विशुद्ध अधिकार मे पडिसरणं, पडिहरणं ... गाथा का अर्थ। धारणा के आठ भेद बताये। अपनी धारणा सही बनाओ। प्रतिक्रमण को विषकुम्भ माना किस भूमिका में ये भी देखो। अध्यात्म का अजीर्ण होने के कारण ही ऐसा करते हैं। हमें जवाब नहीं देना है प्रयोग करके दिखाना है। परम पारिणामिक भाव का सही मतलब तो समझो।

उपनिषद् मे क्षीरान्न शब्द भी आया। मतलब दुग्ध क्षीर-खीर मात्र सेवन अथवा एकान्न, एक तरह की आहार में कोई वस्तु लेकर भी मन्त्र साधना की जाती है। नैनागिर में ध्यान में रखे हुये तो रात्रि के 10-11 कब बजे पता ही नहीं चला। मैं तो सबसे यही कहूंगा अध्यात्म की चर्चा तो बहुत सरल है पर प्रयोग कठिन। अतः सभी प्रयोग करो।

एक बात और अब गर्मी का मौसम शुरु हो गया है। निद्रा देवी से बचियो। यह दिन में भी आपके पास आ सकती है अतः नींद नहीं लेना, किसी को भी आज्ञा नहीं देना एवं पदस्थ ध्यान करना इन तीन बिन्दुओं पर यह छोटा सा चिंतन रखा।

विशेष ->

Date

रात्रि विश्राम - जंगलपुर घाट

खैरा - नर्मदा, 1-प-17 "कैसे दूर करें - मन का दर्द" प्रातः 9.30

अभी पढ़ रहे थे - "मेरा सारा दुःख दर्द हरो" पैर में दर्द होजाय, हाथ में दर्द हो जाय, माथा में - पेट में दर्द हो जाय और अनेक प्रकार के दर्द हो जाय, सबका सम्भव है। किन्तु मन में दर्द हो जाय तो ये आज तक बदला नहीं है। ये ही तो गड़बड़ है।

मन का दर्द क्यों होता है, ये समझ में आ जाये तो मन का दर्द ठिक हो जाये। बच्चों को मन का दर्द नहीं होता, आपलोगों से वह दर्द अलग ही नहीं होता अतः उनका कल्याण जल्दी होता है। जिनको अपना कल्याण चाहना है आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं बच्चे बन जाओ, हम सबके कल्याण का ठेका लेते हैं। तुम यदि बच्चों से आगे बढ़ गये तो कोई ठिकाना नहीं क्या होगा? कोई दिनदयाल आयेगा। दिन तो आ सकता है दयाल नहीं। दिन तो दिनता के साथ आयेगा वह समझ गया कि ये अपना काम करवाना चाहता है, हम भी समझ गये हैं।

बच्चों के समान सरल मन हो जाये चिंता की कोई आवश्यकता नहीं। बच्चों के समान सरल नहीं बना तो चारों धाम कहीं भी चले जाओ, कोई ठिकाना नहीं। अपनी सोच को मन के अनुकूल रखोगे तो एक भव में मिलने वाला नहीं है। जिनको मन के अनुकूल बनाना है अपनी सोच को पहले इसे भूल जाओ। सबसे बड़ी कमी मन की अनुकूलता की है। बाकी सब अनुकूलता तो बन सकती है किन्तु मन की अनुकूलता नहीं बन पाती।

कोई बीमारी नहीं है नाड़ी में पकड़ में नहीं आता है, जैसे

Date

एक्स-रे में कुछ नहीं निकला हो तो निकले। एक्स-रे करालो, MRI करा लो सीटी स्कैन करा लो कुछ नहीं निकलेगा। कई लोग भागा-दौड़ी ही करते रहते हैं।

यहां नहीं तो बाम्बे में, बॉम्बे में नहीं तो दिल्ली, दिल्ली में नहीं तो विदेश में, निकल जाये, हो तो निकलेगा। कहीं भी जाओ कुछ भी होने वाला नहीं है। और ऐसे व्यक्तियों की बात सुनते नहीं हैं। हमने कहा है- इसका हल होने वाला नहीं है। बता दिया है। मन के अनुकूल चल रहे हो, पक्का है अभी दूर बहुत है। एक सेकेण्ड में आगे-बढ़ सकते हैं।

मन की बीमारी दूर हो जाये तो। आगम में तो कहा है, विषय-कषाय को लेकर नहीं। इतना ही है, बाकी आप लोग समझ सकते हैं। एक-आध भव में ही मुक्ति बन सकते हैं, लेकिन गारन्टी नहीं ले सकते हैं। इस डिपार्टमेन्ट में गारन्टी कुछ नहीं, जो मन को काबु में करे ये ही गारन्टी है। (माइक नीचे पकड़ने पर) इनको नीचे ले जानेका व्रत है? ये भी मन की अनुकूलता है। सीधा-सीधा हो तो ध्वनि प्रसारण में बाधा नहीं आती। ये मन की की बात है, ध्वनि की बात है।

इस प्रकार आप सभी लोगोंसे यही कहना है जिस प्रकार बाहरी संयम का ध्यान रखते हो, उसी प्रकार भीतर संयम/मन के संयम का भी ध्यान रखो। दूसरों के लिए नहीं कहा जा रहा, अपने स्वयं के लिए उस मन को काबु में करना ही महासंयम है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

1-4-17 संस्मरण डोंगरगढ़ यात्रा मध्याह्न 11.40

एक हफ्ता जबलपुर में ठहर जाते तो क्या होता। पारा 40 से नीचे नहीं भले ही नाम डोंगरगढ़ हो। पिछली बार महावीर जयन्ती बारा सिवनी में करके फिर डोंगरगढ़ के लिए विहार किया था किन्तु गुरुवर का ऐसा पुण्य की दोपहर का विहार जैसे ही प्रारम्भ होता आसमान में बादल छा जाते। एक दिन नहीं प्रतिदिन, गुरुजी ने कहा पुण्य दब जाता है। बालाघाट से डोंगरगढ़ तक लगभग 125 किमी. का विहार किया।

चैत्र मास में इतनी तेज गर्मी किन्तु बाहर सोना (रात्रि) ठीक नहीं। जैसे आषाढ़ में रात्रि में बाहर सोने से लकवा लग सकता है वैसे ही चैत्रमास में भी रात्रि में बाहर नहीं सोना चाहिए। एकदम विपरीत में जाना ठीक नहीं। इन वेगों को समझना अति आवश्यक है। जवान हष्टपुष्ट कम्पनी भी फेल हो सकती है।

"लिख रहा हूँ, यात्रा विवरण मैं, बिना लेखनी" कल जो बताया था प्रस्ताव रखा होगा सभी ने - बोलना कम हो जायेगा।

पिछली बार गर्मी में डोंगरगढ़ में रात में भी भयंकर लू चलती थी कभी बाहर नहीं सोये श्रुतपंचमी के दिन से ही रात में छत पर सो और तेज लू सभी महाराज अन्दर तो आचार्य श्री बाहर इसके पहले आचार्य श्री अन्दर तो महाराज लोग बाहर थे। आ. श्री ने कहा जलवायु तो ऐसा लगता जैसे बिल्कुल समाप्त ही हो गयी हो। अभी 5-6 दिन का प्रवास और है, हमने एक दिन भी कहीं भी व्यर्थ नहीं किया फिर भी इतनी तेज गर्मी हो गयी।

• रात्रि विश्राम - घिरीघोसी

Date

कुई खदान (जैन मन्दिर)

2-3-17 "मंत्र हँसते हुए जाने का" प्रातः 9.20

सूर्य का उदय होता है, तो अंधकार मिट जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं। प्रभु का दर्शन हुआ, तब हुआ जब हम आँखे खोलेंगे। यदि आप सूर्य के उदय होने के उपरान्त भी अपने शयन कक्ष को नहीं छोड़ेंगे, आँखे खोलकर बाहर नहीं आओगे तो उसे दिन नहीं कहा जायेगा।

10-12 वर्ष पूर्व हम यहाँ पर आये थे, ऐसा आप लोग बता रहे हैं, तारीख भी बता रहे हैं। इन सब का महत्व तब जब इस दिनकर के आलोक का उपयोग करें। गुरुओं का आना दिनकर की तरह स्वभाविक है। आप लोग भी आये हो, पर दिन जायेंगे। जैसे अभी हँसते हुये कह रहे हो उसी प्रकार जाते समय भी हँसते हुये कहना है। हँसते हुये चले जायें यही आप सभी के लिए मंगल आशीर्वाद है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

मध्याह्न 11.40

हमें अतिक्रमण की ओर नहीं जाना अपने संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करें ताकि डबल लाभ होने में देर न लगे। 2 करोड़ को 4 करोड़ बना सकते हैं। उमा भारती जब पार्टी छोड़कर जा रही थी तो आ. श्री ने यही कहा - जल प्रबंधन का काम करो। इससे किसान सुभिक्ष एवं पशु डबल होंगे।

अकबर के समय श्री- राज्य का विस्तार चाहते हो तो पहले गौ-वध बंद करो। दया की ओर जाने/मुड़ने से विचार विश्वनिधि हो जाता है। केन बेतवा नदी - बुंदेलखण्ड चमन हो जायेगा। यह जल प्रबंधन अहिंसक होता है। नेता बनकर नहीं मातृ पक्ष स्वरूप बात करो। गंगा माता कहा। जल हमेशा-हमेशा निम्नता की ओर ही ले जाता है। एक को पकड़ो। विस्तार क्यों नहीं होगा।

Date

रात्रि विश्राम - डिमरीन कुआँ

खैरागढ़ 3-4-17 "बाहरी नहीं भीतरी संगीत की ओर आये" प्रात: 9.20

समस्त लोग गीत सुनते हैं। वैसे बोलते रहते हैं, तो किसी को आकर्षण नहीं दे पाते हैं। जब गीत गाते हैं तो अनेक व्यक्तियों का आकर्षण उस ओर होता है, जब अपने-अपने गीत गाते हैं तो आकर्षण समाप्त हो जाता है। फिर क्या करें। गीत से संगीत की ओर सब प्रसन्न हो जाते हैं। वह गीत-संगीत बाहरी है।

विभाजन करना कठिन है। बाहरी संगीत के लिए यह खैरागढ़ प्रसिद्ध है। एक बार यहीं से डोंगरगढ़ की ओर जाना हुआ था। उस समय बिलासपुर की ओर से से अबकी बार जबलपुर-मण्डला की ओर से आये हैं। बाहरी नहीं भीतरी संगीत की ओर आये। पहले बाहरी संगीत की ही जरूरत होती है। यह सीखने आपको इस खैरागढ़ की ओर आना होता है।

संगीत मात्र मनुष्य को ही प्रिय लगता है ऐसा नहीं, हिरण भी संगीत प्रेमी होता है और जिसको देखने से आप डरते हैं ऐसे सर्पराज भी संगीतज्ञ होता है। आपका कभी उससे तालमेल नहीं। सर्प आपको देखकर डर सकता है, किन्तु एक संगीतज्ञ से दूसरा संगीतज्ञ प्रभावित क्यों नहीं होता। ऐसे संगीत से दूर रहें।

प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आपने ऐसा प्रसाद बांटा है जो अलौकिक है उसको प्राप्त करने के लिए बहुत दूरी की आवश्यकता नहीं है। बस समझने का फेर है। इस फेर के हटते ही, मोह राग-द्वेष के बादल हटते ही कोई गीत-संगीत की आवश्यकता नहीं है। ऐसा संगीत

यदि कान गड़बड़ हो तो भी सुन सकते हैं। आप सुन रहे हैं? हाँ। इस बात के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा तब जाकर आपसे सम्पर्क बना। (माइक-व्यवस्था) इस सम्पर्क के अभाव में संगीत का प्रसारण भी नहीं हो पाता।

इस सम्पर्क का महत्व तभी, ध्यान इधर नहीं तो सारा प्रबंधन का भी कोई मायना नहीं। इसके अभाव में सभी मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं। कई प्रकार के लोग समाप्त होने की ओर है या कई युवाओं की घड़ियाँ भी इसी तरह बीत रही हैं। किन्तु जिन्होंने इस दौर में भी प्रभु के संगीत से फिर आत्म संगीत से जोड़कर हैं। जिन्होंने उस आत्म संगीत को पा लिया उन्हें प्रणाम करता हूँ। बहुत पुरुषार्थ किया तब उसे पाया है।

इससे निर्विकल्प, निरीहता आती है। अपेक्षा भी समाप्त हो जाती है। मेरा-तेरा की आवाज भी नहीं आती। दुनिया में कुछ भी होता रहे मेरा-तेरा की ध्वनि उसे प्रभावित नहीं करती। ऐसे ही संगीतज्ञ हमें बनना है। चाहे सैरागढ़ हो अथवा खैर कोई भी गढ़ हो दोनों बातें समान हैं, इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

रात्रि विश्राम - पैण्ड्रीकला

टोलागाँव 4-4-17 "सबको जाना होगा" 9.20

एक बगीचे में फूलों से सजे हुये कई प्रकार के पौधे हैं, चारों तरफ महक फैल रही है। भ्रमर मण्डरा रहे हैं। एक फूल जो डाल पर है नीचे की ओर देखकरके कहता है तुम कैसे बिछुड़ गये हो। यहां हरी-भरी सब सम्पन्नता है,

हमारे पास आ जाओ। वह कहता है- मैं आपके पास ही आया हूँ। चन्द घण्टों की बात है मैं यहाँ नहीं रह पाऊँगा; आप लोग सुन रहे हो? समझ रहे हो? — — — — — — — — — — — — — —

— — — — — — — — जो डाल पर है, वह यह भूल रहा है कि यह स्थायी स्वरूप है। इसके उपरान्त जो फूल खिला है, जो फूल अभी नहीं खिला है उसको कह रहा है- तुम चिन्ता न करो तुम्हारा भी अवसर आयेगा तुम भी खिल जाओगे, जैसे मैं खिल गया हूँ। जो नहीं खिला है वह प्रभु से कह रहा है, मैं भी यदि खिल जाऊँगा तो मुझे भी विदा होना पड़ेगा। बनती को शेष आपके पास ही रहने की भावना है। खिल जाऊँगा तो डाल को छोड़ना होगा। छोड़ने की बात तो आपको ज्ञात ही है। — — — — — — — —

— — — — — — — अपने यहाँ भी त्रस गति में कुछ ही समय बाकी अनंत काल तो निगोद में ही नहीं चाहे तो भी व्यतीत करना पड़ता है। प्रभु से प्रार्थना करते हैं त्रस नाड़ी के भीतर ही हमारा पुरुषार्थ सही दिशा में पूर्ण हो ताकि लाभ ले सके। इसमें किसी प्रकार की घूसखोरी नहीं होती, नहीं चोरी-चपाटी हो सकती है। भले ही दिन-दयाल कहके दिनता दिखाओ तो भी करुणा करने वाले नहीं। अधिक गम्भीर हो जाओ अथवा प्रमाद करो तो भी नहीं। — — — — — — — — — — — —

— — — — — — — — — — — इतना अवश्य है कि यदि समय पर बीज बोया जाए तो फल जायेगा। प्रभु से प्रार्थना करते हैं। पाप का फलता है हमें उससे डरना नहीं क्यों की हमारा अपना ही कर्म है। हमें डरना है उनसे जो विषयों की ओर ले जायें। उससे भी डरना है, जो हमें धर्म से विमुख करें।

इसके लिए सदैव जाग्रत रहना जरूरी है। सम्यग्दर्शन भी इसी अवस्था में होता है। हमारा यह क्षायोपशम सम्यग्दर्शन क्षायिक सम्यग्दर्शन हो जाए तो बेड़ापार हो जाए।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जै

शास्त्री विश्राम - बिजना / बोबुरी

शिवपुरी, 5-4-17 "मोक्षमार्ग में गर्म - ठण्डी पट्टी" प्रातः 9.20

चिकित्सा प्रणाली में उपरीम चिकित्सा भी होती है। उसमें चिकित्सक कहता है सेक करो - सेक करो का अर्थ क्या? तापमान से चिकित्सा करो। ठण्डी या गर्मी पट्टी से सेक करो। वह कहता है ठण्डी-गर्म पट्टी में तो दोनों आ रहे हैं। हाँ-हाँ दोनों एक साथ किये जाते हैं। फिर भी मुख्यता गर्म की होती है। कभी डाक्टर लोग कह देते हैं इन्हें बर्फ की सिला से सेक करो।

मैं सोचता था, बर्फ ठण्डा फिर उससे कैसे सेक? समझ में आया। साधक दो प्रकार के एक गर्म प्रकृति के दूसरे ठण्डे प्रकृति के, ठण्डे प्रकृति के क्षमा आदि की विकृतियों को दूर करने के लिए साधन लेते हैं। दूसरे गर्म प्रकृति के ऐसे साधन जिनसे पसीना भी सिक जाता है।

दोनों चाहे गर्म हो या ठण्डा तापमान होते हैं, ये आपको याद करना चाहिए। मोक्षमार्ग में दोनों प्रकार की चिकित्सा होती है। अपनी - अपनी प्रकृति को समझकर चिकित्सा करो। इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जै

Note - शौच से लौटते समय (मण्डला में) अभी तक तो नर्मदा का साथ था, अब आगे गर्म मिलेगा, इसलिए जल्दी ही विहार करना होगा।

5-4-17 "साधना की बुनियाद है संलेखना" मध्याह्न 11.40

मुनि श्री योगसागर जी द्वारा प्रश्न - आपने अपने शरीर को समय से पहले ही बुड्ढा बना लिया है। पीछे से देखें तो ऐसा लगता है 80 साल के बुड्ढे जा रहे हैं। हाँ हम लोग तो छोटे हैं आज बड़े महाराज ने भी सही कहा - प्रसाद सागर जी। तुम लोग मेरी भी तो सुनो। मैं कहाँ कह रहा हूँ कि मैं 80 का नहीं हूँ I am Running Seventy इसमें 70 से लेकर 80 तक आ जाता है।

संलेखना के लिए 12 वर्ष क्यों बताये। मूलाचार, मूलाचार प्रदीप, भगवती आराधना में क्या पढ़ा है। मानता हूँ हमारा इतना पुण्य नहीं है कि हमें आज कोई सहारा देने वाले (निर्यापकाचार्य) मिलें किन्तु तैयारी तो करना ही होगा। मेरे पास जितना अनुभव है उसी आधार पर तथा गुरुजी से जो मिला है उसी अनुभव के आधार पर तैयारी करना होगा। अपने पास आगम चक्षु साधु ही है। हव कहना सीखो (हव कहने में आनंद आता है।

निर्दोष सागर जी - रिष्ट (चिह्न) देखकर संलेखना के बारे में बताया। रिष्ट की बात मैं नहीं करता। हां, प्रवचसार में आया कि आँखें काम करना कम कर दें तो संलेखना ले लो। दांतों की बत्तीसी चली जाय तो किन्तु अब नयी बत्तीसी की बात करोगे तो क्या संलेखना लोगे। संलेखना भी साधना की बुनियाद है। बीज है। इस बीज को ही खराब कर देगे तो आगे के लिए क्या बोयेगे।

अभिमान नहीं कर रहा हूँ। मैं उसी अनुसार अपने शरीर को संलेखना के लिए तैयार कर रहा हूँ। वैसे ही साधना चल रही है

आप लोग कह रहे हैं दूध ले लो या रसी कर लो। विज्ञान भी मानता है जब शरीर में एक ही चीज की मात्रा ज्यादा हो जाये तो वह नुकसान देय होती है। फिर क्या 50 वर्ष तक मैंने दूध नहीं पिया क्या?

आप सभी से यही कहूँगा अपना भला करो, पर का भी हो जाये तो इसमें कोई बाधा नहीं है। किन्तु अपने को मत भूलो। प्रयोग करो। मैं थ्योरटीकल में बिल्कुल विश्वास नहीं करता प्रेक्टिकल ही मुख्य है। अपनी तैयारी करो। अन्य लोगों को भी तैयार करो एवं अपनी भी तैयारी करो।

बहुत दुर्लभ है यह सल्लेखना। आप लोग समझो इसको अच्छे तरीके से तभी अच्छे से सल्लेखना कर सकते हो/करा सकते हो। संहनन तो जो प्राप्त है उसी के अनुरूप हमें करना होगा। सामने वाले को तैयार करो फिर उसका जैसा पुण्य। हम-आप क्या कर सकते हैं। शरीर को सदैव तैयार रखो। मिलट्री की तरह बस प्रत्येक समय तैयार रहो। I am Ready to face it. प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि एकत्व भावना का चिंतन करते हुये आयु पूर्णता को प्राप्त हो।

कब तक हम नर्सरी में ही पढ़ते रहेंगे। प्रतिदिन पाठ करते हो - "न संस्तारो भद्र! समाधिसाधनं" श्रावक भी उस सल्लेखना की भावना रखता है। आयु कर्म कब पूर्ण हो जाय पता नहीं। क्षीरसागर जी का सबने देखा। अपनी तैयारी पूर्ण रखो आयु कर्म शेष रहे हमें इसमें कोई बाधा नहीं है। हमें तो हमेशा तैयार ही रहना चाहिए। रसाणुवेक्खो कहा है - रसों की उपेक्षा तो रस लेने को भी कहा है। दोनों का

Date

अवस्थानुसार ध्यान रखना जरूरी है। अब तो जो थे 2-4 ग्रन्थ [illegible] नाम बताये उन्हीं के आधार एवं अपने अनुभव पर आगे बढ़ते जाना है।

श्वेताम्बरों में तो हजारों साधु हुये लेकिन एक ने भी संथारा लिया हो / सल्लेखना हुयी हो ऐसा नहीं किया। दिगम्बरों में भी कोई एक-आध हो जाये तो बहुत। आर्यिका की तो मैं बात ही नहीं करता। इतने आचार्य हुये हैं किन्तु सल्लेखना कितनों की थी आप सब जानते हो।

अतः हमें तैयारी करने दो। आप लोग चाहे कुछ भी कहें। मैं अपने आप में पूर्ण संतुष्ट हूँ। आप जानते भी हैं दूसरे की असंतुष्टि को संतुष्टि में बदलना मेरा काम नहीं, मैं तो अपने को संतुष्ट देखना चाहता हूँ। जो अभी पूर्ण रूप से है। बस धीरे-धीरे उस ओर बढ़ते जाना है। सतत अभ्यास से ही इस दुर्लभ लक्ष्य को साधा जा सकता है।

रात्रि विश्राम - अछोली

प्रातःकाल डोंगरगढ़ में भव्य प्रवेश - पूर्ण तिथी - दशमी 6-4-17

o अभी तक मैं प्रवासरत था ; आज प्रवास शुरु हुआ है।

o श्रावकों के साथ ज्यादा सम्पर्क रखेंगे तो लुट जाओगे, इस लूट से आपको कोई भी नहीं बचा पायेगा।

डोंगरगढ़ - चन्द्रगीरी

6-5-17 "मन में हो विश्वास - हम होंगे कामयाब" प्रातः 9.20

यहाँ से जब हमारा विहार हुआ था तो यहाँ के लोग दूर तक गये। आज विहार करते हुये पुनः इस क्षेत्र पर आना हुआ। आप लोग अपने अर्जित धन का सदुपयोग ऐसे ही क्षेत्रों के विकास में करें। यहाँ के इन लोगों ने भी इस दायित्व को अपने कंधों पर लिया एवं पूरी योजना बनायी। पूछा कोई विकल्प तो नहीं, सबने कहा नहीं कोई भी विकल्प नहीं है।

प्रतिभा स्थली भी शुरू हो गयी। छात्राओं के रहने की पूर्ण व्यवस्था। इन लोगों द्वारा प्रतिदिन विधान करना फिर भी सभी व्यवस्थायें देना। जो कमी है उन्हें भी दूर करने का प्रयास किया है। और रामटेक वालों को भी आशीर्वाद दिया। बच्चे भी आशीर्वाद माँग रहे हैं। एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के साथ जोड़ना है। तन - मन - धन लगाकर जोड़ने का प्रयास करना है। क्षेत्र भी तभी बना रहेगा। इसकी गाथा ऐसी कि रहन-सहन, खान - पान सभी कुछ सही दिशा में ले जाने का काम करेंगे।

आप लोग समय पर सभी काम करें। इतना ही पर्याप्त आज अभी आये ही हैं। दृढ़ संकल्प के बिना ये कार्य कभी भी इस प्रकार प्रारम्भ हो ही नहीं सकता। प्रारम्भ हो जायें तो वह अन्त तक नहीं पहुंच सकते हैं। यहाँ का काम प्रारम्भ दृढ़ता के साथ इसी प्रकार हुआ है। प्रतिभास्थली की भावना रखी। आप लोग चाहते हैं, आज युग भी चाहता है, इसी अनुसार होता चला जाये। यहाँ के समाज वाले भी निवेदन कर रहे थे - हमारे

लिए कुछ मिल जाये। हां हमने भी सोचा - [illegible] नवमी तो होगयी, अब महावीर जयन्ती इसके उपरान्त हनुमान जयन्ती लगभग एक सप्ताह तो है। आप लोगों की मांग को पुरा किया। क्षेत्र के लिए काम करना है। पुरा का पुरा एक सप्ताह आनंद के साथ मनायेंगे। (आवाज नहीं थी)

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

7-4-17 "ज्यादा देर विश्राम ठिक नहीं" प्रातः 9.20

जब कोई काम में विशेष रूचि के साथ लग जाते है तो ऐसी स्थिति में अपना कार्य करने का रूप रहता है, वह बहुत अच्छा रहता है। अब अन्तराल भी पड़ जाता है, कोई बाधा नहीं रहती है किन्तु वह अन्तराल बहुत दूर तक नहीं पड़ना चाहिए। अन्तर पड़े भी तो बहुत छोटा हो। हर क्षेत्र में यह नियम लागु होता है।

इसे नियम कहो अथवा आवश्यक कहो एक प्रकार से लेकिन उसके पीछे हम जाग्रत रहते है। इस बात को कहना चाहता हूं, जैसे - पंगत बुलाते है, जो चीजें बनायी है परोसते है। पंगत में जितनी संख्या उस संख्या के हिसाब से ही व्यवस्था का ध्यान रखते है। बीच में बिल्कुल ही संख्या कम हो गयी तो क्या करते है - बता रहा हूं। जैसे पुड़ी निकाल रहे है तो थोड़ी सी नीचे से आँच कम कर देते है ताकि घी ज्यादा खर्च न हो।

ठिक बोल रहा हूँ न मैं। हमने आप लोगों को बताया है। आप लोगों को अन्तराल ज्यादा पड़ गया तो पुनः गर्म करना होगा। हमने सोचा इन लोगों ने भी 3-4 साल में कड़ाव के बीचों छेद नहीं बनाया।

Date

यह प्रसन्नता की बात नहीं, व्यवस्था की बात है। हर क्षेत्र में इसका उपयोग कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के लिए भी छुट्टी ज्यादा नहीं होना चाहिए नहीं तो परीक्षा के समय दिमाग ठण्डा हो जायेगा। कड़ाव इतना गर्म बना रहना आवश्यक है, ठण्डा नहीं, हाँ संताप पैदा न करे इतना आवश्यक है। विद्यार्थी भी ठण्डा नहीं गर्म बनाये रखें।

इस समय अवस्था में इतना ही काम करते हुये गति को बनाये रखना चाहिए ताकि आगे का काम भी हो सके। इतना ही पर्याप्त गर्मी का वक्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

7-5-17 "अनिवार्य है शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन" मध्याह्न 2.15

शिक्षा किसे और शिक्षा किसकी देना ये बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा और भारत संगोष्ठी में भी ये उदाहरण दिया था। परखी - बोरे को खोलने की जरूरत नहीं पेट में घुसायी हाथ में लेकर पहचान कर लेना की माल कैसा है। भारी है या हल्का। माल हो तो परखी लगायें अब तो वायदा व्यापार होने लगा जो बहुत गलत है। परखी के उदाहरण से कि - कौनसी शिक्षा देना आप जान सकते हैं, और अपना सकते हैं।

Read एवं लर्न (Learn) में अन्तर है। समझदार एवं पढ़ा-लिखा होने में अन्तर है। गुरुजी की बातों से लगता था वे कभी भी परीक्षा के समर्थक नहीं रहे। परीक्षा से भी ज्यादा परीक्षा देने

Date

की प्रक्रिया को चाहा। उसका आत्म-विश्वास कैसा है इसे देखना जरूरी है। जानना और सीखने वाला होना चाहिए। पढ़ना सीखना नहीं तथा सीखना पढ़ना नहीं।

व्याख्या कैसी करें इसका ध्यान रखना जरूरी केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं होता। तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। "मनसा मेरु गम्यते"। आज महावीर को पढ़ा जा रहा है, महावीर को लिखा जा रहा है, मैं महावीर को जीने जा रहा हूँ। टीका को गुरुनाम गुरु कहा है। व्याख्या महत्वपूर्ण होती है। पद्धति को शिक्षा नहीं कहा जाता। पहुँचने का मार्ग है- मार्गणा कहते हैं। वह साधन है।

प्राप्तव्य की उपलब्धि पद्धति कहलाती है। गेतव्य अलग, पद्धति अलग ऐसा नहीं। वाच्य-वाचक, ज्ञाप्य-ज्ञायक, अभिधान - अभिधेय, निमित्त-नैमित्तिक, ज्ञेय-ज्ञायक इन सभी संबंधों को अर्थ को समझने में देर नहीं लगेगी। घण्टों का नहीं मात्र सेकण्ड का काम है। आज करो या कल करो इसे स्वीकारना होगा। हव कहकर स्वीकार लो तो समयपर सीख जायेंगे।

निमित्त-नैमित्तिक संबंध को न समझने के कारण ही आज निश्चय - व्यवहार का तुफान खड़ा कर रखा है। इसे समझे बिना समयसार 108 बार क्या 1008 बार पढ़ लो शुद्ध नहीं होने वाला। अभिधान में इतना रच गया कि अभिधेय का अवसर ही नहीं है। 70 वर्ष में शिक्षा - पद्धति

ऐसी कि पाठ्यक्रम का ही निर्धारण नहीं हो पाया। जो दिपस्तम्भ है उसका ही पता नहीं है।

जिनके पास दृष्टि नहीं है, उन्हें भी संकेत से समझाया जाता है। शब्द पंगु होते हैं। ऐसे संकेत बिना शब्द के भी तलस्पर्शी हो। हृदयस्पर्शी हो, मर्मभेदी हो।

माँ को 100 शिक्षकों से भी श्रेष्ठ माना है। एक ने कहा - पढ़ी-लिखी माँ हो। उसने कहा पढ़ी-लिखी भले ही न हो समझदार जरूर हो। इतिहास छानने का प्रयास करो मोती मिलेंगे। कटीबद्ध हो तो फिर विरोध से डरना नहीं। निर्णय कर लिया तो विकृति को हटाना जरूरी है। आज किताब पुरानी है कवर नया है। पाठ्यक्रम बदलना अति आवश्यक है। पाठ्यक्रम एक बार बन गया अब उसमें रद्दोबदल नहीं करना चाहिए। निमित्त-नैमित्तिक संबंध को समझो।

उदाहरण - गुलाब का फूल है, सामने स्फटिक मणी रखी है। सफेद से लाल हो गयी, आकार वही, वजन उतना ही है। निश्चय वाला गुलाब के कारण लाल हुयी ऐसा कभी नहीं मानता। निमित्त - उपादान की सही समझ हो। व्यवहारी। हाँ गुलाब कालेकत्थर के सामने हो तो उसे लाल नहीं कर पायेगा। अतः निमित्त का ही है ऐसा भी नहीं है। शिक्षा पद्धति में परिवर्तन अनिवार्य है। होनहार को समझना है। ज्ञान डालने की प्रक्रिया नहीं है। ज्ञान से भर दो जैसे फैक्ट्री मे Raw मेटेरीयल डाल देते है और Production हो जाता है, ऐसा नहीं है। पहले खाली कर दो फिर हम भर दें।

कमी क्या है, उसको देखो। भाषा के बारे

बारे में उस लेख में आया है। वर्तमान में की छिंद्र के इस युग में भाषा कहाँ पर खोई है ये तो भगवान ही जानता है। लैंग्वेज - नोलेज नहीं है। नोलेज- ज्ञेय नहीं है।

अन्यथा नहीं लेना आज नजान है क्योंकि ज्ञेय से विमुख है। लैंग्वेज को ही पकड़ लिया है। बिना भाषा के किसी वस्तु को जानने का मंत्र नहीं बताया जा सकता। सीखना और जानना दोनो पहले से अलग है। ये दोनो ही मुख्य हो उपसंहार में एक बात और कि जो भी सीखा जाता है, उपयोगी रहता है। जीवन में कभी निष्प्रयोजन नहीं रहता, कभी भी काम आ सकता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

8-4-17 "चढ़ाव की प्रेरणा देता उतार" प्रातः 9.20

आप सभी ने झूला देखा होगा किन्तु ये याद रखें किसी के सहारे के बिना झूलना है। जैसे साइकिल चलाते-चलाते ऐसे निकल जायेगें कुछ भी हिलना नहीं चाहिए। अब उस नसैनी पर बैठ जाओ और चढ़ाओ जितना चढ़ा सकते हो उतारने की अब कोई आवश्यकता ही नहीं। वो क्या करता है धीरे- धीरे पांवो के बल सामने करता जाता है फिर उसमें गति आ जाती है।

धीरे - धीरे उसे वेग के साथ एक तरफ ज्यादा कम जोर देकर चलाना प्रारम्भ कर दिया। बाद में जो आनन्द लेना था वह आनंद लेना प्रारम्भ कर दिया। हम यह पूछना चाहते है किसी भी क्षेत्र में विकास क्रम कैसे प्रारम्भ होता है? विकास तो विकास के क्रम से प्रारम्भ होता है ऐसा इनका कहना है। वह चढ़ाने के समय में तो चढ़ा रहा है

Date

किन्तु उतारने के समय भी चढ़ा ही रहा है। यह पैरों के द्वारा भी किया जाता है। उस झूले में खड़ा रहता है, उसको भी अलग प्रकार से खड़ा होकर दोनों हाथों से दोनों ओर की रस्सीयों को मजबूत पकड़े रहता है।

कभी-कभी पैरों की वह नसैनी खिसक भी जाए तो भी वह सुरक्षित रहता है, क्यों की दोनों रस्सीयों हाथों से पकड़ रहता है। जीवन की यात्रा है मंजील की ओर चली जाती है चाहे वह संसार मार्ग हो या श्रमण मार्ग हो, बालकों के लिए हो या पालकों के लिए हो, विद्यार्थी हो या शिक्षक ये सारे के सारे सीमा में बंधकर ही काम करते है।

सफलता को दृष्टि में रखकर काम करते रहते है ऐसी नजर बनी रहती है। विद्यार्थी जानता है कि कौनसे विषय में मैं कमजोर हूं, उस पर ध्यान देता है किन्तु ऐसा भी नहीं की कमजोर पर ही पूरा ध्यान बलजोर विषय था उसमें नीचे आ गया (शेष विषयों के प्रति उपेक्षा नहीं, हाँ कुछ कटौती कर सकते है। जीवन यात्रा में भी इस प्रकार करते हैं। जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर अपनी दृष्टि को उसी अनुसार रखना साथ ही अनुभव को और दृढ़ करते हुये पालन करना चाहिए।

यह सब प्राकृतिक होना चाहिए। प्राकृतिक का अर्थ स्वभाविक हो - बनावटी नहीं। हमारे यहां प्राकृतिक का अर्थ कर्मों से मीलते है। कर्म कभी देखने में नहीं आता, उदय देखने में आता है। जब बांधते है तो नहीं उदय में आये तब पता चलता है। अन्यथा ये कर रहा होगा - वो कर रहा होगा ऐसा विचार करता है। प्रकृति के माध्यम से कर्मों की लीलायें चलती रहती

Date

है। कभी खट्टा तो कभी मीठा का अनुभव कराती रहती है। इनमें वह अस्थिर - गाफिल नहीं होता।

मोक्षमार्ग में चलने वालों के लिए यह हमेशा ध्यान देने योग्य विषय है। एक - एक पल की अनुभूतियाँ ही आपको सजग करती रहती है, किताब पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। तो फिर क्या करें? प्रवृत्ति के आधार पर ही सुख - दुःख होते है, ऐसा कुछ न करें की दुःख का कारण बन जाये। आगे लेकर न लग जाए इसलिए सदैव देखकर चलने का प्रयास करना चाहिए।

विद्यार्थी प्रायकर के तनाव में या बहाव में आ जाते हैं, लेकिन यह स्वभाविक रूप है। कर्मों पर आधारित है। कर्म भी किसी दूसरे के नहीं अपने ही किये होते हैं। यह सूत्र जिसके पास है वह स्वयं ही नहीं सम्पूर्ण समाज - राष्ट्र को व्यवस्थित कर सकता है। यह सूत्र हमें गुरुओं से प्राप्त होता है। आंधी हो या तूफान तो भी कभी-कभी पीछे भी आ जाये तो आगे बढ़ने की तैयारी रखते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

छ-५-17 "प्रकाश में लाओ - इतिहास को" अपराह्न ५.००
"लिख रहा हूँ, यात्रा विवरण में, बिना लेखनी"
कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, की लगभग 32000 संस्थायें वह भी, शिक्षा पद्धति को लेकर प्रश्न चिन्ह लगा दिया, मात्र अंको पर (नम्बर) ध्यान देने वाली शिक्षा में श्रद्धा नहीं। भारत के इतिहास को देखो। दूसरों की बातों में मैं आने वाला नहीं हूँ। विकास का मायना क्या!

Date

भारत विकसित देशों में है विकासशील में नहीं। यदि आप विकासशील मानेंगे तो मैं विरोध करूंगा। अर्थ क्या वस्तु है? अर्थ का मुल्यांकन क्या? अर्थ का अर्थ क्या है, आपसे पुछता हूँ, वैसे मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ!

हाँ, अर्थ का मतलब वस्तु से है। वस्तु के मूल्य से है फिर पिछलग्गु क्यों बने हो। मैं संसाधन उसी को बोलता हूँ, जो जीवन में उपयोगी हो। हस्तकथा के इतिहास को बताने वाली यह पुस्तक सबको पढ़नी चाहिए। "कढ़ाई-बुनाई का इतिहास"। इसमें लिखा है विदेशी वस्त्र पहनने का मतलब एक भारतीय को बेरोजगार बनाना। अब समझ आया कि विदेशी वस्त्रों की होली जलाना कितना सार्थक था। 70 वर्ष यों ही निकाल दिये। ये पुस्तक मिलना भी भाग्य है।

कोई भी साहित्य फोकट की चीज के रूप में भी क्यों न मिले कभी नहीं पढ़ना चाहिए। आपने उस किताब को अच्छा बताया, मैं भी मानूँ यह जरूरी नहीं है। कोई मेरी चौकी पर लाकर रख देता है तो मैं पहले उसे उठाकर अन्यत्र रख देता हूँ। अपने समय को अन्य साहित्य पढ़कर अपव्यय मत करो। एक-एक क्षण को इतिहास की गवेषणा में लगाइये। जिन्होंने ऐसा काम किया उनको प्रकाश में लाना भी जरूरी है। बहुत बड़ा कार्य है।

इसीलिए वे लोग कह गये कि जो इसका जिर्णोद्धार करेगा मैं उनका दासानुदास मानूंगा। वे प्रतिक्षा कर रहे हैं। अपनेशी

आपने इन विषयों को उठा दिया तो प्राण आ जायेंगे। मेरा कहना सार्थक हो जायेगा।

उनकी उस सोच का संकलन तो कर लो। 60 वर्ष लिखा गया है यह तो सोने की चिड़िया से भी बढ़कर लगी। आगे का शब्द मैं नहीं बोलता। भूल रहे हैं आप लोग। अपने आपको पता नहीं दूसरे को पता थी तो और गलत हो गया। उसी को विकास मान लिया यह और गलत है। हमने भोपाल में ही रख दिया है ऐसे विकास को।

यह पुस्तक हम आप लोगों को मुफ्त दे रहे हैं पर इतिहास को सभी पढ़ेंगे। यही इसका सही मूल्य है। सुरक्षित रखना ये नहीं कि ताला में रख दिया, तिलक लगा दिया। योग्य व्यक्ति तक पहुँचाना जरूरी है। इसी में से कुछ बिन्दु निकालते जाइये। तरो-ताजा मिलेगा। भास्कर से भी जल्दी काम हो जायेगा। प्राचीनता नष्ट न हो। मुख जाग्रत हो जाये।

करोड़पति के घर में भी हतकरघा होता था। महिन/पतले वस्त्र चाहिए तो महिन सूत कातना प्रारम्भ करो। जैसे भोजन जैसा चाहते हैं वैसा बनाते हैं। आज की हालत उठ जाय तो बैठ नहीं सकता, बैठ जाये तो उठ नहीं सकता। "अनुशासन" वाले वस्त्रों में परिवर्तन की शुरुआत, अपने से ही करें तो और अच्छा है। इन वस्त्रों में तापमान से प्रभावित (अधिक), चर्म रोग एवं सुविधा भी नहीं रहती। आप क्या चाह रहे हैं? यह वस्त्र

गर्मी में ठण्डा, ठण्ड में गर्म होता है। किन्तु पागलपन है जो छोड़ नहीं रहे हैं। स्वाभिमान होना चाहिए। अविलम्ब होना चाहिए।

जब हानिकारक है तो [illegible] की क्या जरूरत है। एक बार एक सेठ जी आये अपने लड़के के साथ। वह फटी हुयी जिन्स पहने था हमने सोचा फट गयी होगी सेठ जीने कहा नहीं यह अभी बिल्कुल नयी लेकर आया है। जांघ के पास से फटा, नीचे तक पूरा फटा हुआ। यह पहनाव दरिद्रता का प्रतीक है। मानसिक दरिद्रता का भी। पहले यदि फट भी जाता था तो तुरन्त पैबंद लगाकर अथवा सिलकर ही बाहर निकलते थे।

आप चाहें तो इन आरोग्यप्रद वस्त्रों का ही उपयोग कर सकते हैं। ऐसा कोई भी देश नहीं बचा था जो भारत से इन वस्त्रों को न मंगाता हो, चीन भी नहीं बचा। थान के थान भरकर विदेश जाते थे। आज उलटा हो गया। आप लोग घूम गये - भ्रमित हो गये। अपनी ही चीज का मूल्य नहीं समझ पाने के कारण लुट रहे हैं, वे लोग लूट रहे हैं। इतना तो जानो वे शीत कटिबंध प्रदेशों में रहने के कारण टाइट वस्त्र पहनते हैं। आप लोग तो 50 के तापमान में रहने वाले हैं। ज्यादा पढ़े-लिखे होने से विचलित हो गये।

भारत का इतिहास पढ़ो, हमें दूसरे की आलोचना नहीं करना है। अच्छा हुआ आप लोगों ने पाठ पढ़ा - सीख मिली। जिसमें लाभ है उसे स्वीकार कर लो तथा हानि है उसे छोड़ दो। समय कुछ ज्यादा ही हो गया। प्रश्न- सुकुमारी [illegible], समझ में नहीं आया। एक बार पढ़ने से ही सब समझ में नहीं आता। दुबारा पढ़ो दुगना आयेगा। उसी को पढ़ना, दूसरी किताब को नहीं। जितनी बार पढ़ोगे

Date

उतना ही समझ में आता जायेगा। बहुत ज्यादा नहीं बहुत बार पढ़ना चाहिए।

"करत-करत अभ्यास के, जड़मती होत सुजान"
"रस्सी आवत-जावत है, सिल पर पड़त निशान"

यह कालीदास के लिए लिखा जो कितने बड़े विद्वान बन गये। आज पढ़ना-लिखना गौण होता जा रहा है, चिंतन की तो बात ही क्या? इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

9-4-17 "आओं खाली हो जायें" प्रातः 9.20

जो खाली हुये हैं उनको याद करो। आज भगवान महावीर स्वामी की जयन्ती है। वे पूर्ण खाली हो गये तब महावीर बने। आपके पास भी जो भरा है उसे खाली करना है। मध्याह्न में भी आज रखा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

दूरदर्शिता - "बात ढोंगरगढ़ प्रवेश के पूर्व की है। दो-तीन पूर्व तय हुआ कि 6 तारीख को पूर्णा तिथी है अतः मंगल प्रवेश सुबह-सुबह हो ले। कुछ महाराज जी ने एवं ढोंगरगढ़ बस्ती के लोगों ने चर्या का लाभ लेने के लिए कहा प्रवेश दोपहर में हो जाये तो ठीक रहें। आपने कहा गर्मी तेज है - स्कूल के बच्चे एवं बाहर दूर से आने वालों का क्या होगा? अतः सुबह ही प्रवेश उचित रहेगा। जिससे अधिक लोगों का भला हो - लाभ हो ऐसा निर्णय गुरुजी लेते हैं।"

Date

9-5-17 "महावीर को पाना - णमोकार जपना" प्रातः 10.45

ध्यान की साधना के बारे में आज सभी से बात की थी। कुछ लोग उस पद्धति ध्यान को कर भी रहे हैं। मुनियों के कृतिकर्म में प्रतिदिन 28 कायोत्सर्ग करते है। इससे दिन भर में इतने णमोकार मंत्र की जाप तो होती ही है।

मूलाचार में एक स्थान पर प्रश्न उठाया कि कायोत्सर्ग में णमोकार मंत्र ही क्यों करते हैं? इस प्रकार णमोकार मंत्र का प्रयोग करने से यह हमारे श्वांस-श्वांस पर बस जाये और अंतिम समय संलेखना के वक्त यह साधना काम आ सके। उस समय इस णमोकार मंत्र का ही चिंतन चलता रहे। इस लिए ऐसा करते हैं।

उदाहरण - जैसे कोई कम्पनी में लोग काम करते हैं। प्रतिमाह उनके वेतन में से कुछ राशि काट ली जाती है उसे प्रोविडेन्ट फण्ड (स्थायी निधी) कहते हैं। जब वह व्यक्ति 60 वर्ष का हो जाता है, रिटायर्ड होता है तो उसकी वह जमा पूंजी एक साथ उसको मिल जाती है जो बहुत काम की होती है। इसी प्रकार हम प्रतिदिन णमोकार मंत्र की जाप करेंगे तो संलेखना में इसका बहुत बड़ा महत्व होगा।

कर्म निर्जरा का सबसे सुगम एवं अच्छा माध्यम है - णमोकार मंत्र का जाप करना। आज महावीर जयन्ती है। हमने सोचा प्रतिदिन यदि एक व्यक्ति 1 माला करता है तो एक माह में 300 माला, चातुर्मास में अभी तीन माह है तो 1 लाख जाप प्रत्येक की हो

Date

जायेगी। सभी को यह संकल्प ले लेना चाहिए। इससे कर्मों की निर्जरा होगी एवं समय का सदुपयोग होगा। दूसरों (श्रावकों) से समय की कटौती होगी।

गर्मी भी तेज है। एक जगह आया - पंचपरमेष्ठी की आराधना को स्वाध्याय कहा। पंचपरमेष्ठी का मतलब णमोकार मंत्र की जाप करना ही स्वाध्याय है। जो लोग इसे बालाजी-भोमिया जी की तरह मान लेते हैं, वे लोग इसे समझ ही नहीं पाये। स्वयं वीरसेन महाराज ने धवला में एक जगह नहीं दो स्थानों पर लिखा - "अरिहंत णमोक्कारो संपहिय बंधादो असंखेज्ज-गुण कम्मक्खय कारओत्ति तत्थवि मुणीणं पवुत्तिप्पसंगादो।" (ध.पु. [illegible]) संयमी हो या असंयमी हो इस णमोकार मंत्र को प्रत्येक व्यक्ति हर अवस्था में जप सकता है।

निश्चय वालों को भी समझ में आयेगा। सामने वाले पर भी प्रभाव पड़ेगा। प्रभाव पड़े इस उद्देश्य से हम क्रिया न करें। हमारा उद्देश्य तो मात्र कर्म-निर्जरा का होना चाहिए। एक बात और जैसे रात में बिना बोले या बिल्कुल कम बोलकर काम निकाल सकते हैं ऐसे ही दिन में भी करने लगें तो क्या बाधा है। असंयमी तो कभी आपको छोड़ेगा ही नहीं। जितना भी समय देंगे, व्यर्थ ही चला जायेगा। बिना जरूरत के बोलना अनावश्यक बोलना भी असत्य की कोटी में आता है इसलिए वचन का कम प्रयोग करो। जैसे बिजली की कटौती कर बिजली बचाते हैं वैसे ही वचन का कम प्रयोग करने से ऊर्जा की बचत होती है। ज्ञानार्णव में भी पदस्थ ध्यान के बारे में कई स्थानों पर बताया।

Date

10-5-17 "आओ सुखायें मोह रूपी जहर" प्रातः 9.20

आप लोगों को सुनने में आ गया होगा, एक कड़ी (कड़वी) तुम्बी होती है, एक कड़ी नहीं होती है किन्तु खाने में आ जाती है। कभी-कभी खाने की तुम्बी यानि लौकी में भी वह कड़वाहट आ जाती है। जो तुम्बी कड़वाहट से भरी हो वह सेवन में आ जाए तो मरण होता है।

कब तक? जब तक वह सरजस्क पेट में गीलापन को लेकर रहती है। किन्तु जब उसको बीज के लिए रख दिया जाता है, सुखाने के लिए रख देते हैं। धीरे-धीरे वह पूरी सुख जाती है तब किसान उसके भीतर जो कुछ भी भरा है, बाहर निकाल लेता है बीजादि जो भी होता है। अब उसमें तेल, घी या रखने योग्य पदार्थ जो होते हैं उन्हें रख लेता है।

हम अब पूछना चाहते हैं जिसकी प्रकृति विषाक्त थी वह प्रकृति अब कहाँ चली गयी। यह है एक सीमा जो विषाक्त पना था उसको बाहर निकाल देते हैं, तब वह तुम्बी काम आती है। प्रायकर लोग उसमें तेल आदि भरकर लटका देते हैं। अब बताओ सरजस्क जब तक रहता है/गीलापन रहता है तब तक विषाक्त जब सुख जाता है उसे बाहर निकाल देते हैं। हम लोग काम में ले लेते हैं।

उसी प्रकार हम लोगों का काम है। मोह अवस्था में जहर भरा हुआ है। एक-आध व्यक्ति हो तो बात अलग आड़ोस में देखो तो जहर, पड़ोस में देखो तो जहर, देखो

Date

में देखो तो जहर, नारकीयों में देखो तो जहर, तिर्यञ्चों में देखो तो जहर, मनुष्यों की तो बात ही अलग है। अब ऐसी स्थिति में यह कहने में आता है, सभी जहर वाले हैं तो एक-दूसरे का असर कम पड़ता है। इसलिए दूसरे पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाते, दूसरे से मोहित हो जाते हैं।

यह अज्ञान है। इस अज्ञान को छोड़ दो जहर निकल जायेगा और जहर निकलते ही मुक्त होने में देर नहीं लगेगी। मुक्ति चाहते हैं? देखी है आपने? बिना पहचाने कैसे मोह को कम करेंगे? मुक्ति की ओर कदम बढ़ायेंगे तभी मुक्ति मिलेगी। तुम्बी के उदाहरण को याद रखना। व्यवहार में ऐसे काम जो गुणकारी होते हैं, मोक्षमार्ग में भी ऐसे प्रयोग करने से गुणकारी होते हैं।

इन प्रयोगों को ही रत्नत्रय के नाम से पुकारा जाता है। इसी से धीरे-धीरे जीवन अमृतमय बन जायेगा। अमृत कोई वस्तु नहीं, विष निकल गया तो वही अमृत का रूप हो जाता है। विष को ठिक कर दो तो वही अमृत बन जायेगा। इतना ही पर्याप्त है। कल तो हमारा माइक ठिक-ठाक नहीं था, आज कुछ काम का बना तो आ गये। लोग - हमारी महावीर जयन्ती आज ही है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

11-5-17 "आओ समझें वस्तु परिणमन को" प्रातः 9.20

सूर्य का तपना सूर्य का अपना स्वभाव है। चाहे वर्षा ऋतु हो, चाहे शरद ऋतु हो अथवा चाहे वह ग्रीष्मकाल हो। तपता है, दूसरे को तपा देता है यह व्यवहार है। दूसरा भी तप जाता है यह उसका स्वभाव है। आप गर्म होने की क्षमता रखते हैं तो हमने कहाँ गर्म किया आपको - यह उपचार से कथन है।

आप ठण्डे हो गये हम भी ठण्डे हो गये यह भी उपचार है। ग्रीष्मकाल में समुद्र का जल जब तप गया तो वाष्प बनकर वह ऊपर चला गया। यह तपना उसका स्वभाव है। ऊपर चला गया तो सघन हो गया। जब वाष्प बनकर गया तो उसे देखा नहीं, अब घटायें छा गयी सबको दिख रही है। हम अपने परोक्ष ज्ञान से जो सोच लेते हैं, उसी को लिख भी लेते हैं।

अब उस मेघ को ऐसा वातावरण मिला कि वे बूँदों में बदल गयी। पिघलने लगे तो कहाँ आयेंगे। सोच लो। इसीलिए आपके सामने यह रखा। दिमाग सक्रिय हो जायेगा। क्या कहा जा रहा है, यह दिमाग में आ जाय, महाराज क्या कह रहे हैं। उस बिन्दु का एक-एक क्षण महत्वपूर्ण है। वह बिन्दु उसका नीचे आना तो निश्चित है।

अब वह बिन्दु पेड़ तक आ गयी। ऐसा एक चित्र हमने देखा, जिसमें वह बिन्दु टहनीयों तक भी नहीं आयी पत्तों पर ही लटकती रह गयी।

वर्षा हो रही है मेघों से चलकर आयी वह बिन्दु वृक्षों पर इस तरह बीच में खो गयी । आप से पूछते है उस बिन्दु की उम्र क्या है?

क्षणिक कहने के उपरान्त भी यहाँ से कश्मीर में भीड़ पहुंच गयी । इतनी राशि खर्च करके वहाँ पहुंच जाते है। ऐसा दृश्य प्रति समय घटित हो रहा है। ज्यों ही रक्त संचार इस देह में रुक गया तो बस रुक गया । वहाँ पर कुछ मिलने वाला नहीं चाहे चाँद खिसका दो, सूरज खिसका दो या नोट के बंडल कितने भी खिसका दो । एक बार रक्त संचार रुक गया फिर भरोसा नहीं संसार में किसी का भी ।

अभी तो सब कुछ ठिक था। क्या ठिक था? जो आवश्यक था वह ठिक नहीं था तो बाकी क्या ठिक था। यह वस्तु का परिभ्रमन है। हम सोचते है कि हमारे दिमाग में कभी भी सही बात आती है नहीं, सही देख पाते ही नहीं। देखना भी - सोचना भी सही नहीं है। अब क्या भरोसा करें।

जिन्होंने इस रहस्य को देखकर पहले ही कहा, यह बिन्दु धरती तक नहीं पहुंचेगी। वातावरण का परिवर्तन होता है, हम उस परिवर्तन को बांधना चाहते हैं। तोरणद्वार जैसे बंधनवार। जिसमें से वरवधू प्रवेश हो जाते है। उसी बंधनवार से उन वर-वधु को कभी - कभी निकलना भी पड़ता है। अब बंधनवार तो हमारी सोच, हमारा विचार, हमारा देखा हुआ और हमारा स्पष्टीकरण कैसे रखा जाय, क्यों की उनकी सोच, उनका अनुभव, उनका झुकाव भिन्न-भिन्न

है। और हम अपनी सोच, अपने विचार को बांधना चाहे तो एक अनुचित सा लगता है।

फिर भी सामने वाला कहता है - हमें समझ में आ जाय। अपना जो समझ में आ रहा है उसको छोड़ें, हमारा समझाना समझ में आ जायेगा। क्या कह रहे हैं? उसका आग्रह न करो हमारा समझ में आ जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

12-5-17 "निकट का देखें - दूर का नहीं" प्रातः 9.20

हमारे पास जानने के साधन हैं, उनमें से एक नेत्र के विषय में हम समझें। आँखें जब देखती हैं, सीमा को लेकर देखती हैं। ऊपर को, नीचे की ओर आजु - बाजु देखती है। आप लोग देख लो। किन्तु सब कुछ स्पष्ट देखते हैं पर अपनी नाक स्पष्ट नहीं दिखती। कहीं नाक विहार नहीं कर जाए। देख लो, थोड़ा सा पुरुषार्थ कर लो। आँखें मल लो। धुंधली - धुंधली सी दिखती है।

हमारे प्रभु नासा दृष्टि रखकर बैठे रहते हैं अथवा खड़े रहते हैं। निकटता को देखना कठिन होता है। दूर का देखना सरल है किन्तु निकटता / गहराई में देखना कठिन होता है। उसके लिए अलग दृष्टि की आवश्यकता होती है। जब कोई लाइलाज बिमारी होती है तो उसके चिन्ह अलग से बताये जाते हैं। उसकी चिकित्सा है ही नहीं। 6 महिने तक रह जाता है। 6 महिने हो गये तो वैद्य जी भी कह देते हैं ले जाओ अब इसका कोई इलाज नहीं। ऐसा क्यों? अब दवा का भी प्रयोग नहीं। यदि कर भी ले तो भी सफलता नहीं मिलेगी। धुंधली

नाक दिखती है। जब तक नेत्र ज्योति तब तक कभी नहीं दिखी अब गायब क्यों हो गयी। जैसे राहु आ जाता है तो सूर्य-चन्द्र सब गायब हो जाते हैं।

ऐसा कौनसा पदार्थ आया की नासिका को देखने में प्रभाव दिख रहा है। उस रोग के कारण ही वह नासिका दिखना बंद हो जाती है। जिसने ऐसे कर्म का बंध किया उदय में आने पर ऐसा हो जाता है। कर्म पहले था नहीं, अब आ गया। संयम-शान्ति-निर्मद भाव-प्रशम भाव-विशुद्धि है, पंच परमेष्ठी की आराधना में मन तब लगता है जब उसका भविष्य ठिक रहता है। अवधिज्ञान नहीं होते हुये भी आगमज्ञान से जानकर अपने समय का सदुपयोग कर सकते हैं।

इसी को जानकर आचार्यों ने कहा हमने जो किया वही काम में आयेगा। आपने योजना बनायी पर योजनानुसार काम नहीं आयेगा। जो बंध किया है उसी अनुसार उदय में आयेगा आपकी योजनानुसार नहीं। अब उसमें हेर-फेर नहीं कर सकते हैं। एक ही घर में रह कर एक को तो दृढ़ विश्वास होता है एक को विश्वास नहीं हो पाता। ऐसे ही पहले के लोगों ने कहा है, आप का संतोष मेरे लिए है। अब कर नहीं पा रहे हैं तो अपनी ही नाक नहीं दिख पा रही है।

आप हँसो नहीं, भाई साहब! नाक नहीं दिख पा रही है इसका मतलब भविष्य में नाक कटेगी। तब वह सदस्य कहता है कि आपको नहीं दिख रही क्या? वैद्य से पूछते हैं। वैद्य जी कहते हैं - रोग के उद्वेग में चिकित्सा नहीं हो सकती है। आप लोग क्या समझते हैं? ठेका ले रखा है क्या?

अनुबंध कर रखा है क्या?

कल ही तो बताया वर्षा की बूंदे धरती पर टपके ही ये जरूरी नहीं। ऐसा प्रसंग बने की जमना पड़ जाय तो वृक्ष की पत्ते-टहनी में ही रह गयी। आप लोग बड़ी दूर से आये हो, हमारा पता नहीं, ये बूंदे लेकर चले जाओ। धरती को छुए ही आवश्यक नहीं, ऐसा प्रसंग बने जमना पड़ेगा। इस प्रकार कर्म के उदय में कैसे परिणाम हो, कैसा वातावरण को निश्चित नहीं कर सकते।

हमें अपने कर्म का फल द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के अनुसार मिलेगा, टल नहीं सकता। वह तभी टल सकेगा जब ऐसे परिणाम करें जिससे पुनः बंध नहीं हो। यही मात्र पुरुषार्थ कर सकते हैं बाकी हाथ-पैर चलाने से कोई मतलब नहीं होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जै

13-5-17 "बनना नहीं;-करना है" प्रातः 8.00

प्रतिभा स्थली-डोंगरगढ़ के बच्चों को स्कूल (विद्यालय) में संबोधन

अभी आज आप लोग विद्यालय के परिसर में बैठे हैं और छात्राओं के माध्यम से कुछ गतिविधियाँ हुई। उनको आप लोगों ने अवलोकन कर लिया। जीवन की शुरुआत और जीवन के अन्त के बारे में नहीं सोचा जाता। जीवन की शुरुआत हुयी हमेशा-हमेशा शरीर के पक्ष की ओर ही ले जाता है। इसलिए शरीर का अवसान ही हम जीवन का अन्त मान लेते हैं।

यही सबसे बड़ी उलझन है। समझ रहे हैं न आप लोग। जीवन की उलझन है शरीर पर ही दृष्टि रखना। इस रहस्य को समझ लेंगे उलझन सुलझन में बदल जायेगी। सही दिशा की ओर कुछ करना आवश्यक है।

Date

अभी बच्ची ने कहा परिवार के सदस्य कहते हैं- ये बनो-ये बनो-ये बनो मैं कहता हूँ करना शुरू कर दो तो बनना अपने आप ही होता रह जायेगा। करना अस्तित्व की ओर ले जाता है। कर्तव्य को सही समय पर करना यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

क्या किया जाना चाहिए? कुछ सूत्र आपको दिये जा रहे हैं। उसका उसी रूप में प्रयोग करें अवश्य ही उसका स्वाद आता जायेगा। दूध का गिलास रखा है, गरम है या ठण्डा है ज्ञात नहीं है, क्या-क्या मिला है, ये भी ज्ञात नहीं हैं। जब प्रयोग करेंगे अवश्य ही ज्ञात हो जायेगा। जिन्होंने उसमें मिश्रण किया उन्हें भी ज्ञात नहीं आप प्रयोग करें।

स्वाद प्रयोग करने वालों को आता है, मिश्रण वालों को नहीं। उपरिल मिश्रण से स्वाद नहीं आयेगा, स्वाद तो भीतर लेने से आयेगा। मिश्रण अनेक व्यक्तियों पर आधारित हो सकता है किन्तु प्रयोग तो व्यैक्तिक होता है। यह रहस्य समझें। गुरुओं के द्वारा ज्ञात होता है। लक्ष्य की ओर दृष्टि हो, इरादा अटल हो फिर कोई संदेह नहीं। चलना महत्त्वपूर्ण है, ज्यादा बताने की कोई आवश्यकता नहीं।

अब एक बात और कही - बीज बोया था वह अंकुरित हो गया। कहने मात्र से नहीं, उसमें बीजत्व दिख रहा है। बीज तो छोटा ही होता है। वट वृक्ष का बीज खस खस के दाने के बराबर होता है। किन्तु जब विधिवत् धरती में उस बीज का वपन होता है, तब वह बट वृक्ष का रूप

Date

लेता है। मैं यह बताना चाहता हूँ इस वपन के साथ सूर्य का प्रकाश, समय पर खाद-पानी, मिट्टी, काल का परिवर्तन अनेक सापेक्षताओं की भी जरूरत है, तब जाकर इस वट वृक्ष की छाया हजारों व्यक्ति बैठकर धर्म-ध्यान, जाप आदि कर सकते हैं। छात्रायें बैठकर कर अध्ययन कर सकती हैं।

आज विद्यालयों में यह होता है, सुनने में तो आता है पहले वृक्षों के नीचे विद्या अध्ययन होता था। इसलिए हमें क्या बनना नहीं क्या करना सीखें। हमें मिश्रण नहीं करना - गटपट नहीं करना किन्तु जो मिश्रण किया है उसका आस्वादन लेना है। आस्वादन लेते ही मीठा मिलाया गया है ये ज्ञात होता है। हमारे लिए तो फिका-फिका दिया गया है। बच्चों को पाथकर जब दूध पिलाते हैं तो सो जाते हैं अथवा ऊँघते रहते हैं। क्या पिलाया जा रहा है पता नहीं। तुम लोग भी ऊँघती रहती हैं न?

एक घूंटक ले लो। थोड़े अच्छे समय पर पी लेता तो आस्वादन आ जाता फिर भी शरीर में पुष्टि आ जाती है तो पता चल जाता है। उस समय सोचता है माँ ने पकड़-पकड़ कर जो घुट्टी पिलायी उसी का परिणाम है। ऐसा ही शिक्षा के अन्दर होता है। किन्तु बाह्य नहीं लिया जा रहा है। बाह्य करने से इस जंगल में किसका मन लगेगा। कार्यकर्ता अभी दिख रहे हैं, ये भी भाग जाते हैं किन्तु इस विद्यालय की सारी छात्रायें एवं शिक्षिकायें आनंद के साथ लक्ष्य की ओर जाने का प्रयोग कर रहे हैं। आनंद और स्वाद आ रहा है न। इन लोगों के कारण हम कह रहे हो? नहीं। एक

Date

बार सोच लो। मन्दिर तो बना सकते हो - सरस्वती मन्दिर कठिन ही नहीं अनहोनी जैसी बात लगती है।

गुरुजी ने हम सब पर कृपा की थी, एक शब्द कहा था - संघ को गुरुकुल बनाओ। हाथ में ले तो बना दें। गुरु जो स्वप्न देखते हैं, इस प्रकार का वातावरण बनता है। आज गति धीरे है पर सही है। वृक्ष पहले धीरे - धीरे विकास करता है, आजु - बाजु में फिर तेजी से विकास करता है। मैं चाहता हूँ, बाध्य होने में काम नहीं होता और बुद्ध दे दो तो भी विकास नहीं।

बुद्धि और आस्था दोनों का विकास बहुत बड़ी बात है। छोटी - छोटी छात्राओं का यह लक्ष्य है। इनका वह लक्ष्य बना रहे। अभिभावक नहीं रह सकते चाहें तो भी यहाँ नहीं रह सकते क्यों की उनका घर है, उनकी बुद्ध उलझने है। सुन रहे हो। उनकी भी उलझन सुलझन में बदल जाये, इसके लिए मन को तैयार करना होगा उसी रूप पाठ्यक्रम तैयार करेंगे। बाध्य होकर तो नहीं बोल रही। ऊसही - ऊसही बोल रही है।

उसी प्रकार की हमारी चौका हो, उनके लिए भी ये लगे कि उनको भी पाठ मिले। अब एक बात कहना चाहता हूँ। वह वृक्ष गया तो जो पानी डाला वह कहाँ गया, मिट्टी कहाँ गयी, बीज कहाँ गया, खाद आदि जो कोई भी समय - समय पर पोषक तत्व डाले वे सब कहाँ गये। अब सुनो। इन सारे के सारे साधनों के माध्यम

Date

से पोषण पाकर जो बड़ा हो रहा है, उसका जीवन पुष्ट हो रहा है। इसलिए एकता का कितना महत्व होता है।

आप देखते हैं टहनी - पत्ती - फूलों - फलों, जड़ों इत्यादि से लगातार उस वृक्ष का सम्बंध बना होता है। आप कहाँ भी बैठ जाओ, ऐसा नहीं। खिड़किया लगी है उनका संकेत समझना है। अभी आप सभी कक्षा छोड़कर आये अब दूसरी कक्षा की तैयारी के लिए घण्टी बजेगी। ये उद्देश्य की प्रति जागृत रहकर करें। ऐसा नहीं समय निकाल दिया।

ऐसा नहीं हो, जब मैं पढ़ता था तो सारे के सारे निकल गये जिन्होंने प्रवेश पाया था। एक रहा। पूछा, तुम क्या कर रहे हो। वह कहता है जो नये आयेंगे उनके स्वागत के लिए बैठे हैं। एक ही कक्षा में रहकर शोध प्रबंध होता है, कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं। अपने जीवन में विकास करना है। एक बात तुम्हें क्या करना है - हतकरघा चलाना है ऐसा भी अभी कहा था।

ये ध्यान रखना बनना ये सभी उपाधियाँ हैं, हतकरघा करने की बात आयी है। अभी एक कताई - बुनाई (हतकरघा के इतिहास) पर एक किताब मिली। हतकरघा की बात आपने रखी इसलिए ये बात आपके सामने रखी। (इस पुस्तक के बारे में कई बार बोल दिया।) अंग्रेजों से पूर्व इसका इतिहास। वेद, सूत्र आत्म तत्त्व की खोज करता है उसके लिए भी वस्त्र आवश्यक

Date

वस्त्र की आवश्यकता इसलिए कि तनाव रहित, उच्छृंखलता, वासना सब शांत रहे। अतः सन्त वेत्ताओं ने मर्यादा के लिए वस्त्र आवश्यक माना।

आज उसके बारे में सोचा नहीं जा रहा। मैं ज्यादा उलझाना नहीं चाहता। द्रौपदी का वस्त्र हरण (चीर हरण) क्या मानसिकता होती होगी जब एक शीलवान स्त्री के साथ ऐसा किया जा सकता है तो। सभ्यता- मर्यादा के लिए मनुष्य जीवन की शुरुआत इसी से हुयी। इसी से मानव सभ्य कहलाता है।

खान-पान, रहन- सहन पहनावा आदि सभी का ध्यान रखना आवश्यक है। आप सभी उस पुस्तक को अवश्य पढ़ेंगे। यह चिंतनीय, मननीय एवं पठनीय है। करोड़ों खर्च में भी यह काम नहीं हो सकता। समाज में एक ही किताब क्रान्ति का काम करेगी। इतना ही कहना चाहता हूँ। लू भी चले- चाहे शीतलहर भी चले आत्म तत्त्व की गवेषणा, तत्त्व का शोधन आदि-आदि उपलब्ध होते रहें।

अभी विद्यालय का प्रारम्भ रूप है प्रारम्भिक होता भी विकसित होता है। विकसित उतना महत्वपूर्ण नहीं विकास करना वे एक-एक क्षण स्मरण में आते हैं। वृक्ष में विशालता/विराटता आती है तब सरसों के दाने का चिंतन आता है, कितना महत्वपूर्ण था। समाज ने काम हाथ में लिया आप लोगों ने साथ देने का संकल्प लिया। प्रभु से यही प्रार्थना

Date

करते हैं काम आपका पूर्ण हो।

जीवन का सब आस्वादन करें, मिश्रण नहीं। प्याले में जिसमें मिश्रण है उस ओर भी नहीं देखना। आपका यह आस्था का कार्यक्रम अक्षुण्ण बना रहे, इन्हीं भावनाओं के साथ!

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

13-5-17 "ज्ञान लो स्थिर हो जाओगे" प्रातः 9:20

अपने पास दो वस्तु है। एक जिसे योग बोलते है - मनोयोग - वचन योग एवं काय योग। दूसरा उपयोग। उपयोग आत्मा के साथ अनन्य रहता है। परन्तु उपयोग के अनुसार जैसा सोचता है, वैसी ही मन - वचन - काय की चेष्टा करता है।

सोचना यह है कि चेष्टा चाहे जैसी नहीं कर सकते, यह महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। पर कृतित्व आदि में रम जाते हैं, तो योग - उपयोग दोनों को समझना है। योगों में चेष्टा-चंचलता क्यों होती है? आपके उपयोग के बिना/निराधार नहीं। चाहें तो उपयोग को प्रभुतुल्य स्थिर कर सकते हैं। ज्ञान लिया जाव तो। ज्ञान को कोई भी अस्थिर नहीं कर सकता। कुछ तो बोलो, सोचो? कुछ भी नहीं तो कुछ नहीं। मानोगे तो सब सम्बंध, नहीं तो कोई सम्बंध नहीं। मोक्षमार्ग बहुत ज्यादा लम्बा-चौड़ा नहीं बन्धुओं!

उपयोग उलझा हुआ है बस सुलझ जाय। जानने से ही इसको सुलझा सकते हैं। दुनिया का कोई भी प्राणी आपको उलझा नहीं सकता। सुलझन को भी अपना कार्य नहीं बना सकता। यह वस्तु निष्ठ चिंतन, अद्भुत विश्लेषण है। बहुत समझाने पर समझ सकते हैं, संसार से हटकर। बस यही पुरुषार्थ करें। पसीना बहाने की बात नहीं, न ही दूसरे बहाने की बात है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

Date

हथकरघा के कर्मचारी-विशेष

13-5-17 — "अद्भुत कार्य है हथकरघा" — प्रातः 11.30

आप सभी घर पर रहकर स्वाश्रित होकर संतान : परिवार का निर्वाह कर रहे हैं। प्रशंसा का अनुभव है कि नहीं। एक-दूसरे के सहयोग की भावना होती है। 60 की संख्या है। समाज के लोग भी यथोचित व्यवस्था कर रहे हैं। स्वावलम्बन जीवन जीने का अच्छा साधन है।

व्यसन मुक्ति एवं अहिंसा का प्रचार-प्रसार तथा एक-दूसरे में प्रेम की भावना का विकास होता है। अल्प समय में ही फल मिलता है। आज यहाँ देखा पैर रखने की भी जगह नहीं। स्थान व्यवस्थित होना है। आगे बढ़ाना है तो योग्य स्थान का निरीक्षण करके। पूर्वजों ने ही यह कार्य चालू किया है। अहिंसक वस्त्र का मूल्य बहुत बड़ा है किन्तु आज विदेशी वस्त्र आ गये। इतिहास भरा पड़ा है, अब पुनः सभी इलाकों (छ.ग., म.प्र., राजस्थान आदि) में यह कार्य कर रहे हैं जिनमें पढ़े-लिखे लोग भी आ रहे हैं। सभी को मिलाकर आदर्श रूप दिया जा रहा है।

अभी बिहार में भी गांव-गांव में इस कार्य को विद्यालयों में भी शुरु करना चाहते हैं। प्रबंधन प्रशिक्षण देने वाले-लेने वाले सभी समझ में आ रहा है। लगन के साथ अध्ययन की आवश्यकता है। अद्भुत से अद्भुत कार्य था, भारत पूर्ण सात्विक था। सभी महिलायें मर्यादा में रहकर काम करती थी। इधर-उधर जाकर नहीं, घरेलु काम ही करती थी। संस्कृति के प्रति बहुमान जाग्रत होगा तभी ऐसा करेंगी। अहिंसा का प्रयोग डालना चाहिए सात्विक भोजन के संस्कार से जीवन अच्छा होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

Date

15-5-17 "सो सव्वणाण दरिसी" प्रातः 9.20

आत्मा ज्ञान स्वभाव और दर्शन स्वभाव वाला होता है। स्वभाव होकर के भी वह विभाव में परिणत होने के कारण सबको जान नहीं पाता, देख नहीं पाता है। जब जानना चाहता है जान नहीं पाता है, देखना तो देख नहीं पाता है। न ही ऊपर, न ही नीचे, न ही भीतर, न ही बाहर देख पाता है, पूरा भी नहीं देख पाता है। फिर भी देखता - जानता रहता है।

इससे संतुष्टि होती है, विकास का आधार यही बन सकता है। नक्षत्र आदि होते हैं उनमें सूर्य की मुख्यता होती है। सूर्य का प्रताप एवं प्रकाश किस प्रकार बढ़ता है, आप जानते हैं किसी दिपक आदि की आवश्यकता नहीं। हम लोग उसी के प्रकाश में अपने दैनन्दिनी कार्य सम्पन्न करते हैं। रात में सूर्य प्रकाश नहीं अतः अन्य साधन का सहारा लेते हैं।

इससे इतनी प्रतित होती है कि रात में वह सूर्य इतना प्रतापशाली होने पर भी स्वयं के लिए भी नहीं और दूसरे के लिए भी सहायक नहीं होता। हमारा ज्ञान भी राहु के प्रताप में नहीं दिखता। राहु आदि आ जाता है तो दिन में भी सूर्य का प्रकाश नहीं। विपरित पक्ष का कितना जोर है कि सूर्य का और भी कुछ नहीं चलता।

आचार्यों ने भी यही बात अपने अनुभव के आधार पर कही है। आ. कुन्दकुन्द

Date

कहते हैं - सो सव्वणाणदरिसी, कम्मरएण णियेण वच्छण्णो।
संसार समावण्णो, ण विजाणदि सव्वदो सव्वं।। स.सा. 160

सो सव्वणाण दरिसी अर्थात् वह आत्मा ज्ञान-दर्शन स्वभाव वाला है। णियेण कम्मरएण वच्छण्णो - अपने ही आवरणीय कर्मों से - कर्म रूपी रज से आच्छादित हुआ है, संसार समावण्णो - ऐसी दशा में ही इसे संसार में आना पड़ता है।

जब संसार दशा को अपने ही आवरणीय कर्मों के द्वारा प्राप्त कर रखा है, तो यदि छोड़ दें इन आवरणीय कर्मों को संसार दशा समाप्त हो जायेगी। आचार्य कुन्दकुन्द ने हम लोगों की आँखें खोल दी। आवरणीय कर्म नहीं मिटेंगे तो संसार दशा कभी नहीं मिटने वाली। जैसे केवली भगवान जानते-देखते हैं, हम-तुम भी वैसा ही आवरणीय कर्म के साथ जान-देख तो २ नहीं जान सकते हैं।

हम सर्वघाति प्रकृति के उदय में जी रहे हैं। सब कुछ जान-देख नहीं सकते। जैसे राहु बीच में आ जाय तो सूर्य का प्रकाश विद्यमान तो है किन्तु वह हमारे तक नहीं पहुँच पाता है, हमारी दशा भी ऐसी ही हो गयी है। हम भी थोड़ा पुरुषार्थ कर लें/कर सकते हैं। इसमें कोई भी संसारी प्राणी हमें रोक नहीं सकता। रोकने वाला है तो अपने ही कर्म हैं। उसे पूर्णतः तो साफ नहीं किन्तु एक-देश साफ करेंगे। अपने ज्ञान-नेत्र से आगे बढ़ेंगे।

राहु और केतु दो ग्रह ऐसे हैं जो सूर्य-चन्द्रमा को भी निगल लेते हैं। निगलने का अर्थ

वे इनको अपने मुख में ले लेते हैं। कुछ घड़ियों तक ऐसा हो सकता है। कर्म का ऐसा ही प्रभाव होता है। अपने ही कर्म रज से आच्छादित हुआ है।

जानते हुये भी पूर्ण नहीं जान पाता है। यह विश्वास नहीं हो पाता है। पूर्ण देखने वाले भी नहीं मिल पा रहे हैं। समवशरण में भी चले जाओ तो पूर्ण देखने वाले आप नहीं देख पायेंगे। क्यों की ये आँखो से देखने की चीज नहीं है। उनकी विशेषता उन तक ही सीमित हमारे काम नहीं आयेगी।

उनका सर्वज्ञत्व, उनका केवलीत्व, उनका पूर्णत्व उन्हीं के काम आयेगा। हम पूर्णत्व का श्रद्धान भले ही कर लें लेकिन दर्शन-अनुभव नहीं होता। कुछ लोगों के स्वप्न ऐसे ही है जिन्हें अपूर्णत्व में ही पूर्णत्व का भान हो रहा है, ये ठीक नहीं। श्रद्धान को ही पूर्ण मान लिया है। मन के माने कोई भी वस्तु पूर्ण नहीं हो सकती। मन के लड्डू खाने से मीठा नहीं, न ही भूख मिट पाती है।

न जाने उनकी भूख कैसे मिट पा रही है, स्वाद कहाँ से आ रहा है। भगवान से प्रार्थना करते है उन्हें भी वह सही भूख लगना शुरु हो जाये। कहाँ से भूख और स्वाद ऐसा आगम का ज्ञान भी नहीं चाहिए। क्यों की अध्यात्मवेत्ता द्वारा "सो णाण दरिसी" कहा जा रहा है। सभी को उस परम स्वाद की प्राप्ति हो इन्हीं भावनाओं के साथ आज का वक्तव्य पूर्ण करता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की (जय)

Date

हथकरघा की बहनों हेतु विशेष -

15-5-17 "संयत बनाने हेतु दिशा बोध है - हथकरघा" प्रातः 8.20

आप लोगों ने अहिंसा एवं स्वाश्रित, स्वावलम्बन बनने का यह कार्य किया है। स्वयं भी पैर पर खड़े हो रहे हैं अन्य को भी अपने पैरों पर खड़ा कर रहे हैं। जो समय यूं ही अपव्यय कर देते हैं। अब प्रत्येक समय को सार्थक कर रहे हैं। इधर-उधर की बातें होती ही नहीं।

नौकरी से तो नौकर बन जाते हैं। आप स्वयं संयत बने हैं अन्य को संयत बनाने का साधन है हथकरघा। संयत बनाने वालों हेतु दिशा-बोध है। सभी समस्याओं का हल है। इससे जो पाया है जो लिखा है सब व्यवस्थित करें। आप स्वयं स्वाश्रित रहकर करती हैं अन्य प्रभावित हुये बिना रह ही नहीं सकते हैं। इसके इतिहास की एक किताब मिली - पठनीय है।

धर्म जीवन्त परिणामों का नाम है। धर्म वही जो हमारे विकासोन्मुखी होने में कारण हो। विदेशी शिक्षा - जब तक ज्ञात नहीं था कोई बात नहीं अब तो दुष्परिणाम सामने आ गये फिर छोड़ने में देर क्यों? एक वर्ष के काम को ही देख लिया - यह धर्म नहीं तो क्या है। जीवन जीने की कला है। वृत्ति कहो - शिक्षा कहो - कला कहो सब एक ही है। लोन लेकर पढ़ना/पढ़ाना, जब नौकरी नहीं है तो क्यों पढ़ा रहे हैं। आप सभी ने साहस के साथ मोड़ पर अच्छा काम किया है।

सब को बता दें जिससे वे लोग भी बच सकें। प्रयोग करने का नाम सम्यग्दर्शन है। इस काम को देखकर सब हैरान हैं। हैरान का मतलब जानते हैं आप लोग?

हैरान का अर्थ - प्रसन्नता से हर व्यक्ति इसे स्वीकार कर रहा है। यह एक छवि है। हमें किसी को राजी कराना नहीं है बस स्वयं राजी हो जाओ।

जिन्होंने भी मन वचन काय से इस हतवरघा के कार्य में सहयोग दिया है। जो भी कर रहें है उनकी भी बुद्धि में परिवर्तन आये बिना रह ही नहीं सकता। हम सभी भावना तो कर ही सकते हैं। भावना रिमोर्ट का काम करती है। वो सामने वाला कहीं भी हो हम यहीं से भावना भा कर परिवर्तन ला सकते हैं। उपगूहन - वात्सल्य की भावना, सबके कल्याण की भावना से बहुत दूर तक। पहुँच सकते हैं। यह पढ़ाई ऐसी है जो इधर पढ़ चुके हैं वे भी आ रहे हैं। उस पढ़ाई का मूल्य हमारी नजर में तो नहीं आ रहा है।

उस किताब में लिखा है, सभ्य जगत की शुरुआत इसी से होती है। जो शिक्षा स्व-पर का कल्याण नहीं कर सकती ऐसी शिक्षा क्या काम की है। अभी तो Entrance (प्रवेश) दिया है। सभी में इसे फैला दें तो बहुत रूप होगा। सभी के ऐसे विचार तो यह धर्म नहीं है क्या? कोई आलोचना करें - आँखे दिखायें इससे हमको क्या करना?

हम तो किसी को आज्ञा देना ही नहीं चाहते, मात्र संकेत से ही इतना काम हो रहा है। अच्छे-अच्छे समझदारों को भी अच्छा लगा। दिमाग से ज्यादा काम नहीं लेना, स्थिर भर रहे।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥ जै

गुरु दर्शन के लाभ पर नोटिका -

15-8-17 —— "मांगो मत - कर्त्तव्य करो" प्रातः 9:40

—— अभी आपके सामने छोटा सा परिदृश्य देखने को उपलब्ध हुआ। मोक्षमार्ग में वस्तुतः इसको (गुरु) ही हमें शरण समझना चाहिए। हम उसको बहुत बड़ा कठीन रूप दे देते हैं। इसलिए वह विद्वत् रूप बन जाता है। जिसके पास विद्वता नहीं वह मोक्षमार्ग का पात्र नहीं था वह अपने भीतरी गुणों का उद्घाटन करने का पात्र नहीं है ऐसा है ही नहीं। छोटी सी बात है।

माँ के सामने बच्चा गया, उसने कुछ मांग रखी। माँ ने कहा वह चीज मिल जायेगी किन्तु थोड़ा सा काम करना पड़ेगा। बच्चे ने कहा जो आप कहो। यहाँ से एक किलोमीटर की दूरी पर एक दुकान है वहाँ से ये - ये चीजें लाना है, इसमें लिखा है। पुत्र ने पत्र और पैसों को अपने हाथ में ले लिया। वह जाने लगा - माँ ने कहा "देखभाल चलना"। इसमें रहस्य छिपा हुआ है।

इधर - उधर नहीं देखना, सीधे ही चलना। एक किमी. के बाद दांयी ओर मुड़ने पर जो दुकान है वहाँ से सामान ले आना। वह लड़का वैसा ही करता है। समय पर सब वस्तु को ले आता है। माँ को आश्चर्य हुआ कि इतना जल्दी ले आया। जैसा बताया वैसा ही ले आया। देखो इसमें थोड़ी सी भी चूक करता तो वापस नहीं आ पाता। वह सड़क बहुत चलती थी अतः किनारे - किनारे जाकर देख भाल चलकर ले आया।

देखना - मोक्षमार्ग में दिखता नहीं कुछ भी - श्रद्धान का नाम ही देखना है।

Date

भाल अर्थात जानना, जो कहा है उसी को ध्यान में रखना, इधर-उधर नहीं देखना। चलना का अर्थ पुरुषार्थ करना।

मोक्षमार्ग में इन्हें सम्यग्दर्शन - सम्यग्ज्ञान - सम्यक्चारित्र कहा है। माँ की बात में मैंने एक शब्द में बता दिया। आपने माँग की थी - माँ ने दे दिया। वही जो खरीदना था/ हम कुछ नहीं जानते। आपको देना हो बाद में दे देना। यह सद्भावना उस वाक्य को सुनकर घटित हो गया। गुरु या माता-पिता के सामने हम माँग न रखें।

गुरु अथवा माता-पिता सब समझते हैं। फिर माँगने से सीमित हो जाता है। आप अपना कर्तव्य करें अधिकार नहीं। वह मोक्षमार्ग है तो जरूर मिलेगा, उसके प्रति शंकित होने की जरूरत नहीं है। गुरु ने जो बताया है वही मोक्षमार्ग हो सकता है, दूसरेको भी यह विश्वास बना रहेगा। इस पर्याय में मिले या न मिले अगली पर्याय में तो जरूर मिलेगा ही।

आज ये बच्चे अवकाश को प्राप्त कर रहे हैं। इन्होंने गुरु के प्रति आप सबको भी इस दृश्य के माध्यम से श्रद्धान जाग्रत कराया है। उस श्रद्धान - उस विश्वास के अनुसार चलने की जरूरत है। हम क्या चल सकते हैं हममें इतनी शक्ति कहाँ! जो चलकर गये हैं उनके पद चिन्हों पर चलने का प्रयास करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - "1986 पपौरा जी में नौतपा में हल्की बूंदाबांदी होने पर लोगों द्वारा पाटा अन्दर कर देना बाद में उमस से परिषह सहना।"

15-4-17 "सच में है हथकरघा धर्मध्यान" मध्याह्न 2.30

साहित्य सम्यग्दर्शन प्रशिक्षण शिविर है हथकरघा। निश्चय क्या एवं व्यवहार क्या है इसे बताता है यह। पेपर पर सेना जल्दी तैयार हो जाती है, मैं ऐसी सेना के पक्ष में नहीं हूं। रोग दूर होकर बहुत जल्दी काम करने की शक्ति पुनः आ जाती है इसके माध्यम से।

"शिक्षा वही है जो चलना भी सिखायें एवं रास्ता भी दिखायें।" प्रतिभा को जीवनोपयोगी बनाना है। आप आरम्भ-परिग्रह से रहित कहाँ है? अतः सही आरम्भ क्या है ये तो जानें। ये सात्विक उद्योग है एक प्रकार से आध्यात्मिक है। "हमारा प्रत्येक सूत्र आर्तध्यान निस्तारक रौद्रध्यान परिहारक और धर्मध्यान सम्पादक है।"

व्यापार ऐसा हो जिसमें धर्मध्यान हो सके। जहाँ भी जायें उसका प्रतिबिम्ब देखने को मिले ऐसा तैयार करना है। गुणवत्ता के बिना दुनिया चल रही है हम इसे नहीं चाहते। क्वालीटी मेन्टेन हो। "द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः" प्रयोजन - लक्षण - आधार - संख्या - नाम के बिना वस्तु क्या चीज है इनके बिना महत्त्व ही क्या? गुण को पहले ध्यान रखें। पसीना सोख नहीं सकता तो शरीर बर्बाद और सही नहीं तो मानसिक रोग भी हो जाता है।

"करुणाभावो मनुष्य दीपस्थेषु" कुन्दकुन्द की एक-एक बात को तो देखो। करुणा नहीं तो वह मोह का चिन्ह है। बहुत बड़ा काम किया है उन्होंने - आपको प्रयोग करके बताना होगा। प्रयोग के अभाव में कोई भी वस्तु को प्राप्त ही नहीं कर सकता है। प्रयोग का मतलब

Date

हेतुवाद इसी को बोलते है। हेतु नहीं तो इधर-उधर की बात करोगे तो हमारा आशीर्वाद भी काम नहीं करेगा। प्रयोग के अभाव में शत प्रतिशत नम्बर नहीं आ सकते।

अक्षर संकेत मात्र है। "हम अधिक - पढ़े लिखे है कम, समझदार" संकेत मात्र से जो काम कर ले वो अच्छे हैं। नोलेज एवं लेनवेज में अंतर है। क्वालिटी of Source नोलेज है। दुनिया शब्दों का चक्कर लगा रही है, चक्कर लगाना छोड़ दो अन्यथा चक्कर आ जायेगा। पैसा भी गया - स्वास्थ्य भी गया - स्वाभिमान भी गया। अब हम सुनायेंगे नहीं जो सुन चुके है उनसे सुनकर काम करो। ऐसी ही सेना तैयार कर रहे हैं।

सूत्र नहीं टूटता इसका मतलब ही आप सावधान है। दो तरह की साधना - आलम्बन सहित एवं दूसरी निरालम्ब। समयसार में लिखा है - वह शुभोपयोग को पुनः-पुनः याद रखता है जिससे शुद्धोपयोग के निकट पहुंच सके। इसकरथा उसी ओर जाने का साधन है। आरम्भ की बात नहीं है लक्ष्य की ओर जाने की बात है।

उपदेश को रुचिकर के सुनना भी अच्छा संकेत है। गुरुजी ने तो वृद्धावस्था में भी हमें सुनाया। "धम्मो दया विशुद्धो" "तत्र दया यत्र धर्मः" दया के बिना धर्म है ही नहीं। सम्यक्त्वाचरण चारित्र में भी इसको रखा। कुन्दकुन्द की वाणी से भी नहीं चलोगे क्या? सन्दर्भ ग्रन्थ के बिना शोध नहीं होता। सन्दर्भ ग्रन्थ इतिहास से ही मिलेगा। आस्था के अभाव में ये सबकुछ नहीं हो सकता - संख्या बढ़ाओ। इसकरथा सही धर्मध्यान है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Date

16-4-17 "आओं बनायें अमृतधारा" प्रातः 9:20

अनुपात से थोड़ा सा भी अधिक हो जाता है, अनुपात से थोड़ा सा भी कम हो जाता है, जितनी संख्या की आवश्यकता है उसमें एक भी कम हो जाता है तो भी उस संयोजना से जो अद्भुत चमत्कार मिलना था वह नहीं हो सकता है। क्या बात है? हम बोल रहे हैं।

कपुर है, पीपरमेन्ट है और अजवाइन का फूल है। आप लोग सुन रहे हैं। अजवान का फूल सस्ता मिल गया तो ज्यादा ले आये। कपुर तो भी भीमसेन कपुर मिलता ही नहीं-मंहगा था सो कम ले लिया। पीपरमेन्ट की तो बात ही अलग है। तीनों को मिलाकर पी लो, जी मचल रहा था वह ठिक हो जायेगा। यह गलत धारणा है।

हमें तीनों की समान मात्रा डालना है। जितना अजवान का फूल उतना ही पीपरमेन्ट उतना ही कपुर तीनों को एक शीशी में डाल दो। तीनों गायब हो जायेंगे और अमृतधारा बन जायेगी। उल्टी हो रही हो, दस्त हो रहा हो, पेट आदि में वेदना हो रही है यह उनको शांत करने में सक्षम है। अनुपात सबसे महत्वपूर्ण चीज है। ज्यादा अथवा कम हो जाय तो सहन नहीं हो सकता।

इसके अतिरिक्त जिस-जिस का अस्तित्व अपेक्षित है वह आवश्यक है, ऐसा नहीं कि एक-आध कम कर दो। अजवान का फूल तो मिल गया, कपुर नहीं मिला दोनों को मिलाकर

Date

बना लो नहीं। प्रत्येक का अस्तित्व अपेक्षित है।

मोक्षमार्ग में भी ऐसा ही है। यदि आपके पास अकेले सम्यग्दर्शन है, आठ अंगों से युक्त है किन्तु मोक्षमार्ग नहीं। सम्यग्ज्ञान जो अपेक्षित है वह है तो भी नहीं। दोनों मिलकर हैं तो भी मोक्षमार्ग नहीं। सम्यक्चारित्र चारित्र कभी अकेला नहीं रह सकता वह सम्यग्ज्ञान एवं सम्यग्दर्शन के साथ ही रहता है, इसलिए आचार्य कुन्दकुन्द ने "चारित्तं खलु धम्मो" कहा।

चारित्र रहेगा तो दर्शन ज्ञान रहेगा। अक्षरात्मक ज्ञान की बात नहीं हो रही है। सम्यग्ज्ञान जो मोक्षमार्ग में चाहिए वह हो गया। सम्यग्दर्शन की चर्चा तो स्वाध्याय के दौरान खूब हुई तो सम्यग्दर्शन हो जाय ऐसा नहीं है। सम्यक् चारित्र में जीवन को लगाना होगा। मोक्षमार्ग अन्तर्मुहूर्त भी पर्याप्त है मुक्ति दिलाने में। असंख्यात बार सम्यग्दर्शन मिले और छूट जाय किन्तु मुक्ति नहीं। सम्यग्ज्ञान भी इसीतरह है। मोक्षमार्ग में तीनों की आवश्यकता है।

मोक्षमार्ग कहो शिवमग्ग कहो एकार्थ है आचार्य कुन्दकुन्द के अनुसार। इतना पर्याप्त समझना है। हमारा उदाहरण याद रखना मोक्षमार्ग क्या है ज्ञात हो जायेगा। इसे याद रखने से उस मोक्षमार्ग के प्रति बहुमान ही नहीं, पुरुषार्थ की ओर कदम बढ़ सकते हैं। अनंत संसार को सीमित कर सकते हैं। अमृतधारा के उदाहरण द्वारा ये संक्षेपीकरण आपके सामने रखा गया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Date

17-4-17 "महत्व डॉट का" प्रातः 9.2

प्रातःकालीन बात है। माँ अपने दैनन्दिनी कार्य में व्यस्त होने वाली है। सब बच्चों को संकेत है कुछ है कि तुम्हे ये करना - तुम्हे ये करना - तुम्हे ये करना। एक बच्चे को संकेत दिया - समय पर आकर दूध पी लेना। वह समय पर नहीं आता। अब माँ क्या करे? यदि उसकी प्रतिक्षा करती है तो घर का काम नहीं कर पायेगी और प्रतिक्षा नहीं करती तो वह बच्चा दूध नहीं पीयेगा।

उसे कहती है - ऐ! जल्दी आ। यह आज्ञा-आदेश का वचन है। बात लाड़-प्यार की है। कब तक लाड़-प्यार। जल्दी आ। आ तो गया। अब कहती है बैठ जा और चम्मच कटोरा हाथ में लेकर दूध में मिलाकर पीलाना प्रारम्भ कर दिया। पीने की इच्छा तो है ही नहीं किन्तु देखता है माँ तेजी के साथ मुझे ही देख रही है बार-बार वैसे ही बिना मन के उसने उस दूध को पी लिया।

माँ कहती है जा उठकर भाग जा। वो काम में लग जायें। इधर माँ उठी ही नहीं की पूरा का पूरा दूध बाहर निकल गया। भीतर जाने के उपरान्त बाहर लाना बहुत कठिन होता है। विरेचन या दवाई दी जाती है तो भी भीतर खाया हुआ सुख से उतनी मात्रा में नहीं निकलता, इसने तो एक बूंद भी नहीं रखी।

ये कैसा चमत्कार हो गया। कौनसा तत्व है जो कि उसे आगे रस - रक्त - मांस आदि में परिणत

Date

नहीं होने दिया। छोटी-छोटी कलिकाओं के रूप में वह दूध फटकर बाहर आ गया। छेना भी नहीं रहा। अब आप अध्ययन कीजिए।

जीवन का क्या वृत्त है। हमारे मन-वचन-काय की चेष्टा दूसरे के लिए वह परिणाम स्वास्थ्य-वर्धक न बनकर हमारे निमित्त से फट सकता है। इन बातों को समझाने के लिए ही यह पुरुषार्थ किया जाता है। आप कितने छोटे-छोटे थे माता-पिता, गुरुओं ने दिशा बोध दिया होगा। आपकी वृत्ति विपरीत होने के बावजूद भी आपको लाइन पर लाने का प्रयास करते हैं।

मैं इससे बड़ा दुरूह कार्य मानता हूँ। "सद्जीवन की नींव ही नहीं, शिखर बनाकर कलशा भी चढ़ा दिया।" ऐसा यह महत्वपूर्ण कार्य है। छोटी-छोटी बच्चियाँ यहाँ आ रही हैं, उनके साथ न माता-पिता है न भाई-बहन है। कोई आसाम से तो कोई राजस्थान कोई दुर्ग से कोई मुंबई, मध्यप्रदेश से कौनसी भाषा वो भी जाने। कोई नाता-रिश्ता नहीं, बिल्कुल अपरिचित किन्तु संकेत मात्र से कार्य, कैसा परिवर्तन हो गया।

इस समय थोड़ी सी भी असावधानी रखेंगे, बाद में हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं। फिर हम पढ़ाना चाहें तो भी नहीं पढ़ा सकते, आप पढ़ना चाहें तो भी नहीं हो सकता। सुन रही हो कि नहीं, बेटा! मनोवृत्ति को बांधने का काम ही सही

Date

मायने में शिक्षक - शिक्षिकाओं का काम है। स्वयं के लिए ही नहीं, पढ़-लिखों के लिए ही नहीं इन नासमझ को समझायेंगे वही काम आयेगा।

हाँ! जब पेपर आयेगा। परीक्षा में बैठा है वही तो लिख सकेगा। यह महत्त्व समझो। आपने जो एक वर्ष में दिया उसे उसने अपनी स्मृति में रखा और शब्द रूप में लिखा। परिणाम देख अभिभावकों, शिक्षक- शिक्षिकाओं की आँख में पानी आ जाता है। यह सार्थकता हो गयी। इसने अपने आपको तथा हमारे भावों को समझने का पूर्णतः प्रयास किया है।

हमें आज तक सफलता नहीं मिली क्यों की मोक्षमार्ग को पहचाना ही नहीं। जिन्होंने इस मार्ग को दिया है उन्होंने कितनी बड़ी कृपा की है। हम तो सदैव शिकायत ही करते रहते हैं कि हमारे लिए यह नहीं मिला-वह। मोक्षमार्ग तो अलग ही वस्तु है। इसलिए संक्षेप में यही कहना चाहता हूँ। समझने के स्थान पर जो समझना चाह रहे हैं, अनुकूल होकर समझ लीजिए।

सुनते है कभी-कभी माता-पिता भी रूठ जाते हैं। भाई-बहन भी रूठ जाते हैं, मित्र तो है ही। भगवान भी रूठ जाये तो? भगवान भी रूठते है क्या? सुनने में तो आता है भगवान भी रूठ जाये ऐसी वह धारणा यदि बना ले तो इसमें बच्चे की कमी मानी जायेगी। मोक्षमार्ग में अथक प्रयास करके उस कमी को निकाला

Date

(आयेगा। सुन रही हो छात्राओं ! (जी आ०श्री जी)
जिन्होंने सुनाया उसका महत्व
तब मालूम चलेगा जब तुम किसी अन्य को समझाओगे।
ये नन्हीं - नन्हीं मासूम कलियाँ अंकुरित होकर लहलहाते
वृक्ष (पेड़) के रूप में खड़े हो जायेंगे। सबकी गर्मी
शान्त कर देंगे। हजारों राहगीरी भी आ जायें सब
उस पेड़ की छाया पा जायेंगे। अलौकिक आनंद
प्राप्त होता है, इसे जानकर।
संक्षेप में यही समझाना है।
मोक्षमार्ग में हित की बात बताने वाले बहुत ही विरले
होते हैं। शिक्षिकाओं की कड़ाई को अन्यथा लेना
छात्राओं के अहित में होगा। बाद में डांटने वाला
कोई नहीं आयेगा। याद भर रहेगा कि हमने बात
मानी नहीं यदि मानी होती तो समस्या का हल हो
जाता।
भविष्य में जितनी भी समस्यायें हैं उनके सामने
धीर - वीर बनकर समझने का पुरुषार्थ करेंगे। ये वक्तव्य
होता अवश्य है किन्तु छोटे बच्चों के दिमाग में चला
जाये फिर उसका प्रमाण बता नहीं सकते।
अहिंसा परमो धर्म की जय हो
संस्मरण - "त्रिलोक सागर जी द्वारा पूछना कि कोई ऐसा
उपाय नहीं है, जिससे गर्मी में इतना पसीना
एवं लघुशंका न आये। आ० श्री- तुरंत हाँ - सोलहकारण
भावना का चिंतन करें। तीर्थंकर प्रकृति का बंध
सभी दोषों से रहित - भूख - प्यास आदि।"

Date

18-5-17 — "आओ बंद करें पापड़ बेलना" प्रातः 9.20

— — — — आप लोग तापमान को नापते हैं और उस ताप से बचने का उपाय करते हैं। तापमान बढ़ रहा है किन्तु अपना तापमान बढ़े नहीं, ऐसा प्रबन्ध करते हैं। गृहस्थ लोग भी करते हैं और श्रमण लोग भी कर ही लेते ही हैं। श्रमण कैसे कर लेते हैं? — — — — — —

— — — — — अपनी अवधारणाओं के माध्यम से उस तापमान को ऊपर अथवा नीचे कर लेते हैं। वे अपने भावों के माध्यम से कर लेते हैं। इस कारण वहीं भावों में सहज रूप में ही कर लेते हैं। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि विश्व के किसी भी कोने में चले जाओ, कम-बेसी तापमान मिलता है। किन्तु मनुष्य का तापमान-वह तो हमेशा-हमेशा 98° ही बना रहता है। बाहर का पारा 50 को भी छू गया पर भीतर का पारा नहीं बढ़ा। क्यों? —

— — — — — — — इसके बारे में शोध-खोज की आवश्यकता है। विचार करने की आवश्यकता है कि ऐसी कौनसी शक्ति है जो हमेशा-हमेशा 98° को बनाये रखता है। यही जीव की शक्ति है। जीव जब तक रहता है तभी तक इसी प्रकार तापमान बना रहता है, तभी तक वह चिंतन-मनन-अनुसंधान-आविष्कार आदि करता रहता है। बाहर का तापमान यदि भीतर आ जाये तो जीव की प्रकृति हट जायेगी। उसके भीतर क्यों नहीं जाता है? इसका कारण है उसका सम्बन्ध पुद्गल (मैटर) से है जब कि इसका सम्बन्ध जीव के साथ जुड़ा है। इस

प्रकार के योग में जीवात्मा की बड़ी विशेषता है। जीव है तब तक यह तापमान बना रहता है।

जब पृथक्करण हो जाता होगा तब क्या तापमान होता होगा? वह एक अलग ही स्थिति होती है। अद्भुत आनंद की लहर होती है। अभी हम उसे छु नहीं पा रहे हैं न ही अनुभव कर पा रहे हैं क्यों की कमजोर है। जोर को पुरा लगाना होगा। जब ऐसा उपादान मिलेगा अवश्य ही जोर पुरा लगायेंगे। हमारे उस तापमान का प्रभाव दुसरे पर पड़ नहीं सकता है।

कितना भी करें 50 के उपरान्त तो पापड़ सिकने लग जाते हैं। आचार्य कहते हैं यहीं बैठे-बैठे ध्यान आदि लगाये इन बाहरी पापडियों का महत्व कुछ नहीं, भीतरी रसायन का यह अद्भुत कार्यक्रम है। इतने तापमान में रहकर भी चेतन का अपना अलग स्वभाव है। अपनी बुद्धि से विषय छुने का प्रयास करीये नहीं तो बाहरी पापड़ बेलना तो अनादि से चल ही रहा है।

ये अवश्य है कि इस कार्य को करने की अनेक विधायें अपनी-अपनी होती है। उससे ही तत्व का चिंतन कर सकते हैं कथंचित अनुभूत भी कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपके शरीर का तापमान 50 को छुने पर भी शरीर को बाहर में लाकर रख कर दिया जाये तो भी 98° ही रहेगा। भीतर के नियन्त्रण कक्ष में इस प्रकार की

व्यवस्था बनी हुयी है कि उस तापमान में परिवर्तन नहीं हो सकता चाहे सर्दी पड़े, गर्मी पड़े या वर्षा हो।

इसी मात्र प्रयोगशाला के साथ श्रमण/साधु कार्य करते रहते हैं। आप लोग की भी प्रयोगशाला होती है किन्तु ये प्रयोगशाला हमेशा-हमेशा अलग ही है। वह एक ही स्थान पर रहती है यह हमेशा-हमेशा साथ ही रहती है। जैसे पहाड़ पर चढ़ने वाले अपने साथ आवश्यक सामग्री सदैव साथ ही रखते हैं। जो रसायन डालना है, वह साथ ही रहता है।

आज का विज्ञान इस यंत्र को चाहता है। इसके लिए सभी खोजबीन की पर सफल नहीं हुआ। सफलता चाहता है- दिशा परिवर्तन हो तो। विज्ञान से कहना- वह जो कहे वही दिशा सही हो ऐसा नहीं है, इस ओर पर भी दृष्टिपात करियेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।।

19-5-17 देव दर्शन का मतलब क्या? प्रात: 9.20

कई व्यक्तियों के मन में यह शंका उत्पन्न हो सकती है भगवान के जिनालय में आने के उपरान्त हम उन्हें देखें या वो हमे देखें। हम तो उनको देख सकते नहीं। जिन गुणों से वे मण्डित हैं उन गुणों को देखने की क्षमता हममें है ही नहीं। हम उनके चरणों में आये हैं, हमारी कमजोरी वे ही देख लें। सब ठीक-ठाक हो जाये। भगवान को देखना चाहिये न।

भगवान आपको कहाँ नहीं देख रहे?

Date

यह दूसरा सवाल फिर उत्पन्न हो जाता है। आप लोग उन्हें तीन लोक के जाननहारा मानते हो। वे सबको जानते हैं तो हम भी उसमें आ गये। भगवान सबको देखते हैं, उनके देखने से कर्म क्यों नहीं कटते। उनके पास जाने से भी क्रमशः क्यों कटते हैं। एक साथ सब हीक-ठाक हो जाय, उसका मूल्य अलग है।

इस प्रकार बहुत सारी जिज्ञासायें पाठकों - दर्शकों के मन में आती होगी। मेरे मन में आयी मैंने आपके सामने रख दी। कर्म की निर्जरा भी उनके पास जो सम्यग्दर्शन आदि है उससे होती है या हमारे पास जो सम्यग्दर्शनादि है उससे होती है? देव दर्शन का मतलब क्या? भगवान के द्वारा हमें देखना या देव को हमारे द्वारा देखना देवदर्शन है। मन में बहुत सारी बातें आती है।

जिज्ञासायें होना तो चाहिए। एक स्थान पर लिखा गया - भगवान को याद करने से उनके निमित्त से हमारी कर्म निर्जरा होती है। तो यदि ये ठीक है तो उनके कारण सोते समय भी कर्म निर्जरा हो जाए। ये संभव नहीं है। हमें सम्यग्दर्शन उत्पन्न होते समय भगवान को सम्यग्दर्शन उत्पन्न नहीं होता, उन्हें तो पहले से ही था। उनके कारण हमारे अन्दर ऐसी-ऐसी क्षमता आ सकती है। आये ही ये कोई जरूरी नहीं है। ऐसे-ऐसे कर्म भी होते हैं, जो टूटते नहीं - पीघलते नहीं - गलते नहीं किन्तु वे भी

Date

अपने स्वभाव को छोड़कर हमारे भावों के कारण चूर-चूर हो जाते हैं। ऐसा आगम में लिखा है।

आगम भी भगवान द्वारा ही लिखा गया है। इस श्रद्धान में क्या विशेषता है? कुछ ही व्यक्तियों के श्रद्धान में यह खूबी क्यों?

"जिणबिंबदंसणेण णिधत्ति णिकाचिदस्सवि मिच्छत्तादि कम्मकलावस्स खय दंसणादो" धवल ६/४२८

आगम में ही आचार्य ने ऐसा प्रश्न जिज्ञासा के तौर पर किया कि जिनेन्द्र भगवान के दर्शन से प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति कैसे होती है। उत्तर दिया कि जिनेन्द्र भगवान में ऐसी प्रगाढ़ आस्था जो दूसरों से हटकर हो रही है। ऐसा मानने में कोई बाधा नहीं है। इससे आगे और जिनेन्द्र भगवान के दर्शन से निधत्ति-निकाचित कर्मों का क्षय भी होता है।

प्रश्न यह है कि निधत्ति-निकाचित कर्मों का क्षय प्रत्येक को क्यों नहीं होता इससे स्पष्ट होता है। पंचपरमेष्ठी की आराधना से निर्जरा होती है और पंच-परमेष्ठी की आराधना को स्वाध्याय के रूप में भी स्वीकार किया गया है। हमने अपनी तरफ से सोचा स्वाध्याय के समय ध्यान नहीं बताया। पंचपरमेष्ठी की आराधना से ये चमत्कार कि निधत्ति निकाचित जैसे कर्मों का भी क्षय हो जाता है। यही आराधना का प्रतिफल है।

वह अपनी भाव-भासना क्रियात्मक है। अड़ोस-पड़ोस का उसमें कोई पार्टनर नहीं। पार्टनरशिप होती है उसमें दोनों का हिस्सा किन्तु दोनों मिलकर

Date

आये हैं तो भी एक की निधति निकाचित कर्मों की निर्जरा हो रही है, एक की सामान्य निर्जरा हो रही है।

भगवान ने भी पक्षपात कर दिया। एक से संतुष्ट हो गये हो एक से नहीं। ऐसा कुछ नहीं है। सब अपने भावों का खेल है। जो सबसे सस्ता होता है, तिर्यञ्चों में भी, अपनों में भी घटित होता है। जिनेन्द्र भगवान वह पक्ष क्यों नहीं रख सकते। इस माध्यम से रखना चाहिए।

केवल स्वाध्याय ही क्यों? स्वाध्याय भी करते हो उसमें भी तो पंच परमेष्ठी की ही बात है फिर पंचपरमेष्ठी की आराधना से निर्जरा नहीं है ऐसा मानने वाले हम समझते हैं उन्हें भगवान के द्वारा बताये आगम का ज्ञान नहीं है अथवा पंच परमेष्ठी के स्वाध्याय की विशेष रूप से जानकारी नहीं है। निधति-निकाचित कर्म जिन्हें बदल ही नहीं सकते हैं।

उदाहरण के लिए सीता को ही ले लिजिए। जो बांधा है उसे कितनी कठनाई से भोग रही है। एक-एक दिन काट रही है सभी लोग दुःखी है-ऐसा क्यों? ऐसे ही होते हैं निधति-निकाचित कर्म जिन्हें भोगना ही होता है न ही अपवर्तन न ही उत्कर्षण आदि। कुछ अपवाद ऐसे हैं जिनमें इनको भी पसीना आ जाता है। इसमें जिन बिम्ब दर्शन को रखा। आप स्थापना निक्षेप से जिन बिम्ब की स्थापना करते हैं। उसमें भी प्रातः अलग भाव, मध्याह्न अलग, संध्यावंदन में अलग, यहाँ अलग, वहाँ अलग, अनेक प्रकार के

Date

क्षेत्रों को लेकर अनेक प्रकार के भाव होते हैं। यह मुख्य है / समस्या है इस समझ में।

कुछ ऐसा भी मानते हैं - होता तो वही है जो भगवान जानते हैं तो फिर भक्ति छोड़ दें? जिस समय जो निर्जरा होगी वह होगी। ये सब गलत है। पंच परमेष्ठी की आराधना करो - इसे पदस्थ ध्यान कहा। आगम से कोई पद लेकर भी पदस्थ ध्यान एवं पंचपरमेष्ठी का भी पदस्थ ध्यान इसे ही स्वाध्याय कहा। सोचने की बात है इस ध्यान और स्वाध्याय के भेद को।

प्रतिदिन स्वाध्याय करने वालों स्वाध्यायशीलों को समझना है हम तो उनका भी वेतन बढ़ जाये / कम मेहनत में अधिक लाभ मिले। श्रद्धान तो कर ही रहे हैं। अन्तर अवश्य है। अकाट्य श्रद्धान हो धारणा ऐसी बनती है। तत्व को सामने रखकर जिनेन्द्र भगवान के द्वारा बताया गया। इसे तिर्यञ्च भी कर सकते हैं कोई बाधा नहीं है। अपनी भूख को बढ़ाइये।

शारीरिक भूख को बढ़ाने के लिए दवाई - आध्यात्मिक भूख बढ़ाने का प्रयास किजिए। जिनेन्द्र भगवान के तत्व का निरूपण, उनका दर्शन एवं भक्ति इन तीनों को सामने रखा। श्रद्धान का उदय है। वह हृदियमान होते हुये निधत्ति निकाचित कर्मों का जल्दी - जल्दी निर्जरा करे। इन्ही भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

Date

२०-५-17 "चुटकी का महत्व" प्रातः ९.२०

धार्मिक जो कोई भी गतिविधियाँ है - चाहे स्त्रियों की हो, पुरुषों - महिलाओं की हो, बालको की हो, समझदार हो अथवा असमझदार कोई भी हो। उन भावों को हम कैसे पहचाने? सही है तो कैसे उनका विकास हो और यदि गलत हो तो उनका कैसे अभाव हो।

इसका अध्ययन करना चाहे तो ज्यादा बड़े-बड़े विद्यालयों में जाने की आवश्यकता नहीं है। हमारे भावों के लिए हमें सात समुद्र जाने की जरूरत नहीं। यह बहुत बड़े पुरुषार्थ की बात नहीं। सात राजु पार करने में समय नहीं लगता फिर उसको छोड़कर कौनसा रास्ता अपनायें। इसका अध्ययन हम छोटे बालक के माध्यम से बतायेंगे।

कुछ भी हो एक छोटे से बालक को माँ ने गुस्से में एक चाँटा दे दिया। क्यों मारा ये तो माँ जाने या वह बालक जाने, अड़ोस-पड़ोस क्या जाने? बालक छोटा था पर बहुत ही संवेदनशील था। उसकी आँखो में पानी आ गया। चाँटा एक तरफ पड़ी थी तो उसी आँख में पानी आना चाहिए था। दूसरी ओर चाँटा पड़ी नहीं फिर भी पानी क्यों? बिना बरसात पानी कैसे आने लगा। दोनों आँखो से पानी की बूंदे गालों पर आकर ठहर गयी।

माँ को समझने में देर न लगी, गुस्से में यह काम हो गया। अब क्या करना। औषध-उपचार

करो। डॉक्टर को बुलायें। नहीं। बच्चे को दुख हुआ हम अपनी आँखों से दर्शन कर लेते हैं। माँ को भी दुख हम नहीं पहचान सकते।

वहाँ भी दुख तभी तो हाथ से चाँटा दे दिया। बच्चे को भी दुख- स्वयं बच्चा जाने। अब माँ ने चुटकी बजाकर मंत्रित कर दिया। मंत्र जानते हो आप। रावण भी माला फेर रहा है, राम भी माला फेर रहे हैं। कौन सफल होता है? रामायण - पद्मपुराण से जान सकते हैं। एक छोटी सी चुटकी बजाते ही वह बालक जिसके गालों पर पानी है पर मुख पर मुस्कान है, मुख खिल गया। मुख एवं गालों को खिलाने में कारण क्या?

चुटकी। हम तो चुटकी लेते ही रहते हैं। किसी को समझाना हो तो चुटकी के माध्यम से समझा देते हैं। एक छोटा बच्चा भी चुटकी का अर्थ समझता है। इसके लिए कॉलेज अथवा किसी विद्यालय की आवश्यकता नहीं। गोद का बच्चा भी चुटकी का मतलब जानता है। इस बात को सभी बच्चे भी समझें और शिक्षिकायें भी समझें।

उसकी प्रसन्नता को देखकर माँ ने उसके गाल से पानी के बिंदु कब हटा दिये पता ही नहीं। बिंदु हटाने से ही सुख मिलता हो ऐसा भी नहीं। गाल पर प्रसन्नता आना महत्वपूर्ण है। सुबह-सुबह छात्रायें एक प्रार्थना गाती हैं- मेरा मन समर्थ हो-3 मेरा मन प्रसन्न हो-3 यदि सभी विद्यालयों के पाठ्यक्रम में आ जाये तो

सभी को सीख मिल जायेगी एवं विश्व भी प्रसन्न हो सकता है।

एक ऐसा पुरुषार्थ है जो बहुत खर्चीला भी नहीं। चुटकी बजाते-बजाते समझ में आ जाय। वृद्धावस्था में तो समझ में आ जाये किन्तु बच्चे ने भी चुटकी का अर्थ समझ लिया। माँ ने भाव समझ लिया। बच्चा भी जानता है माँ ने चांटा जो मारा था उसमें उसका दुरूह भाव नहीं था। आप भोगों में गांठ पड़ जाए। हम देख लेंगे। सामने वाला - हम चश्मा लगाकर देख लेंगे। आप भवों-भवों तक देखते रहियो। यही करियो। अपनी गलती को सुधारने के लिए अपने ही अन्तरंग में उतरना पड़ता है।

जब वह छोटा सा लड़का अपने अंदर में उतार लेता है। गुस्सा एक सेकण्ड में नीचे आ जाता है। माँ के भाव भी एक सेकण्ड में समझ लेता है। आंख में माँ को बताने के लिए पानी भी चाहिए, उसके बिना भी काम नहीं।

बच्चों को शिक्षक-शिक्षिकाओं से बोध मिलता है तो शिक्षक-शिक्षिकाओं को भी बच्चों से बोध प्राप्त नहीं होता। ऐसा मैं नहीं मानता। माँ ने एक सेकण्ड में गुस्से को उतार दिया। बच्चे ने भी माँ को जीत लिया - माँ भी यही चाहती थी। यही शुद्ध आत्मा में घटित होता है। सेकण्डों में काम भवों-भवों में नहीं। इस प्रकार के जीवन्त खोल के स्वाध्याय करने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय

21-5-17 "उतार और चढ़ाव, दोनों एक समान" प्रातः 1.20

प्रायः यह देखने को उपलब्ध होता है जब हम ऊपर चढ़ते हैं। ऊपर की ओर कदम रखते हैं शक्ति बहुत लगती है। और गति में भी बहुत अन्तर आता है। जब इस प्रकार की स्थिति होती है तो हम उसको चलना न कहकर चढ़ना कहते हैं। ऊपर की ओर चढ़ना, नीचे की ओर ढलना और सामने की ओर चलना होता है।

ये तीनों चीजें मोक्षमार्ग में भी होती रहती हैं। जब ऊपर चढ़ जाते हैं - अप्रमत्त हो जाते हैं तो अनिवार्य रूप से नीचे आना होता है। इसे उतरना अथवा लुढ़कना भी कहते हैं। इसे अनिवार्य रूप से स्वीकारना होता है, ये तीनों होने के उपरान्त भी कुछ-कुछ ऐसी अवस्था जहाँ इन तीनों में अन्तर है, वैसा अन्तर अन्यत्र नहीं पाया जाता है। जैसे उदाहरण के लिए मैं सोच रहा था।

घड़ी के कांटे ऊपर की ओर जा रहे हों तो कुछ समय ज्यादा लगता होगा और ऊपर से नीचे की ओर आने में समय कम लगता होगा। जैसे एक मिनिट के आधे 30 सेकण्ड में 12 से 6 तक आते हैं, अब 6 से पुनः 12 तक चढ़ने में अधिक समय लगे ऐसा कभी आपने देखा, कभी सोचा। नहीं सोचा होगा। जब भी घड़ी में कांटा ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर की ओर जा रहा है, इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता, ये शुद्ध परिणमन कहलाता है।

हम-तुम सब लोगों का अशुद्ध परिणमन है। कितना भी करो, थोड़ा बहुत फर्क पड़े बिना नहीं रहता है।

Date

आचार्यों ने स्पष्टीकरण किया कि औदयिक भाव कैसे? तो जब तक मोहनीय कर्म का उदय रहता है तब तक औदयिक भाव। केवली भगवान के पारिणामिक भाव होता है क्यों की वहाँ मोहनीय कर्म नहीं रहा। वे उठते हैं- बैठते हैं- चलते हैं क्रियाएँ हो रही है किन्तु जैसे घड़ी में स्वभाविक वैसे ही स्वभाविक हो रही है।

यह पुरुषार्थ हम भी करें। घड़ी की तरह ऊपर-नीचे दोनों में परिणमन सहज होता जाये। ये स्थान की अपेक्षा ही नहीं अन्य अपेक्षा भी हो सकता है। हजारपति ऊपर चढ़ा लखपति हो गया, लखपति ऊपर चढ़ा करोड़पति हो गया, करोड़पति ऊपर अब तैरने लगा अरब पति हो गया। तैरते तैरते हाथ छुट गया- कहाँ गया। इन अवस्थाओं में परिणामों को स्थिर परिणमन हो रहा है कि नहीं इसे जानना जरूरी है।

इसे घड़ी या अरिहन्त परमेष्ठी से समझ लें। शुद्ध अवस्था में/मोहातित अवस्था में भी परिणाम होते हैं। करने में आकुलता होती है। ये मैं इसलिए कह रहा हूँ कि ये प्रति समय घटित हो रहा है। कर्म के उदय से स्वभाविक है। घड़ी में जब तक चाबी भरी है तभी तक कांटे ऊपर-नीचे, चाबी पूर्ण हो जाती है कांटे ज्यों के त्यों। निक्षेप अवस्था सिद्ध परमेष्ठी है, अरिहंत परमेष्ठी शुद्ध पारिणामिक है और हम तुम तो क्या कर रहे हैं समीक्षा नहीं करना चाहते।

वस्तु परिणमन में इस प्रकार चिंतन कर सकते हैं पुरुषार्थ की भूमिका में पुरुषार्थ कर सकते हैं, जहाँ पुरुषार्थ का क्षेत्र समाप्त होता है, वहाँ परमात्म साक्षी होकर रहना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

22-5-17 "निगोद से मोक्ष" प्रातः 9:20

युग के आदि में ऋषभनाथ भगवान के वंश में महा-महापुरुष शलाका पुरुष उत्पन्न हुये। स्वयं तीर्थंकर इनके माता-पिता के रूप में कुलकर फिर इसके उपरान्त चक्रवर्ती दूसरा पुत्र कामदेव के रूप में हुए। ये सब वर्णन हम पुराण ग्रन्थों प्ररूपित है।

महापुरुष तो महापुरुष है ही थोड़ा सा उसी काल में जिनका इसी वंश से सम्बन्ध है उस ओर भी दृष्टि करें। लगता है बड़ा अद्भुत है। आज तक जिन्हें कोई दूसरी पर्याय नहीं मिली। केवल निगोद पर्याय में ही रहे। वहाँ से निकले तो सीधे चक्रवर्ती के यहाँ जन्म हुआ। बड़ा आश्चर्य होता है। आज तक निगोद की पर्याय को ही पाया फिर सीधे महापुरुषों के वंश में - लगता है कुछ घूसखोरी हुयी हो, कुछ पुण्य का आदान-प्रदान हो गया हो।

बहुत सी जिज्ञासायें मन में होती होगी। किन्तु यह वस्तुस्थिति है। संसारी प्राणी भोग में स्वतंत्र माना गया है। 923 जीव जो निगोद पर्याय से चक्रवर्ती के वंश में आये। कुछ ग्रन्थों अन्य भी मत हैं। दो मत मिलते हैं, यहीं के बराबर ही मान लो। महापुरुषों के यहाँ जन्म बड़ी-बड़ी तपस्या अथवा दानादिक घोषित से होता है किन्तु इनकी तो कोई भी अपेक्षा नहीं, न दान है न ही आदान-प्रदान है।

जहाँ एक इन्द्रिय के अतिरिक्त दूसरी रसनेन्द्रिय भी नहीं। संसार का क्या रस चखा होगा। मात्र स्पर्शनेन्द्रिय ही थी ठण्डा हो तो भी अच्छा लगा

गर्मी तो भी अच्छा, वर्षा का स्पर्श पाया तो फुल जाती है वनस्पति। ऐसे उन निगोदिया जीव की आगम ही मात्र शरण है।

आँखो के द्वारा देख भी नहीं सकते। कोई भी इन्द्रिय से नहीं जान सकते। सूक्ष्म का तो ठिकाना ही नहीं बादर निगोद भी आते है तो आधार-आधेय से जानते है। कौनसा ऐसा पुरुषार्थ था जो एकदम संज्ञी पंचेन्द्रिय, उसमें भी मनुष्य और समोशरण में बैठने का अधिकार। कुछ भी बोले नहीं। जिव्हा ही नहिं थी। किससे बोले-संसारी प्राणी से बोलने का लाभ क्या?

चक्रवर्ती है, कामदेव है वे अपनी चाल से चल रहे है। तीर्थंकर हो गये है तो नहीं बोले तो ही अच्छा। और 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त होते ही साक्षात् भगवान के सामने एक साथ सभी ने दीक्षा ले ली बाद में अपनी-अपनी आयु अनुसार मुक्त भी हो जाते हैं। उनका पुरा इतिहास एकेन्द्रिय में ही बित गया। केवलज्ञानी न हो तो उस इतिहास को कोई पढने वाला भी नहीं। उस लिखावट को समझने वाला नहीं।

क्या समझ रहे हो? पुरुषार्थ क्या होता है-समझो। सही दिशा में करते रहना चाहिए। सुख मिले यह कोई नियम नहीं। सुख कर्म पर आश्रित होता है, कर्म द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के अनुसार होते हैं। इन सब बातों से सही सुख की ओर ही पुरुषार्थ करना चाहिए। संसारी प्राणी जैसे करता है, भव्य जीव भी इसी तरह

पुरुषार्थ करता है। किन्तु निगोद दशा में क्या पुरुषार्थ किया होगा।

आचार्यों ने एक सूत्र दिया "अल्पारम्भ परिग्रहत्वं मनुष्यस्य" मनुष्य गति में जन्म हेतु ये साधन-सामग्री मानी गयी है। अल्प आरम्भ और अल्प परिग्रह कहा अर्थात अल्प मुर्छा हो। मुर्छा का अर्थ पंचेन्द्रिय के भोगों में रचना-पचना नहीं। जो कुछ भी हो उसी में संतुष्ट रहे-सहज रूप में रहे उसी में भूमिका का निर्माण होता है। हो ही यह नियम नहीं। इस प्रकार दो हेतु आचार्य उमास्वामी महाराज ने दिये हैं।

मनुष्य गति में आता है तो ये पुरुषार्थ कर सकता है। करना था-कर लिया यह अल्प शब्द बता रहा है। इसके ठिक विपरित बहु शब्द नरकायु का निमित्त है - "बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः" जिनवाणी से भगवान नहीं होते हुए भी उन्होंने रसास्वादन ले लिया। निगोदिया जो सबसे छोटी इकाई होते हुए भी उसमें भी पुरुषार्थ होता है। सूक्ष्म निगोदिया जीव में अनन्त-अनन्त और रहते हैं।

सभी को मनुष्य आयु का उदय पर भाव अपने-अपने करते हैं। एक ही शरीर का भोग करते हुए भी भावों में तारतम्यता होती है तभी तो सभी को मनुष्य आयु का बंध नहीं मात्र इन्हीं १२३ को वो भी अल्प आयु नहीं। अल्प आयु का मतलब ४ वर्ष अन्तर्मुहूर्त से कम आयु। उससे अधिक आयु अल्पआयु नहीं। उसमें अपना काम कर सकते हैं। मुक्त

Date

भी हो सकते हैं।

करोड़ वर्ष की आयु दीर्घ आयु हो कहीं ऐसा नहीं कहा गया है, पर्याप्त है ८ वर्ष अन्तर्मुहूर्त। चक्रवर्ती के पुत्र बने और एक साथ जाति स्मरण हो गया। यही विज्ञान काम करता है और कोई नाता नहीं था। तब ज्ञात होता है कि वस्तु का स्वतंत्र परिणाम / भावों का होना है।

एकदम पराजित हो जायें तो मोक्षमार्ग, तत्त्व चिंतन, उपकार आदि क्या है? कुछ नहीं। हम भी कर सकते हैं, हमारा पुरुषार्थ जाग्रत हो जायें तो ये सब खाता खुल सकता है। भिन्न-भिन्न खातों का लाभ भी तभी जब भीतर में भिन्न-भिन्न खातों को खोलना प्रारम्भ कर दो। हम क्या कर सकते हैं, महाराज!

सांसारिक दशा में तो पुरुषार्थ करते हो, मोक्षमार्ग में क्यों नहीं करते। उन बालकों ने जाति स्मरण के माध्यम से काम लिया। माता-पिता अथवा किसी से भी बोले ही नहीं। माता-पिता लालायित थे, इन्हें खेलते हुये देखें। बच्चे यही सोचते हैं- इन्हें मालुम नहीं हम कहाँ से आये हैं, इसी में लग गये तो क्या? ये इसमें लग गये।

मैं इतना कहना चाहता हूँ मात्र ध्यान-चिंतन-मनन ही नहीं वर्त्तव्य के बारे में भी होना चाहिए। पुरुषार्थ की भूमिका में ही ये सम्मत है। कुछ बातें ऐसी है जो हमारे पुरुषार्थ को उद्घाटित करने में सक्षम हो सकती है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	15/2/17	सार्थक नाम है भाग्योदय तीर्थ	सागर	1
2.	16/2/17	विचारों का खेल	सागर	3
3.	17/2/17	विशालता आती चोट से	सागर	4
4.	18/2/17	आओ देखें भीतरी दर्पण	सागर	5
5.	19/2/17	सागर को कैसे बाँधें	सागर	6
6.	20/2/17	समझदार को ईशारा	सागर	10
7.	21/2/17	त्याग की महिमा	सागर	13
8.	22/2/17	समझदार बनों, पढ़े-लिखे नहीं	ढ़ाना	15
9.	23/2/17	मूंछ का कमाल	पटना बुजुर्ग	18
10.	24/2/17	सागर रुकता - नदी चलती	रहली	20
11.	25/2/17	उदारता दिखाती है कोपरीया	जैतपुर	22
12.	26/2/17	हम प्रवासरत हैं	बीना बारहा	25
13.	27/2/17	गुरु-दक्षिणा	बीना बारहा	26
14.	1/3/17	काम तो लो नौकर से	बीना बारहा	26
15.	2/3/17	आओ देखें - समता रूपी चांदनी	बीना बारहा	27
16.	3/3/17	उपयोग करो - उपभोग नहीं	बीना बारहा	28
17.	4/3/17	पूजा किसकी?	बीना बारहा	29
18.	7/3/17	धर्म का मर्म	महाराजपुर	31
19.	8/3/17	भक्ति के साथ विवेक जरूरी	राजमार्ग	32
20.	10/3/17	भटकन रोकेगा - मेरे गाँव	मेरे गाँव	33
21.	11/3/17	जीवन का लक्ष्य - अहिंसा धर्म की उपासना	लम्हेटा	34
22.	12/3/17	मत भूलो इतिहास को	शहपुरा	35
23.	13/3/17	खुशी के पल लगते छोटे	दयोदय - तिलवारा	45
24.	13/3/17	मत भूलो अनिवार्य प्रश्न	दयोदय - तिलवारा	46
25.	14/3/17	उलझनों को सुलझाता है सूत्र	दयोदय - तिलवारा	51
26.	15/3/17	मानव धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं	बरेला	55
27.	17/3/17 (प्रातः)	सूरज जैसे पुरुषार्थी बनो	बाबा देवरी	57
28.	17/3/17 (मध्याह्न)	जादू वाणी के संयम का	बाबा देवरी	58
29.	18/3/17 (प्रातः)	गाथा सरीता की	फूलसागर	60
30.	18/3/17 (मध्याह्न)	आओ जानें भाव लिंग क्या?	फूलसागर	61
31.	20/3/17	विशालता रखो नदी की तरह	मण्डला	62
32.	21/3/17	चैन की नींद कैसे सोयें ?	मण्डला	63
33.	23/3/17	भवि भागन जोगी वशाय	पौडी (बगासपुर)	66
34.	24/3/17	अनन्त संसार को परिमित करें	बोदा	68
35.	25/3/17	स्थापना हो राम-राज्य की	बैहर	69
36.	26/3/17	प्रयोग करो - गाय की तरह	मोहगाँव	73

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
37.	27/3/17	स्वयं को जागना होगा	बिरसा	75
38.	28/3/17	चिपकना संत का काम नहीं	दमोह (बालाघाट)	77
39.	29/3/17	आदिवासी हैं – असभ्य नहीं	सालटेकरी	78
40.	30/3/17 (प्रातः)	चलो पार हो जायें इस जंगल से	बंजारी चौक	81
41.	30/3/17 (मध्याह्न)	तर्क नहीं – प्रतिक्रमण कर लो	बंजारी चौक	83
42.	31/3/17 (प्रातः)	कठिन पेपर है जीवन के ढलान में	पैलीमेटा	84
43.	31/3/17 (मध्याह्न)	एकाग्रता का सूत्र	पैलीमेटा	86
44.	1/4/17 (प्रातः)	कैसे दूर करें – मन का दर्द	खैरा – नर्मदा	88
45.	1/4/17 (मध्याह्न)	संस्मरण ढोंगरगढ़ यात्रा	खैरा – नर्मदा	90
46.	2/3/17	मंत्र हँसते हुए जाने का	छुई खदान (जैन मंदिर)	91
47.	3/4/17	बाहरी नहीं भीतरी संगीत की ओर आयें	खैरागढ़	92
48.	4/4/17	सबको जाना होगा	टोलागाँव	93
49.	5/4/17 (प्रातः)	मोक्षमार्ग में गर्म-ठण्डी पट्टी	शिवपुरी	95
50.	5/4/17 (मध्याह्न)	साधना की बुनियादी है संलेखना	शिवपुरी	96
51.	6/4/17	मन में हो विश्वास – हम होंगे कामयाब	डोंगरगढ़	99
52.	7/4/17	ज्यदा देर विश्राम ठीक नहीं	डोंगरगढ़	100
53.	7/4/17	अनिवार्य है शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन	डोंगरगढ़	101
54.	8/4/17	चढ़ाव की प्रेरणा देता उतार	डोंगरगढ़	104
55.	8/4/17	प्रकाश में लाओ – इतिहास को	डोंगरगढ़	106
56.	9/4/17	आओं खाली हो जायें	डोंगरगढ़	110
57.	9/4/17	महावीर को पाना – णमोकार जपना	डोंगरगढ़	111
58.	10/4/17	आओ सुखायें मोह रूपी जहर	डोंगरगढ़	113
59.	11/4/17	आओ समझें वस्तु परिणमन को	डोंगरगढ़	115
60.	12/4/17	निकट का देखें – दूर का नहीं	डोंगरगढ़	117
61.	13/4/17	बनना नहीं – करना है	डोंगरगढ़	119
62.	13/4/17	ठान लो तो स्थिर हो जाओगे	डोंगरगढ़	125
63.	13/4/17	अद्‌भुत कार्य है हथकरघा	डोंगरगढ़	126
64.	14/4/17	सो सव्वणाण दरिसी	डोंगरगढ़	127
65.	15/4/17	संयत बनाने हेतु दिशा बोध है – हथकरघा	डोंगरगढ़	130
66.	15/4/17	मांगो मत – कर्त्तव्य करो	डोंगरगढ़	132
67.	15/4/17	सच में है हथकरघा धर्मध्यान	डोंगरगढ़	134
68.	16/4/17	आओ बनायें अमृतधारा	डोंगरगढ़	136
69.	17/4/17	महत्व डॉट का	डोंगरगढ़	138
70.	18/4/17	आओ बंद करें पापड़ बेलना	डोंगरगढ़	142
71.	19/4/17	देवदर्शन का मतलब क्या?	डोंगरगढ़	144
72.	20/4/17	चुटकी की महत्व	डोंगरगढ़	149
73.	21/4/17	उतार और चढ़ाव, दोनों एक समान	डोंगरगढ़	152
74.	22/4/17	निगोद से मोक्ष	डोंगरगढ़	154